१ ओंकार सतिगुरु प्रसादि ।।

# 1

**धनासरी महला ५ ।।**

**जाकउ हरि रंगु लागो इसु जुग महि**
**सो कहीअत है सूरा ।।**
**आतम जिणै सगल वसि ता कै**
**जा का सतिगुरू पूरा ।।१।।**
**ठाकुरू गाईऐ आतम रंगि ।।**
**सरणी पावन नाम धिआवन**
**सहजि समावन संगि ।।१।। रहाउ ।।**
**जन के चरन वसहि मेरै हीअरै**
**संगि पुनीता देही ।।**
**जन की धूरि देहु किरपा निधि**
**नानक कै सुखु एही ।।२।।** (पृ० ६७६)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम सिरी वाहिगुरू, सतिनाम सिरी वाहिगुरू

आज, आपको पता है, गुरू अर्जुन देव जी महाराज का वह दिवस है, जिस दिन गुरू-घर में शहीदी आरम्भ हुई। ये शहीदों के भी महा शहीद थे, शिरोमणि थे। बात यह है भाई ! (बई!) आप जानते हो यह बात, उस समय शासन भी यौवन पर था मुगलों का, और गुरू-घर में भी बहुत भव्य कार्य (ऊँचा काम) हो गया था। गुरू ग्रन्थ साहिब की बीड़ सम्पन्न हो गई, अमृतसर, तरनतारन तीर्थ सम्पूर्ण हो गये, करतारपुर बस गया। जो भी गुरू रामदास कह कर गये थे, वह सब गुरू साहिब ने पूरा कर दिया। इस करके जहांगीर उस समय बादशाह था और उसका पुत्र था खुसरो। सुना है वह सूफी फकीरों की संगति करता था, स्वतंत्र था। वह बागी हो गया । विद्रोही होकर वह कुरूक्षेत्र पीर के पास भी गया, और भी ऐसे साका हुये, जिनके

पास वह गया। यह गुरू अर्जुनदेव जी की शरण भी गया। वहां जाकर उसने बातचीत जो पूछी, गुरू साहिब ने उस को समझाया। उनका कर्तव्य था, जो भी जिज्ञासु भ्रमित हुआ आये उसको समझा देना–यह गुरू का कर्तव्य होता है, इस लिये और दूसरा उस समय तिलक का रिवाज होता था, संगत का तिलक भी उसको लग गया। उस डायरी वाले ने सारी डायरी जहांगीर के पास पहुँचा दी। उनको यह शंका हो गई कि यह गुरूओं के पास गया तब मेरा पुत्र विद्रोही हुआ।

इस शंका पर उन्होंने अपना जो रोजनामा था जिसमें वह लिखता था, उसमें लिख दिया बई यह दुकान बहुत बड़ गई है, दिनोदिन उन्नत होती जाती है इसलिये इस को समाप्त करना है। और वह यह सारी बात कहकर कश्मीर को चला गया। उसमें जो चंदू का अपराध कहते हैं उसके सम्बन्ध में एक ही बात आती है बई उसका नाई गुरू हर गोविन्द साहिब को रिश्ता कर आया। उसने जब आकर बताया, चंदू के मुख से यह निकल गया, इतिहास में यह लिखा है कि बई तुम चुबारे की ईंट मोरी को लगा आये हो। मैं मंत्री था शासन में, और वे साधु हैं। उसने कहा ना जी उनका बड़ा प्रभाव है, बादशाह ने जो कुछ भी कहा इस पर चंदू पर भी ब्लेम (दोष) लग गया। लेकिन चंदू तो शासित व्यक्ति था, उसने तो बादशाह की आज्ञा माननी थी। इसलिये वह कहकर बात चला गया। उस नीयत के साथ यह बादशाह उनका विरोधी हो गया। जो बादशाह की आज्ञा थी वह लोगों ने पूर्ण की और स्वयं बादशाह कश्मीर चला गया था।

उसके रोज नामचे में यह बात लिखी बताते हैं, सुनाई भी है। इसलिये यह अपराध उन्होने अपना खड़ा किया और जब भी कोई महापुरूष धैर्य का कार्य करता है, उसमें शासन भी कभी विरोधी हो जाता है, कभी जो धर्म के आगू होते हैं अपने अपने धर्मों के वे भी विरोधी हो जाते हैं इसलिये सत्य मार्ग का सच्चा रास्ता था और इसके सम्बन्ध में हम अधिक कुछ नहीं कह सकते।

**जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ ।**
**ता ते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ ।।**

वे जो ज्योति - स्वरूप आप आये थे परमेश्वर–

*जोति रूपि हरि आपि गुरू नानक  कहायउ ।।*
*ता ते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ ।।*

(पृष्ठ १४०८)

इस कारण वे ज्योति - स्वरूप परमेश्वर, आप संसार में आये ईश्वर, उसने 'गुरूनानक' कहलाया। गुरू रूप धारण कर गुरूनानक देव जी, वे पाँचवी ज्योति  थे।

***गुर जोति अरजुन माहि धरी ।।*** (पृ० १४०६)

वह ज्योति, गुरू रामदास जी जाते हुये गुरू अर्जुन देव में स्थापित कर गये। अन्य किसी में स्थापित नहीं की।

***धरनि गगन नव खंड महि जोति स्वरूपी रहिओ भरि।***
***भनि मथुरा कछु भेदु नहीं गुरू अरजुनु परतखय हरि ।।*** (पृ० १४०६)

यह सम्मुख होकर उसने प्रार्थना की है कि 'हे भटटो!' हम पर कृपा की, ज्ञान-दान दिया, शाप विमुक्त किया। ये गुरू अर्जुन देव साक्षात परमेश्वर हैं। इसलिये वे ईश्वर स्वरूप थे, ईश्वर के सम्बन्ध में तो कोई कह नहीं सकता, बई क्या हो क्या न हो। ईश्वर का तो अपना ही कोई चरित्र होता है, जो हो। कई प्रकरण तो अधिक हैं वहां किन्तु कुछ प्रकरण मैं सुनाता हूँ। अब शब्द का अर्थ करेंगे।

**चलें – धनासरी महला ५ ।।**

धनासरी राग में पंचम बादशाह श्री गुरू अर्जुनदेव महाराज जी को जो ईश्वरीय बाणी का आदेश हुआ, नामों का वह कथन करते हैं-

**जाकउ हरि रंगु लागो इसु जुग महि**

जिस को हरि का रंग भाव प्रेम

**साचु कहौं सुन लेहु सभै**
**जिन प्रेमु कोउ तिन ही प्रभु पाइयो।** (अकाल उसतति)

प्रेम एक गुरू-घर में मार्ग है, नाम के साथ प्रेम। प्रेमाभक्ति गुरू घर का सिद्धान्त है। इसलिये कलियुग में जिसको पूर्ण प्रेम हो गया और नाम प्राप्त हो गया, नाम के सिमरन पर ही प्रेम उत्पन्न होता है। पहले नाम का सिमरन होता है और साथ ही प्रेम उत्पन्न हो जाता है। जिसको यह प्रेमाभक्ति पैदा हो गई-

**सो कहीयत है सूरा ।।**

उसको शूरवीर कहो, संसार को छोड़ बैठा, वह परमेश्वर के मार्ग में ठीक चल पड़ा लेकिन प्रेम सच्चा और पावन चाहिये।

**आतम जिणै सगल वसि ताकै ।**

'आतम' नाम यहां मन का है, आत्मा की जीत का कोई प्रश्न ही नहीं। कई बार ' आतम' पद मन का वाचक आयेगा, कई बार 'मन' आत्म-वाचक आयेगा। इसलिये जिसने मन को जीत लिया है। 'आतम जिणै' भाव- जिस पुरूष ने अपने मन को जीत लिया है, यह मन जीता ही लिव में जाता है, लिव के पश्चात भाणा (आकस्मिक प्रभु इच्छा) आता है, पहले नाम होता है, नाम का अभ्यास, सिमरन, समाधि और बाद में लिव। लिव के बाद भाणा अपने आप ही आ जाता है। इस लिये जिन्होंने अपना मन जीत लिया उनको शूरवीर कहो। उन्होंने संसार छोड़ दिया, वे सीधे मार्ग परमेश्वर की ओर चले गये लिव में।

**जा का सतिगुरू पूरा ।।**

लेकिन जिसको पूर्ण गुरू मिले, सत्गुरू-गुरू रामदास जो पूर्ण गुरू मिले, गुरू अर्जुन देव का अभिप्राय सिद्धांत यह है कि पूर्ण गुरू ने मुझे यहां पहुँचा दिया। लेकिन मन को वही जीत सकता है जिस पर पूर्ण गुरू की कृपा हो, नाम और प्रेम प्राप्त हो जाये फिर उसकी लिव लग जाती है, लिव से मन जीता जाता है। आगे मन नहीं रहता फिर तो अपना आत्मा साक्षी रहता है, चेतन और कुछ भी नहीं रहता। उसको 'दाना-वीना' कहो, उसको दृष्टा कहो।

***मुई सुरति बादु अहंकारू ।।***
***ओहु न मुआ जो देखण हारू ।।*** (पृ० १५२)

उसको आप चाहे साक्षी कह लो। यह आप अपने भीतर ही देख लो, जब तुम्हें सुनना होगा, वह सुनने से तुम्हारा मन जुड़ेगा बड़ा मुश्किल। और ही आपके भीतर संकल्प आरम्भ हो जायेगा, विचार आरम्भ हो जायेंगे। जब सगुण के साथ ध्यान लग जाये, यह हो जाये तो विचार समाप्त हो जायेंगे, जब नाम के साथ इस का मन जुड़ जाये ।

**नामु संगी सो मनि न बसाइओ ।**

*छोडि जाहि बाहू चितु लाइओ ।।* (पृ० ७१५)

इस का साक्षी एक नाम है नामों के समीप पहुँचाने वाला

*नाम संगि जिस का मनु मानिया ।*

*नानक तिनहि निरंजनु जानिया ।।* (पृ० २८१)

वह शूरवीर है, नाम के साथ जिसने मन को जीत लिया। अब अगली पंक्ति पढ़ भाई !

**ठाकुर गाईऐ आतम रंगि ।।**

प्रेम के साथ ठाकुर का नाम जपें, निद्धयासनकरें, सिमरन करें ।

*सिमरि सिमरि नामु बारंबार ।*

*नानक जीअ का इहैं अधार ।।* (पृ० २६५)

जब सिमरन पक्का हो जाये, सिमरन के बाद अनाहत आता है, वहां अहंकार गिर जाता है। फिर ध्वनि पर लिव हो जाती है। लिव पर इसको अविनाशी पद की प्राप्ति हो जाती है। यह चौथी लाँव में लिखा हुआ है -

**सरणी पावन नाम धिआवन**

जब भी नाम सिमरन करना है, परमेश्वर का ध्यान करना, नाम का सिमरन करना। पहले अपना सर्वस्व अर्पण कर दो। एक होता है विचार, विचार से ज्ञान बड़ा कठिन होता है। किसी के पूर्व पुण्य ही हों, साधन किये। जब अपना सर्वस्व अर्पण कर दो, ज्ञान में क्षणमात्र ही लगता है, अष्टावक्र का प्रसंग है जनक जब उसके समीप आया उसने पूछा, यह लिखा हुआ पड़ा है, तब फिर ज्ञान करो। उसका लिखा था कि "मैं घोड़े की रकाब में पाँव डालूँ, मुझे ज्ञान करा दे," वह सिंहासन पर बैठे।

और नहीं कोई बैठे वहां। लिखा है कि वहां बारह हजार पंडित ब्राहमण और अन्य भी बहुत दुनिया थी पर कोई नहीं सिंहासन पर बैठा। अष्टावक्र आकर सिंहासन पर बैठ गया। वह योगी था, अन्तर्यामी था। उसने कहा कि हां करूगां, मैंने पढ़ा है उसने जो रिवाज था, उनकी पूजा की, उसने तीन बार संकल्प करवाया। इतिहास में परम्परा बताते हैं मन, धन और तन। बई यह अर्पण कर। उसने समस्त अर्पण कर दिये। उसने विचार किया कि मैं अब घोड़े की रकाब में पाँव डालूँ। उसने कहा कि तुम राजा

भी हो और बेईमान भी हो, उसने कहा कैसे? कि मन तूने मुझे अर्पण किया है, कि मन तुम्हारा तुम्हारे पास है? कहता न जी मैने आपको अर्पण कर दिया। तो कहता कि तुमने संकल्प क्यों किया? वह बादशाह को इस बात का पता चला, उसने संकल्प छोड़ दिया। संकल्प-विकल्प ही मन हैं। संकल्प-विकल्प को ही मन कहते हैं। जब उसका संकल्प, विकल्प दूर हो गया तो दृष्टा तो आत्मा ही था, वहीं साक्षी था, जो सब को देखता है। तुम अपने भीतर भी देखते हो जब तुम देखते हो किसी वस्तु को तो प्रतिबंधक भी साथ चलते हैं विचारों के। यदि पूर्ण चित्त एकाग्र होगा तो वह सही होगा । इसलिये उसको पता लग गया और उसको आत्मा का साक्षात्कार हो गया। वह चरणों पर गिर पड़ा, बड़ी कृपा की, मैं अत्यंत प्रसन्न हो गया। इसलिये भाई गुरू साहिब कहते हैं अपना सर्वस्व अर्पण कर दो। शरण पड़ जाओ और नाम का जाप करो और परमेश्वर का परिपूर्ण ध्यान करो।

**सहिज समावन संगि ।। रहाउ ।।**

सहज स्वभाव है, स्वभाव का अर्थ भी है सहज, ज्ञान का नाम भी हे, वह सहज था न जो अपना स्वरूप ज्ञान स्वरूप उसके संग एक हो गया। आत्मा की प्राप्ति हो गई। 'आत्मा' तो सदैव प्राप्त है ही लेकिन न हुये की भाँति है क्योंकि इसका मन संसार में लिप्त है।

***एकम एकंकार निराला। अमर अजोनी जाति न जाला।***
***अगम अगोचरू रूपु न रेखिआ। खोजत खोजत घटि घटि देखिआ।।***

(पृ० ८३८)

वह एक तो सबके हृदय में बैठा है। वह ( अ + क्षर ) है क्षर तो वह है नहीं। क्षर द्वारा ही अक्षर (अ+क्षर) को देखना है, अक्षर (अ+क्षर) को प्राप्त करना है। वह सब के हृदय में विद्यमान है।

***घटि घटि मे हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि ।***
***कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि ।।***

(पृ० १४२७)

यदि तुम उस परमेश्वर का सच्चे हृदय से इतना करें, तुम संसार से पार हो जाओ। यदि सब के हृदय में तुम परमेश्वर को देख लो, तेरी मुक्ति

हो जाये। भाई कन्हैया ने पानी पिलाया सारे हिदू, सिक्खों, मुसलमानों को, सब में गुरू को देखकर परमेश्वर देखकर तो उसकी तभी ही मोक्ष हो गई कृपा हो गई उस पर, दसवें पातशाह की, वह मुक्त हो गया, जन्म मरण से छूट गया

**जन के चरन वसहि मेरे हीअरै ।।**

वह 'जन' जो है, श्री गुरू रामदास तो इनका लक्ष्य है, जन तो सब ही हैं, दादू भी जन हैं, कबीर भी जन हैं, जितने प्रभु के शिष्य हैं जो प्रभु को प्राप्त कर चुके हैं, वे सब ही जन हैं। लेकिन उनके 'गुरू रामदास' के चरण मेरे हृदय में बसते हैं। उन्होंने जो नाम दिया वह भी मेरे हृदय में बसता है, नाम को भी कहीं चरण कह देते हैं।

**संगि पुनीता देही ।**

साथ में मेरी देह भी पवित्र हो गई मेरा मन तन सब पवित्र हो गया, मेरी देह भी पवित्र हो गई।

**जन की धूरि देहु किरपा निधि**

श्री गुरू साहिब कहते हैं - उन जनों की मुझे धूलि दे दो। उस गुरू रामदास के चरणों की धूलि ने मेरा उद्धार कर दिया।

**नानक कै सुखु ऐही ।**

गुरू अर्जुन देव जी कहते कि हमारे तो यही सुख हैं। आत्म सुख हमें यहां से प्राप्त हुआ । आत्म सुख ही हमें चाहिये था वह हमें प्राप्त हो गया। वह परमेश्वर की, गुरू की कृपा से प्राप्त हो गया।

**बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरू ।।**

❑

१ ओंकार सतिगुरु प्रसादि।।

## 2

**जैतसरी महला – ५**

**कोई जनु हरि देवै जोरि।**
**चरन गहउ बकउ रसना दीजहि प्रान अकोरि ।।१।। रहाउ।।**
**मनु तनु निरमल करत किआरो हरि सिंचै सुधा संजोरि।।**
**इआ रस महि मगनु होत किरपा ते महा बिखिया ते तोरि।।**
**आइओं सरणि दीन दुख भंजन चितवउ तुम्हरी ओरि।।**
**अभै पदु दानु सिमरनु सुआमी को प्रभ नानक बंधन छोरि।।**

(पृ० ७०१)

---

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम सिरी वाहिगुरू, सतिनाम सिरी वाहिगुरू

***धरनि गगन नव खंड महि जोति स्वरूपी रहिओं मरि।***
***मनि मथुरा कछु भेदु नहीं गुरू अरजुनु परतरव्य हरि।।***

(पृ० १४०६)

भद्र शरापग्रस्त के भगवान विष्णु के मारने गये, लेकिन टला नहीं, शराप हो गया। उन्होंने प्रार्थना की भगवान के पास बई ऐसी कृपा हम पर करो, हम भूल गये, उद्धार का हमें कोई उपाय बताओ, हमारा उद्धार कैसे हो? उन्होंने कहा- कलयुग में गुरूनानक देव जब पाँचवी गद्दी पर आयेंगे, तब आपका उद्धार होगा। वर्षभर वे भटके लेकिन किसी से उनका उद्धार नहीं हुआ। जब गुरू अर्जुन देव जी के द्वार पर आये उन्होंने उनका उद्धार कर दिया। उद्धार भी क्या किया ? उनके भीतर वाणी प्रकट कर दी। ये भट्टों के सवैये उन्होंने ही कहे हैं।

फिर उन्होंने वाणी उच्चारण की। वह गुरूग्रन्थ साहिब में अंकति है। वह मथुरा भट् उनमें से बड़ा था। उसने कहा -

**धरनि गगन नव खंड महि जोति सरूपी रहिए मरि ।**

वह ज्योति स्वरूप सारे व्यापक परिपूर्ण है।

**घटि घटि में हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।।**

**कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि।।**

समस्त प्रकार के प्राणियों के जीवों में, परमेश्वर सब के हृदयों में आप बैठा है। सब के हृदयों में भगवान कृष्ण चन्द्र जी द्वापर के अवतार, यह कथन करते हैं, सब के हृदय के भीतर परमेश्वर है। कोई ऐसा हृदय नहीं है। चार प्रकार के प्राणियों में जिस के भीतर परमेश्वर न हो वह एक जो परमेश्वर है, वह सब के भीतर बैठा है।

*एकम एकंकार निराला।*
*अमर अजोनी जाति न जाला।*
*अगम अगोचर रूपु न रेखिया।*
*खोजत खोजत घटि घटि देखिया।।* (पृ० ८३८)

पहली पातशाही श्री गुरूनानक देव जी कहते हैं - सब के हृदयों मे उस 'एक' के हमने दर्शन किए। दूसरी है दैत माया। माया मिरथा है, वह सत्य है।

*मूई सुरति बादु अंहकारू ।*
*ओहु न मुआ जो देखनहारू ।*
*जै कारणि तटि तीरथ जाही ।*
*रतन पदारथ घट ही माही ।*
*पडि पडि पंडितु बादु वखाणै ।*
*भीतरि होदी वसतु न जाणै ।*
*हउ न मूआ मेरी मुई बलाइ ।*
*ओहु न मूआ जो रहिआ समाइ ।*
*कहु नानक गुरि ब्रहमु दिखाइआ ।*
*मरता जाता नदरि न आइआ ।।* (पृ० १५२)

जब इसको सब के हृदयों में वह ईश्वर प्रकट हो जायेगा। कब होगा? यदि एक को अपने हृदय में देख लेगा तब होगा। इसके हृदय में भी–

*दाना बोना साई मैडा नानक सार न जाणा तेरी* (पृ० ५२०)

वह जो सबका मालिक है परमेश्वर, वह सब के हृदय में दाना बीना

होकर बैठा है। वर्तमान में वह व्यापक तब होगा जब तुम्हारा मन लीन होगा।

*सुण्यिा मनिआ मनि कीता भाउ ।।*
*अंतरगति तीरथ मलि नाउ ।।* (पृष्ठ ४)

वह जो भीतर तुम्हारे 'पवित्र तीर्थ' परमेश्वर है, वह एक परमेश्वर ही है।

**साहिबु मेरा एको है। एको है भाई एको है ।।**

मेरा स्वामी एक परमेश्वर है, वह सब में एक है लेकिन सबके हृदय के भीतर है। आपके और हमारे भीतर नहीं है ? वह जो तुम्हारे मन बुद्धि का दृष्टा हक, वही परमेश्वर है। 'दाना' जानने वाला, 'वीना' - देखने वाला वह साई मालिक है। वह सब हृदयों में सादी रूप में विराजमान है, दृष्टा रूप है, पारस रूप है।

*नानक पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछाणिआ ।।*

(पृ० १४४)

पारस रूप आप परमेश्वर ही हैं, अन्य तो कोई है नहीं। एक ईश्वर है। गुरू साहिब ने भी लिखा है और कबीर साहिब ने भी लिखा है -

*सो बउरा जो आपु न पछानै ।।* (पृ० ८५५)

वह पागल है जिसने अपना आप नहीं पहचाना ।

**सो बउरा जो आपु न पछानै ।।**
**आपु पछानै ता एको जानै ।।**

यदि उसको आपने आपकी पहचान हो जाये, वह सब में 'एक' उस परमेश्वर को देख ले। उसका राग द्वोष नहीं किसी के साथ रह सकते। उसका जो द्वोष है वह नाश हो जाता है।

*बिसरि गई सभ ताति पराई ।*
*जब ते साध–संगति मोहि पाई । रहाउ।।*
*ना को बैरी नही बिगाना*
*सगल संगि हम कउ बनि आई।।*
*जो प्रभ कीनो सो भल मानिओ*
*एह सुमति साधू ते पाई।।*
*सभ महि रवि रहिआ प्रभु एकै*
*पेखि पेखि नानक बिगसाई ।।* (पृ० १२८८)

गुरू अर्जुन देव जी महाराज जी कहते हैं यह सुमति हमने उस साधु-संग से प्राप्त की है। वह गुरू रामदास संत ने हमारे पर कृपा की -

*सन्त संगि अन्तरि प्रभ डीठा ।।*

*नामु प्रभु का लागा मीठा ।।* (पृ० २८३)

जब हम उस संत के चरणों पर पड़े गुरू रामदास जी के, उनकी कृपा के साथ हमने अपने भीतर ईश्वर के दर्शन किये। उस साधु से हमने सुमति ली, उसने हमें सम-दृष्टि प्रदान की। गीता में जब उसने लिख, उसने कहा कि भई कोई अन्य भी योग है पापों से मुक्ति का ? कहता , 'समखं याग उच्चयते'। कीता सबसे बड़ा समता योग है। जो सब में परमेश्वर को देख ले, उसकी मोक्ष होजाती है। राग द्वेष वाले की मोक्ष नहीं होती। इस करके भाई! जब तक इसको समख योग प्राप्त नहीं होता, भगवान कृष्ण कहते हैं तब तक इसके पाप नहीं काटे जाते। जब इसको समदृष्टि हो गई पापों के लिये स्थान ही कोई नहीं है। वह सब में परमेश्वर है, वह इसे प्राप्त हो गया। इस करके उस परमेश्वर का भाई नाम जपना चाहिये, सिमरन करना चाहिये। उसके साथ तादात्म्य होना चाहिये। अतः पढ़ भाई -

*जैतसरी महला ५ ।।*

*कोई जन हरि स देवे जोरि ।।*

बहुत ऊँचा नहीं बोलना चाहिये, वह जितनी उसकी लय होती है, उतना ही बोलना चाहिये । आरम्भ कर -

**कोई जन हरि सा देवे जोरि ।।**

क्यों कोई जन ऐसा होता है ? गुरू अर्जुन देव जी कहते जो हरि के साथ मेरे मन को जोड़ दे। मैं ऐसे महापुरूषों के कारण पड़ा, मैं उस गुरू रामदास महाराज जी की शरण पड़ा उसने मुझे हरि के साा जोड़ दिया। भाई ऐसा कोई संसार में महापुरूष हो जो इसके मन को परमेश्वर के साथ जोड़ दे।

**चरण गहयो बकयो सुभ रसना**

मैं चरण भी उसके पकड़ूँ और जिह्व द्वारा भी उसका नाम जाप करूं शुभ है नाम।

*सरब धरम महि स्त्रेसट धरमु ।*

*हरि को नामु जपि निरमल करमु ।* (पृ० २६६)

वह शुद्ध कर्म कर, निष्काम कर्म कर। तू पब्लिक को परमेश्वर समझ का सेवा कर, ऐसे ही न कर। वह जो कुछ भी पब्लिक की सेवा करता है, वह परमेश्वर को समझकर और दूसरा निष्काम सेवा कर।

*सेवा करत होइ निहकामी ।*
*तिसु कउ होत परापति सुआमी ।।* (पृ० २८६)

जो परमेश्वर की सेवा करेगा उसको परमेश्वर प्राप्त होगा और नाम का सिमरन अवश्य कर। उस नाम के सिमरन द्वारा तू परमेश्वर को प्राप्त होगा। नाम और अंहकार दो एक स्थान पर नहीं रहते हैं, यह नियम है समस्त शास्त्रों का और गुरू साहिब ने भी कहा नाम और दुसरा अंहकार, ये इक्टठे एक अन्तःकरण में नहीं रहते। एक रहेगा चाहे तो रहे अंहकार । प्रच्छत तो मूल में खड़ा है और चाहे परमेश्वर इसलिये –

*हउमै नावै नालि विरोधु है दुइ न बसहि इक ठाई।।*

(पृ० ५६०)

नाम और अंहकार आज तक किसी के अन्तःकरण में इक्टठे नहीं हुए। कबीर में अहंकार नहीं रहा, नाम रहां जितने भक्त हैं इनके हृदय में अहंकार नहीं रहा, नाम रहा। जो संसारी जीव भूले हुए हैं उनमें अहंकार होता है। भुलाने वाला भी ऐ अहंकारी ही है।

*हउ हउ भीति भइओ है बीचो ।।* (पृ० ६२४)

एक अहंकार की दीवार है जिस करके इस को दीखता कुछ नहीं है यह अहंकार के साथ ही चलता है। वह अहंकार एक ऐसी सूक्ष्म बीमारी है, अहं बड़ी बीमारी

*है इउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि ।*
*किरपा कर जे आपणी ता गुरू का सबदु कमाहि ।*

(पृ० ४६६)

अहंकार तो एक बड़ा भारी रोग है।

*कई जनम भए कीट पतंगा ।।*
*कई जनम गज मीन कुरंगा ।।* (पृ० १७६)

अहंकार कर के ही ये जन्म लेते और मरते हैं। अहंकार गया तो जन्म-मरण समाप्त हो गया। इस करके भाई अहंकार को त्याग कर नाम जपो

और नाम ही एक औषधि है।

*सिमरि सिमरिनामु बारंबार ।।*

*नानक जीअ का इहै अधार ।।* (पृ० २६५)

जीव का आधार देनेवाला नाम ही है और संसार में कोई वस्तु नहीं । नाम ही वाणी को मिलाता है। नाम का सिमरन और हरि का संग छोड़ो ना। कोई ऐसा महापुरूष हो जो मेरे मन को परमेश्वर के साथ जोड़ दे और फिर मैं उस के चरणों में पड़ूँ और शुभ वचन कहूँ नाम का सिमरन करूँ और निष्काम कर्म करूं।

**दीजहिं प्रान अकोरि (१) रहाउ ।।**

मैं अपने प्रान 'अकोरि' अर्थात् अर्पण कर दूं। अकोरि का अर्थ है अर्पण। मैं अपने प्राणों तक को उस महापुरूष को अर्पित कर दूंगा। आपको पता है कि जनक ने जब लिखकर लगा दिया, वह महापुरूष था, बड़ा ऊंचा महापुरूष था, संसार का बादशाह था, लेकिन साथ में संसार का सेवक भी था। इसलिये जब उसने लिखकर लगा दिया, वे समस्त ब्राह्मण जो भी महात्मा एकत्रित हुए कि मैं घोड़े की रकाब में पाँव डालू और मुझे ज्ञान करदे। कोई वहां न आया, उस सिंहासन पर कोई न बैठा। अष्टावक्र को पता लगा और अष्टावक्र पिछले जन्म का योगी था बड़ा ऊंचा था। वह आया और आकर गद्दी पर बैठ गया। लोग बड़े हँसे, ब्राहण लोग भी बड़े हँसे । भई यह एक तो रंग का काला है, एक यह टेढ़ा-मेढ़ा जैसा है, इसका पता नहीं था जो आकर गद्दी पर बैठ गया।

वह चुप करके बैठा रहा। जब जनक ने बादशाह चाहे कितना भी हो तो भी उस की बुद्धि विलक्षण होती है। उसने सब कुछ सामग्री लाकर अर्पण करके नमस्कार की कहते जी आपने पढ़ा है ? वह कहता हाँ- कहने लगा कि देखो यहां कितने ब्राहण बैठे हैं। कितने पंडित बैठे हैं, वह कहता नहीं एक भी नहीं है क्या हैंद्य कहता कुछ तो इसमें कसाई हैं कुछ चमार है। वे हैरान हो गये। कहते क्यों ? कहता यह मुझे देखकर हँसे जब मैं गद्दी पर बैठ गयौ भाई! यह मारा जायेगा, ये सारे हँसे। चमार चाम को देखकर हँसता होता है और कसाई हड्डियों को देखकर हंसता है। मेरा रंग काला था और पिछले जन्म का मुझे शप था। कि मेरे टेड़े होंगे जितने मेरे अंग हैं इस लिये

आठ वक्रताएं हैं मेरे में। इहोंने मेरा कुछ देखा तो न था। वे सारे हैरान हो गये कि बात तो ठीक है और वह भी हैरान हो गया बादशाह। उसने कहा जी मुझे ज्ञान प्रदान करो , कहता ज्ञान ऐसे तो नहीं होता ।

**तनु मनु धनु सभु सउपि गुर कउ हुकमि मनिऐ पाईऐ ।।**

पहले तन मन धनअपने गुरू को अर्पित कर और फिर हमारे आज्ञा मान, फिर हम तुम्हें उपदेश करेंगे। उसने तीन बार जल हाथ में लेका देने का संकल्प किया। मैं तन मन धन आपको अर्पण करता हूँ। वह कहता कर दिया ? उसने भीतर देखा, संकल्प किया मैं अब घोड़े पर पैर रखूं, रकाब में पैर डालूं। उसने कहातू तो बादशाह है, बादशाह तो नीति जानते हैं तुम तोबेईमान भी हो। उसने कहा क्यों ? कहता कि तुमने संकल्प किया घोड़े की रकाब में पैर डालने का। किसके साथ किया ? कहा मन से। मन तेरा है कि मेरा ? मन तो तुमने मुझे अर्पण कर दिया, वह बादशाह था। कहता कि भूल हो गई। उसने संकल्प त्याग दिया। संकल्प-विकल्प का अभाव हो जाये तो आत्मा का साक्षात्कार हो जाता है। वह चरणों पर गिर पड़ा। इसलिये उसको ज्ञान होगया। जब यह जीव समस्त कर्मों को छोड़कर इसको कोई पूर्ण महापुरूष मिल जाये, इसके मन को उस परमेश्वर के साथ जोड़ दे पर यह मन तन सब को एक ही बारगी अर्पण करदे। मैनें अर्पण कर दिया अपने प्राणों से लंकर समस्त।

**मनु तनु निरमल करत एक आरो ।**

कहता मन तन को निर्मल शुद्ध बना ले जैसे जमींदार जब खेत को शुद्ध करते हैं, ये प्याज लगाते हैं, सब ठीक करते हैं, फिर उसे सींचते हैं। इस प्रकार जैसे क्यारियों को शुद्ध करते हैं, जमीन के स्थान को शुद्ध करते हैं, ऐसे अपने तन

**को भाई शु( कर लें तू।**

**हरि सिंचै सुधा संजोरि ।**

वे कहते इधर लगाना अन्तःकरण को उधर लगाना कयारा। यह दृष्टांत ळे, कहते वह शुद्ध के साथ, रस के साथ आनंद के साथ वे तेरे अन्तःकरण को सींच देगें, तेरे अन्तःकरण में वह रस आ जायेगा।

***उह रसु पीआ इह रसु नही भावा ।*** (पृ० ३४२)

जब तुम्हें आत्मरस प्राप्त हो गया तो संसार का रस कोई काम नहीं। इसलिये तुम्हारा जो अनतःकरण है, उसमें आत्मरस प्राप्त हो जायेगा। आत्म आनंद प्राप्त हो जायेगा। यदि तुम अपना मन तन शुद्ध करके यह सब परमेश्वर के अर्पण कर दिया। गुरू के अर्पण कर दिया।

*गुरू परमेश्वर एको जाणु ।*
*जो तिसु भावै सो परवाणु ।।* (पृ० ८६४)

गुरू परमेश्वर दो नहीं होते । गुरू होता है ब्रह्मज्ञानी । ब्रह्मज्ञानी परमेश्वर होता है।

*ब्रहमगिआनी कउ खोजहि महेसुर ।*
*नानक ब्रहमगिआनी आपि परमेसुर ।*
*ब्रहमगिआनी का सगल आकारू ।*
*ब्रहमगिआनी आपि निरंकारू ।*
*ब्रहमगिआनी सभ स्त्रिसटि का करता ।*
*ब्रहमगिआनी सद जीवै नहीं मरता ।* (पृ० २७३)

वह चेतन मरणकर्मा तो है नहीं वह तो जन्म-मरण से रहित नारायण है। वह तो व्यापक है सब का रक्षक है।

*राखा एकु हमारा सुआमी ।*
*सगल घटा का अंतरजामी ।* (पृ० ११३६)

वह जो सब के हृदयों का अन्तर्यामी है सब के हृदयों को, मन को, बुद्धि को जानता है देखता है वह एक परमेश्वर है और कोई परमेश्वर कहीं नहीं बैठा तो नही?

वह तो व्यापक है, परिपूर्ण है इसलिये भाई उस परमेश्वर के साथ जब यह जुड़ गया। शुद्ध परमेश्वर है, वह भी यदि शुद्ध तेरा मन होगा तो मिलाप होगा। यह उस उपनिषद में बड़ा प्रंसग आया, उसने कहा जी तुम इसकी बुद्धि का मिलाप किस प्रकार करोगे परमेश्वर के साथ ? वे कहते जब बुद्धि शुद्ध हो जाएगीए परमेश्वर भी शुद्ध है, दोनों एक हो जायेंगे। इसलिये जब तक मन शुद्ध नहीं होता तो इसे परमेश्वर भी नहीं प्राप्त होता। पहले इसने मन को शुद्ध करना है, यह पुरूष पुरातन है। परमेश्वर ने किसी रूप में इस पर कृपा करनी है। इसके मन को परमेश्वर के साथ जोड़ना है। वह शुद्ध

मन, जुड़ा हुआ इसको सब कुछ प्राप्त हो जाएगा। आत्म आनंद, आत्म-रस प्राप्त हो जाऐगा।

**इआ इस महि मगनु होत किरपा ते ।**

कहते जी यह जो मन है वह आतम-रस आत्म प्राप्ति, आत्मा के आनंद में मगन कैसे होगा? कहता - परमेश्वर की कृपा से जब परमेश्वरकी कृपा हो जाऐगी तो मग्न हो जाऐगा। तम्हें पता है एक साधारण सी बात वह घसियारा सदैव घास खोदता था।खोद कर बेचता था। उस की वह रोटी खाता था। आठ पहर परमेश्वर का भजन करता था, भक्ति करता था। जब गुरू साहिब जहाँगीर के साथ गये कश्मीर को, जहाँगीर ने सच्चे पातशाह से क्षमा माँगी। मेरे से बड़ी गलती हुई है और चंदू ने कराई हे पर मेरा कोई कसूर नहीं। मै तुमीारा दास हूँ और जब समझौता होगया जहाँगीर से तो उसने कहा सच्चे पातशाह को मै तुम्हें कश्मीर की सैर कराउगाँ। वे मान गये। वे साथ ले गये। अब जहां उनका पड़ाव होता था, तब गाड़ियां तो थी नहीं और वे जाते थे तो पहले शामियाना गुरूके लगते थे और फिर जहांगीर का लगता था। वहां वे उतरते थे। उसको भी पता लग गया घसियारा का भाई सच्चे पातशाह आये हैं और ये कृपा करते है। वे स्वयं पहलेदिन उसने घास खोदा घास खोद कर रोटी नहीं खाई, वे जैसे उसने अपने पास रखे कि और तो मेरे परस कुछ नहीं हैं। वे पैसे जाकर अर्पण करने हैं उधर काजियों ने इक्टठे होकर अथवा मुल्ला ने सलाह की भई ये जो सिक्ख हैं ये गुरू साहिब को तो सच्चा सिक्ख कहते हैं और जहांगीर को झूठा पातशाह कहते हैं। इस्लाम का बड़ा भारी अनादर है। यह ात करने के लिये वे जहांगीर के पास गये। जहांगीर ने कहा नहीं ठीक है जो है वे कहते न जी इस्लाम का अपमान है इसमें तो बहुत। फिर क्या करोगे ? कहते आज हम संतरी जो खड़ा होगा उसको ये कहेंगे। जब वह पूछे कि सच्चे पातशाह का शामियाना कहां है। तो हम आपका शामियाना बतायेंगे। यह कह दिया संतरी को । वह आया घसियारा, उसने पूछा कि सच्चे पातशाह का तम्बू कहाँ है? उसने जहांगीर के तंबू की ओर संकेत किया और वह चला गया। जहांगीर बैठा था उसने चार परिक्रमा करके जो पास पैसे थे, वे रख दिये और दण्डवत करके खड़ा हो गया। उसने कहा क्या मांगता है ? उसने कहा, जी मैं मुक्ति मांगता

हूँ वे जो समीप बैठे अहलकार थे और बैठे ही होते हैं, उन्होंने कहा मुक्ति से क्या लेगा? घास तो तुम प्रतिदिन खोदते हो एक कुंआ दे देते हैं तुझे। उसने कहा - ना । अतं में उन्होंने कहा - गांव दे देते हैं उसने कहा ना। नाजिम (प्रबन्ध कर्ता) बना देते है, उसने कहा ना। मैं तीन लोंकों की इच्छा नहीं रखता, मुझे तीन लोंको की आवश्यकता नहीं। मैं तो मुक्ति प्राप्त करनी है सच्चे पातशाह की। जहांगीर कहता भई वह है तंबू सच्चे पातशाह का, मैं हूँ झूठा पातशाह। उधर चल। उसने वे पैसे उठा लिये, और तो उसके पास पैसे थे ही नहीं। वह उठा कर गुरू साहिब के शामियाना की ओर चल पड़ा। पीछे जहांगीर भी चल पड़ा। सारे चल पड़े। जब वह जाकर उसने परिक्रमा की दण्डवत की पैसे वहां आगे रखकर दण्डवत् करके खड़ा हो गया। गुरू साहिब ने कहा क्या चाहता है? कहा जी - मुक्ति। उन्होने कहा मेरे नेत्रों से नेत्र मिला। वे जब आँ मिलाई, अवतार में इतनी शक्ति होती है, वह सब को पेर करके मन को एकाग्र करके परमेश्वर के साथि जोड़ देता है। उस को परमेश्वर के साथ जोड़ दिया। वह कहता निहाल! निहाल! निहाल! ज्ञान हो गया उसको। इस प्रकार जुड़ते हैं इस प्रकार पूर्ण महापुरूष ही जोड़ सकते हैं और कोई नहीं जोड़ सकता। जब यह हो गया तो जहांगीर ने कहा - जी हिन्दुओं की मुक्ति बड़ी सस्ती है। उस समय हिन्दू ही कहते थे। इतने पैसों में आ जाती है। गुरू साहब कहते तुम क्या देते थे ? वह कहता जी मैं तो यह सब कुछ कहते रहे, बहुत देता था, नाजिम भी बनाते थे। इसने कहा मुझे मुक्ति चाहिये हैं। वह कहते इसने फिर क्या कहा । इसने कहा मुझे तीनों लोकों की आवश्यकता नहीं, मुझे तो मुक्ति चाहिये। कहते यदि तीनों लोकों की इसको आवश्यकता नहीं है। तो इतना यह निष्काम पुरूष है। फिर इसे मुक्ति क्यों चाहिये? वह कहता हमें चाहिये थी। फिर निहाल हो गया। इस प्रकार जब तक यह जीव अन्तकरण को शुद्ध नहीं करता , ईश्वर की शरण नहीं पड़ता, पूर्ण भरोसा परमेश्वर गुरू पर नहीं करता, तब तक इस का कोई कर्य सिद्ध नहीं होता। यह तो संसार है, कर्म - क्षेत्र है, इसमें कोई किसी का कुछ नहीं। उपनिषद में हम पढ़ते थे, इस बार उसमें प्रश्न आया कि यह मर कर जीव कहां जाता है? उस ऋषि को लोंगो ने प्रश्न किया, जी यह मर कर कहां जाता है? उसने कहां जाना कहां था, यह तो जैसे कर्म हैं

वहां चला जाता है। यदि इसके कर्म पाश्विक हैं तो पशु बन जायेगा, पक्षी वाले कर्म हैं तो पक्षी बन जायेगा, वृक्ष के कर्म हैं तो वृक्ष बन जायेगा और जाना कहां है। समस्त संसार कामना करता है, मैं बड़ा हो जाऊँ, यह हो जाये, लेकिन निर्ण तो कर्मों पर है। वह तो परमेश्वर अन्तर्यामी है । वह तो सर्वत्र है इसलिये उसने उत्तर दिया, कर्मों पर निर्णय होगा। कर्म शुद्ध करो। कर्म निष्काम करो, सेवा निष्काम करो, आप पर कृपा अवश्य होगी। परमेश्वर की कृपा पर इसको भाई वह वस्तु प्राप्त होगी।

**महा विखिया ते तोरि ।**

यह जो तू विषयों में तुम्हारा मन संलिप्त है, इससे इसें तोड़ ले, रविदास बहुत भजन करता था उसको सगुण परमेश्वर ने दर्शन दिये। वह पूछता बता तेरी क्या इच्छा है? उसने एक ही उत्तर दिया – मैने सच्ची प्रीति आपके साथ जोड़ दी आपके साथ जोड़ कर समस्त विषयों से तोड़ ली। वे जो घोर विषय हैं संकट रूप, वन रूप उनके साथ भाई उसने तोड़ी । अब पढ़ पंक्ति –जब परमेश्वर की कृपा हो आत्मरस में जीव तब प्राप्त होता है, तब उसमें मग्न होता है, स्थित होता है।

**हां जी! महा बिखिया ते तोरि ।**

भाई समस्त विषयों के साथ ध्यान को तोड़ दो, विषयों के आकार वृत्ति न करना, एक परमेश्वर के आकार करना, एक परमेयवर का भजन करना। आकार ही जीव का सिमरन है और किसी में नहीं है। आज भी आया वहां कबीर का शब्द कि नाम के साथ जब इसका मन जुड़ गया एक बार, फिर इसकी मुक्ति हो जाऐगीं। अब आज यह बात आप करना, यह मैं तुम्हें बताऊँ, तब भी नहीं आनी। तुम देखना तड़के उठकर, नाम के साथ्ज्ञ मन को जोड़ना पर तुम फिर देखना तुम्हारा मन किसी अन्य ओर तो नहीं भागता । यदि आपका मन अन्य किसी ओर भागता है तो निष्फल है फिर नहीं आपका काम ठीक। फिर तो कुछ लाभ नहीं। यदि नाम से जुड़ गया तो फिर तुम्हारी मुक्ति हो जाऐगी, कार्य सिद्ध होगा। तेरी बारी इस मनुष्य जीवन में गोविंद मिलन की है, तो तेरा कार्य सिद्ध हो गया, तब तो सब ठीक हो गया।

जो निर्धनों के दुःख निवारण करने वाला, समस्त दुःखों को दूर करने

वाला, अन्तर्यामी परमेश्वर है, गुरू अर्जुन देव जी कहते मैं उसकी शरण पड़ा । मैं गुरू रामदास की शरण पड़ा – गुरू अर्जुन देव जी लिखते हैं इस श्लोंको में कहते हैं लोंगो को पता नहीं – हरि का नाम रामदास पड़ा है और लोंगो को पता नहीं हैं इस बात का और मैं शरण पड़ा गुरू परमेश्वर की। मैं प्रतिक्षण आप का सिमरन करता हूँ, मेरी भीतरी जो दृष्टि है तीसरी विद्या वृत्ति आपके आकार है, एक होती है अविद्या वृत्ति। अविद्या वृत्ति भूल, विद्या वृत्ति होती साफ। जो परमेश्वर आकार वृत्ति हो जिसे ब्रह्माकार, अखण्डाकार वृत्ति कहते हैं। जब इसकी मैं वृत्ति लगाकर, अब आपसे परायण करके देखता हूँ, आपके ही परायण मैं सिमरन करता हूँ, अब गुरू अर्जुन देव जी कहते हैं कि मेरा मन भाइ? यह काम करता है।

**अथै पद दानु सिमरनु सुआमी को**

कहता मैने एक ही दान मांगा है मुझे अभयदान दो जी, साथ जन्म मरण का भय कट जाये और स्वामी के सिमरन में मेरा मन लग जाये। मैने परमेश्वर से यह चीज माँगी कि हे परमेश्वर मेरा सिमरन तो मै जन्म – मरण से रहित, सिमरन करके हो जाऊँ।

**प्रभ नानक बंधन घोरि ।**

श्री अर्जुन देव जी कहते भाई ! सारे बंधन छूट गये, समस्त बंधन कट जाते हैं जन्म-मरण के, यह जन्म-मरण से रहित नारायण हो जाता, परमेश्वर का स्वरूप हो जाता है।

**बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरू ।**

❑

**१ ओंकार सतिगुरु प्रसादि।।**

# 3

सोरठि महला ५

प्रभ की सरणि सगल भै लाथे दुख बिनसे सुखु पाइआ।
दइआलु होआ पारब्रहमु सुआमी पूरा सतिगुरू धिआइआ।
प्रभ जोउ तू मेरो साहिबु दाता।
करि किरपा प्रभ दीन दइआला गुण गावउ रंगि राता।। रहाउ ।।
सतिगुरि नामु निधानु द्रिड़ाइआ चिंता सगल बिनासी ।
करि किरपा अपुनो करि लीना मनि वसिआ अबिनासी ।।२।।
ताकउ विघनु न कोऊ लागै जो सतिगुरि अपुनै राखै ।।
चरन कमल बसै रिद अंतरि अंम्रित हरि रस चाखै ।।३।।
करि सेवा सेवक प्रभ अपुने जिनिमन की इछ पुजाई।
नानक दास ताकै बलिहारै जिनि पूरन पैज रखाई।।४।।

(पृ० ६१५)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सत्नाम श्री वाहिगुरू, सत्नाम श्री वाहिगुरू

शब्द रब्बी वाणी का, ईश्वर के वाणी का, श्रीगुरू अर्जुन देव जी द्वारा आया है। इस का नाम हुक्मनाम है। हुक्मनामे में कभी न नुकर नहीं होती। इस को भाणा(प्रभु इच्छा) भी कहते हैं, परमेश्वर की। गुरू साहिब ने लिखा है -

हुक्म न कहिआ जाई । (पृ० १)

हुक्म कहनें में नहीं आता। हुक्मी और हुक्म का अभेद होता है। परमेश्वर के हुक्म का किसी को कुछ पता नहीं, भई- अब से दो मिनटों को क्या कर इसलिये यह हुक्मनामा है। हुक्मनामे का अर्थ यह होता है कि जब हुक्मनामा सुन लो, उस हुक्मनामे पर अपने मन को चलाना। यदि हुक्म में मन हो गया तो हुक्मी प्राप्त हो जाता है। पंचम पातशाह के सम्बन्ध में लिखा है -

*धरनि गगन नव खंड महि जोति स्वरूपी रहिओ भरि ।*
*मनि मथुरा कछु भेदु नहीं गुरू अरजुनु परतख्य हरि ।।*

(पृ० १४०६)

जब भट्ट शरापग्रस्त हुए तो एक वर्ष तक संसार में घूमते रहे, कहीं शरापमुक्त नहीं हुये, किसी द्वार से उनको भीख नहीं मिली। अंततः उनको बताया गया कि तुम गुरू के द्वार पर जाओ, वहां से तुम्हें भीख मिलेगी। वे आये, वे शरापमुक्त हो गये और ज्ञान की प्राप्ति हो गई। वे सतरह भट्ट लिखे हैं, मथुरा उनमें से शिरोमणि था। उसने कहा ये प्रत्यक्ष सगुण रूप में ईश्वर रूप हैं, कभी तुम आज से शंका न करना, हमें ज्ञान इन से प्राप्त हुआ है। ज्ञान पूर्ण पुरूष से ही प्राप्त होता है और

*गुरू जोति अरजनु माहि धरी ।।* (पृ० १४०६)

गुरू रामदास जी जब चले गये तो उन्होंने भी ज्योति अर्जुन देव में ही रखी, दूसरे उस महादेव में नहीं रखी और शेष किसी में नहीं रखी। अंततः यह गुरू अर्जुन देव जी में ज्योति आई। वह कौन सी ज्योति है -

*जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ ।*
*ताते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ ।* (पृ० १४०६)

वह ज्योति स्वरूप 'गुरूनानक' कहलाया। चार उदासियां (लम्बी यात्राएं) की, संसार में जो क्षमा के योग्य थे क्षमा किये, शिक्षा दी, बड़े-बड़े पीरों को, सिद्धों को। सिद्धों को यहां तक रूचि थी कि हम इसको शिष्य ही बना लें। बड़ा प्रयत्न किया, बड़े प्रश्न किये। अंतत चरपट नाथ ने गोरख को कहा कि एक प्रश्न मुझे भी कर लेने दो

*दुनीआ सागरू दुतरू कहीऐ किउकरि पाईऐ पारो ।*
*चरपटु बोलै अउधू नानक देहु सचा बीचारो ।।* (पृ० ६३८)

चरपट कहता यह मेरा प्रश्न है, इस संसार में निवास करके संसार में से कैसे मनुष्य मुक्त हो सकता है? इस को मुक्ति कैसे हो सकती है? गुरू साहिब ने कहा -

*जैसे जल महि कमलु निरालमु मुरगाई नेसाणै ।*
*सुरति सबदि भवसागरू तरीऐ नानक नामु भखाणे ।।*

(पृ० ६३८)

जब तुम अपने मन को उस निर्लिप्त परमेश्वर में अलग करके, एक पर ही पूर्ण भरोसा करके मन को असंग कर लेगा तो बुद्धि तेरी का मुरगावी की भाँति, संसार के किसी पदार्थ के साथ लेप-चेप (लिप्तता) न हो, फिर तुम सुरति को शब्द के साथ जोड़ देना, तो तेरा उद्धार हो जायेगा। उसने कहा, ठीक है। चल नाथों ने तोबा कर दी। इसलिये पहले तुम्हें पता है, भई दो पदार्थ गुरू परम्परा में लिखे हैं, सेवा और सिमरन। सेवा से मन शुद्ध हो जाता है, सिमरन के साथ परमेश्वर की प्राप्ति होती है।

*सिमरि सिमरि नामु बारंबार ।*
*नानक जीअ का इहै अधार ।।* (पृ० २६५)
*खोजत खोजत ततु बीचारिओ दास गोबिंद पराइण ।*
*अविनासी खेम चाहहिं जे नानक सदा सिमरि नाराइण ।।*

(पृ० ७१४)

यदि तुम सिमरन करोगे, तुम्हें अविनासी पद के समीप ले जायेगा सिमरन। लेकिन सिमरन के आगे सुरति आती होती है ।

*सुरति सबदि भवसागर तरीऐ नानक नाम बखाणे ।*

(पृ० ६३८)

जब तेरी सुरत, सुरत नाम है वृत्ति का, विचार का। जब तुम्हारा विचार उस परमेश्वर के साथ जुड़ जायेगा जब तुम्हारा ध्यान लग जायेगा, जब तुम्हारी ब्रहमाकार वृत्ति हो जायेगी, तेरा उद्धार हो जायेगा।

*कत जाईऐ रे घर लागो रंगु ।।*
*मेरा चितु न चलै मनु भईओ पंगु ।। रहाउ ।।*
*एक दिवस मन भई उमंग ।।*
*घसि चंदन चोआ बहु सुगंध ।*
*पूजन चाली ब्रहम ठाइ ।*
*सो ब्रहमु बताइओ गुर मन ही माहिं ।।१।।*
*जहा जाईऐ तह जल पखान ।*
*तू पूरि रहिओ हे सा समान ।।*
*वेद पुरान सभ देखे जोइ ।*
*ऊहां तउ जाईऐ जउ ईहां न होउ ।।२।।*

*सतिगुरू मैं बलिहारी तोर ।*
*जिनि सकल विकल भ्रम काटे मोर ।।*
*रामानंद सुआमी रगत ब्रहम ।।*
*गुर का सबदु काटै कोटि करम ।।३।।* (पृ० ११६५)

रामानंद का एक ही शब्द है गुरू ग्रन्थ साहिब में । एक परमानंद का है, उसके गुरू-भाई का। रामानंद कहते मैं वह जो बाहर नारायण का मंदिर था, उसकी पूजा करता होता था। जब मेरे अंदर उस परमेश्वर की प्राप्ति हुई, आनंद प्राप्त हुआ तब उस समय मेरे भीतर लग गया,प्रेम लग गया। पूर्ण प्रेम के साथ मेरा यह मन

जुड़ गया, अब – कत जाईऐ रे घर लागों रंगु ।।
मेरा चित न चलै मन भयउ पंगु ।।

मेरा मन पिंगला हो गया। मन के दो ही पांव होते हैं। संकल्प और विकल्प, तीसरा कोई नहीं होता। जीव कभी तो संकल्प कर लेगा कभी कहेगा, ऐसे नहीं ऐसे, ठीक है। विकल्प कर लेगा और मन का कोई साधन नहीं होता और जब मैं पूजने चला अपने उस नारायण को तो गुरू साहिब मुझे मिले उन्होने कहा -

कत जाईऐ रे घर लागो रंगु ।
मेरा चित न चलै मन भयउ पंगु।। रहाउ।।
एक दिवस मन भई उमंग ।।
घसि चंदन चोआ बहु सुगंध ।।
पूजन चाली ब्रहम ठाइ ।।
सौ बंहमु बताइओ गुरू मन ही माहिं।।

वह मुझे गुरू मिला, गुरू ने कहा वह ब्रहमज्ञानी व्यापक है, ब्रहम उसको कहते हैं जो साक्षी रूप द्रष्टा रूप तुम्हरे भीतर चेतन बैठा तुम्हारा आपा, आत्मा, जिसको अपना आप कहते हैं -

*जिनी आतमु चीनिआ परमातमु सोई ।*
*एकु अंम्रित बिरखु है फलु अंम्रितु होई ।।* (पृ० ४२१)

और अमर हो जायेगा। अमर पहले ही है तू लेकिन अभी वृत्ति के भुलावे में हो, तुम विचारों में फँसे हुये हो। वह विचारों का जो उत्स है वह सोऽहम्

प्रकाश अनुभव है।

*चीनत चीनु निरंजन लाइआ ।*

*कहु कबीर तौ अनभउ पाइआ।।* (पृ० ३२८)

जब उसने चित को चेतन के साथ जोड़ा तो इस का आपा प्राप्त हो गया, अनुभव। आपा प्राप्त हो गया तो मुझे वह ब्रहम, वृत्ति में भीतर ही बताया और मेरा उद्धार हो गया। अब मुझे इतना कह गया -

*जहा जाईऐ तह जल परवान ।।*

*तू पूरि रहिओ है सभ समान ।।* (पृ० ११६५)

अब मुझे इतना पता लग गया कि जो मेरे हृदय में प्रकाश रूप, ज्योति स्वरूप है वह सबके हृदयों में है। भगवान कृष्ण ने जब ज्ञान आरम्भ किया, उसने स्पष्ट यही से आरम्भ किया।

*क्षेत्रक्षेत्रज्ञ योर्ज्ञानं यन्तज्ज्ञानं मतं मय* (गीता १३/२)

जो मेरे शरीर के भीतर क्षेत्रज्ञ, चेतन ज्ञान, परमात्मा है, वह बके हृदयों मे एक ही है।

*सा महि जोति जोति है सोई ।*

*तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ ।*

*गुर साखी जोति परगटु होइ ।।* (पृ० १३)

वह सक के भीतर ज्योति है। यदि ज्योति सब के भीतर न हो, तो हम अपनी वृत्तियां किस के द्वारा देखे ?

*नानक पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछाणिआ ।।*

(पृ० १४४)

वह पारस स्वयं है परमेश्वर, जो हृदय में बैठकर परीक्षा करता है, अशुभ विचारों की भी, शुभ विचारों की भी। उसे पता लग जाता है , यह मेरा उपयुक्त था। यह अनुपयुक्त था। वह परमेश्वर सब के हृदयों में है। उसको क्षेत्रज्ञ कहते हैं।

*क्षेत्रज्ञं चापि मां वि( सर्वक्षेत्रेषु भारत ।*

*क्षेत्र क्षेत्रज्ञ योर्ज्ञानं यत्तज्ज्ञानं मतं मम ।* (गीता १३/२)

मेरा यह मत है कि जिसको क्षेत्र एवं क्षेत्रज्ञ का ज्ञान हो गया, उसको आने स्वरूप का ज्ञान हो गया। संसार मिथ्या है क्षेत्रज्ञ द्रष्टा हे, साक्षी है,

व्यापक है, परिपूर्ण है। इस करके

*द्रिसहिमान है सगल मिथेना ।।* (पृ० १०८३)

जो देखने में आता है तीन गुण हैं। चाहे मन हो, चाहे बुद्धि हो, चाहे प्राण हों, चाहे इन्द्रिऐं हो, शरीर हो, यह सब मिथ्या है। परन्तु द्रष्टा देखने वाला तो नहीं मिथ्या।

मुई सुरति बादु अहंकारू ।
ओइ न मूआ जो देखणहार ।
पड़ि पड़िपंडितु बादु वखाणे ।
भीतरि होदी वसतु न जाणै ।।

यहां तक उपदेश जब पहली पातशाही ने किया वह पंडित कहता जी फिर तुम नहीं मरोगे ?

हउ न मूआ मेरी मुई बलाई ।
ओहु न मूआ जो रहिआ समाइ ।
कहु नानक गुरि ब्रहमु दिखाइआ ।
मरता जाता न दरि न आइआ ।।

वहां जन्म-मरण है नहीं परमेश्वर में। जन्म-मृत्यु, मन आदि का कर्म है, स्थूल, सूक्ष्म शरीर का और शेष चेतन तो निलेप है, वह तो शुद्ध है, वह तो नारायण है, वह तो परमेश्वर रूप है, वह तो निराकार है, निराकार का जन्म मरण कभी हुआ ही नहीं है। इसलिये वह परमेश्वर परिपूर्ण है, व्यापक है, वह ज्योति स्वरूप है, वह ज्योति जब प्रकट हो जायेगी तो सारा संसार मिथ्या हो जायेगा। उस समय उसको ज्ञान आ जायेगा। सूझ आ जायेगी पता लग जायेगा भई यह प्रयोजन था।

*भई परापति मानुख देहरीआ ।*
*गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ।*
*अवरि काज तेरे कितै न काम ।।*
*मिलु साध संगति भज केवल नाम ।।* (पृ० १२)

तुम एक शुद्ध नाम जपा करो। नाम तुम्हें तब प्राप्त होगा जब तेरा अन्तःकरण शुद्ध होगा। उसमें जो नामी बैठा है, वही नाम है।

*नाम के धारे खंड ब्रहमंड ।* (पृ० २८४)

जिसने समस्त खंड ब्रह्माण्ड धारण किये हैं उसको नाम कहते हैं। नाम-नामी का अभेद होता हैं। उस समय तुम्हें अपने आप सत्य का पता लग जायेगा। भाई सत्य और असत्य क्या चीज है ? फिर तुम्हें यह पता लग जायेगा ।

*आदि सचु जुगादि सचु ।*

*है भी सचु नानक होसी भी सचु ।* (पृ० १)

वह सत्य सदैव रहने वाला है, तीनों कालों में एक बस असत्य जो है उसकी सत्ता नहीं होती वह देखने में तो होता है। रडजुं में सर्प प्रतीत होता है। जब रज्जु का ज्ञान होता है तब सर्प है ही नहीं वहां। सीपी में चांदी प्रतीत होती है। जब बालक जाता है उठाता है, चांदी समाप्त हो गई और सीपी उसने फेंक दी। क्यों? झूठी थी मिथ्या थी। इसी प्रकार इसको जब अपने आप का ज्ञान हो गया, सूझ आ गई, इसको पता लग जायेगा कि मेरा आपा जन्म-मरण से रहित है नारायण। वह मेरी वृत्ति में बैठा हैं वह मेरी वृत्ति को भी देखता है, और मेरी वृत्ति के द्वारा समस्त संसार को भी देखता है। वह है द्रष्टा, वह है साक्षी, चेतन, वह है आपा, वह ज्योति स्वरूप है। वह ज्योति स्वरूप इसको कैसे प्राप्त होता है। अब पढ़ भाई!

सोरठि महला ५

सोरठ राग में पंचम पातशाह गुरू अर्जुन देव जी महाराज कथन करते हैं -

प्रभ की सरणि सगल भै लागे ।

जब तुम परमेश्वर की पड़ गया, तेरे समस्त भय नाश हो जायेंगे। शरणागति अन्तिम धर्म है। समस्त कार्यों में अंतिम कर्म शरणागति है।।

*सर्व कर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रत ।*

*अहं त्वा सर्व पायेभ्यो मोखभिष्यामि मा शुचः ।*

(गीता १८/६६)

गीता समाप्त कर दी यहां, बस। अंततः उसने बताया, कि शरणागति ही साधन है, तुम शरण ले लो सचिदाननद परमेश्वर की, व्यापकपरिपूर्ण की, तुम्हें समस्त भय नष्ट हो जायेंगे। तेरे समस्त पाप नष्ट हो जायेंगे । गुरू साहिब ने लिखा है -

*जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै ।*
*इहु बिरदु सुआमी संदा ।* (पृ० ५४४)

जो शरण आता है उसको कंठ लगा लेता है। शरण तो अंतिम सांपान है, बस। जब यह शरण पड़ गया इसको परिपूर्ण परमेश्वर उसी क्षण प्राप्त हो जायेगा। जब सुग्रीव ने कहा कि शत्रु का भ्राता आया है और आपके पास आने के लिये कहता है, विभीषण आया है चलकर दिल से, उसने कहा ले आ। फिर कैसे लायें? तुम सारे मंत्री पीछे हो जाओ, बड़े आदर के साथ लाओ। वह आ गया, ले आये। जब उसने नमस्कार की, माथा उठाया तो राम ने लेकर उस लोटे में से उसे तिलक कर दिया, कहता आ भाई लंकेश। लंका का मालिक बना दिया। सुग्रीव ने कहा जी यह नीति नहीं हैं वे कहते -

*सखा नीति तुम नीकि विचारी ।* (सुन्दरकाण्ड ४३–८)

मंत्री नीति जानते हैं, तुम बहुत श्रेष्ठ नीतिज्ञ हो, लेकिन मेरा तो यह नियम है जो मेरी शरण आये मैं उसका जन्म-मरण काट देता हूँ। तुम मेरी नीति नहीं जानते? मेरी तो धर्म नीति है, तेरी राजनीति है। राजनीति में तो आज तक किसी की मुक्ति नहीं हुई, कर्म नीति ही मोक्षप्रद है। यह शरण आया है, इसका उद्धार कर दिया, इसका जन्म मरण काट दिया। शरणागति अंतिम है, शरणागति का नाम ही प्रेमभक्ति है।

*प्रेम भगति उधरहिं से नानक ।*
*करि किरपा संतु आपि करिओ है।।* (पृ० १३८८)

जब यह प्रेमाभक्ति में शरण जाता है, इसका आप ही उद्धार हो जाता है, संत बन जाता है यदि वहां पहुंच जाये तो। इसका आपा सर्वत्र व्यापक है इसलिये गुरू साहिब कहते यदि तुम समस्त भय नाश करना चाहते हो पापों के, जन्म-मरण के तो परमेश्वर की शरण ले लो इसके ऊपर अन्य कोई साधन नहीं हैं।

दुख बिनसे सुखु पाइआ ।

तुम्हारे समस्त दुख नाश हो जायेंगे। सुख स्वरूप परमेश्वर तुझे प्राप्त हो जायेगा ।

दइआलु होआ पारब्रहमु सुआमी ।

मेरे ऊपर गुरू अर्जुन देव जी कहते, वह स्वामी महापुरूष पूर्ण परमेश्वर

बड़ा दयालु हो गया है, मुझे गुरू रामदास जी को भेंट किया, मुझे गुरू रामदास की प्राप्ति हो गई। मुझे वह गुरू और परमेश्वर ने बख्श दिया ।

*गुरू परमेश्वर एको जान ।।*

*गुरू ओर परमेश्वर एक होते हैं।*

*ब्रहम गिआनी कउ खोजहिं महेसुर ।*

*नानक ब्रहमगिआनी आपि परमेसुर ।*

*ब्रहम गिआनी सभ स्त्रिसटि का करता ।।*

*ब्रहम गिआनी जीवै नहीं मरता ।।* (पृ० २७३)

वह जन्म-मरण वाली वस्तु नहीं होती। वह आत्म स्वरूप होता है -

*जिनि आतमु चीनिआ परमातमु सोई ।*

*एको अंम्रित बिरखु है फलु अंम्रित होई ।।* (पृ० ४२१)

वह अमर हो जायेगा। इसलिये भाई ! शरणागति बहुत श्रेष्ठ वस्तु है। पर जब परमेश्वर पूर्ण प्रसन्न हो जाये। प्रेमभक्ति जब इसको प्राप्त हो जाये तो इसका मन प्रेम के साथ जुड़ जाता है परमेश्वर के साथ। अविनाशी पद की प्राप्ति हो जाती है। उसे लिव (लौ, लगन) कहते हैं उधर ब्रहमाकार वृत्ति कहते हैं, कोई अखण्डाकार । ये अपने अपने मत हैं, वस्तु एक ही हैं । इस करके इसका आपा चेतन हैं, व्यापक है, सत्य है, ज्ञान है, आनंद है, परिपूर्ण है।

वह भाई इसके, परमेश्वर की कृपा से दुःख नष्ट हो गये, सुख प्राप्त हो गया, आत्म सुख प्राप्त हो गया। यह परमेश्वर आर गुरू की कृपा है।

*पूरा सतिगुरू धिआइआ ।*

*पूर्ण गुरू रामदास, पूर्ण ब्रहमज्ञानी, सत्गुरू ।*

*ब्रहम गिआनी कउ खोजहिं महेसुर ।*

*ब्रहम गिआनी आपि परमेसुर ।।* (पृ० २७३)

इसलिये पूर्ण ब्रहम गिआनी गुरू रामदास सत्गुरू का जो नाम था, वह मेने जपा, जो ध्यान बताया उसका अभ्यास किया। मैं पूर्ण गुरू की शरण पड़ा और मुझे यह फल मिला।

प्रभ जीउ तू मेरो साहिब दाता ।

अब मुझे यह पता लग गया कि हे परमेश्वर तू मेरा स्वामी है, तू ही मेरा दाता है।

*सभना जीआ का इकुं दाता । सो मैं विसरि न जाई ।।*

(पृ० २)

जो सब का दाता परमेश्वर है, उसको कभी भूलना नही। जब यह भूल गया –

परमेसुर ते भुलिआं विआपनि सभे रोग ।
बेमुख होए राम ते लगनि जनम बिजोग ।।

इसलिये उस परमेश्वर को भूलना नहीं। वह साहिब है, वही स्वामी है, वही रक्षक है, वह अन्तर्यामी है।

*राखा एकु हमारा सुआमी ।*
*सगल घटा का अंतरजामी ।*
*करि किरपा प्रभ दीन दियाला ।।* (पृ० ११३६)

हे दीनों पर दया करने वाले हे प्रभु ! परमेश्वर मेरे पर कृपा कर। गुरू अर्जुन देव जी ने एक स्थान पर सुखमनी साहिब में लिखा है कि संत के संग मिलने के कारण परमेश्वर की प्राप्ति होती है। परमेश्वर कब मिलता है ?

*गिआन अंजनु मुरि दीआ अगिआन अंधेर बिनासु ।*
*हरि किरपा ते संत भेटिया नानक मनि परगासु ।।*

(पृ० २६३)

वह मेरे मन में ज्ञान का प्रकाश हो गया, वह ज्ञान मुझे प्राप्त हो गया ।

*संत संगि अंतरि प्रभु डीठा ।।*
*नाम प्रभु का लागा मीठा ।।* (पृ० २६३)

मैं उस संत के संग के कारण गुरू रामदास के अपने भीतर परमेश्वर के दर्शन किये। अब मुझे कीाी भूलता नहीं। इतना प्रिय लगा कि अब नहीं मुझे क्यों भूलता। इसलिये मुझे परमेश्वर, मेरे हृदय में प्राप्त हुआ। लेकिन गुरू रामदास जी ने कृपा तो पहले भी की, लेकिन गुरू की जब कृपा मोहर लग गयी तो मुझे भीतर प्राप्त हो गया । अब मुझे कहीं भागना नहीं पड़ा । अब तो –

*पूजन चाली ब्रहम ठाइ ।।*
*सो ब्रहमु बताइओ गुर मन ही माहि।।* (पृ० ११६५)

अब तो पता लग गया तो मन में, प्रकाश, चेतन ज्योति है, वह परमेश्वर है। वह व्यापक है, वह आया है उसे आत्मा कहते है। वह आत्मा परमात्मा

का कभी भेद नहीं होता। सूफियों ने यह कहकर समाप्त कर दिया सब कुछ -

खुद सनासी खुदा शनासी ।

इतनी बात में सूफियों का शास्त्र समाप्त हो गया। उन्होने स्पष्ट यह बात कह दी 'खुद सनाशी खुदा शनासी' जब स्वयं को जान लिया, खुदा ही खुदा है, वही एक है परमेश्वर, इसलिये बुद्ध ने भी यही कहा - 'निर्वाण पद' उसका वही है आपा। अन्य कोई नहीं हैं जिससे सब दुख नाश हो जाते हैं परमेश्वर निर्वाण पद भी प्राप्त हो जाता हैं और उसने ईश्वर का न खण्डन किया, न मंडन किया, कोई बात नहीं की। निर्वाण पद की उसको प्राप्ति हुई। ६ वर्ष उसने साधन किया बुद्ध ने वह भारत का एक बड़ा भारी महापुरूष हुआ है। गुरूनानक के बराबर की बात तो उसकी हो नहीं सकती । यह तो

जोति रूपि हरि आपि नानक कहायउ ।

यह तो एक ज्योति अवतरित हुई और उसने तो जागृत किया, बुद्ध ने । बुद्ध ने इतना साधन किया ६ वर्ष, जो भी गुरू ने बताया भाई तीन मास तो एक चावल ही खाना है। उसने वही खाया। फिर बताया भाई और किसी के पास चला जा, मेरी तो यहां तक गमता थी। जब सब समाप्त हो गये विषय, शरीर बड़ा ही निर्बल हो गया, निरंजना नदी बुद्ध गया, ऐसे छोटी सी है। उस में जब थोड़े से पानी में से निकलने लगा, उससे चला नही गया। उसने पीपल की पकड़ी टहनी सी और उसकी जड़ों में बह गया। वह निराश हो गया, कहता कुछ नहीं । कहता संसार में कुछ नहीं। जब उसने संसार सारा भीतर से निकाल दिया तो अपने आप ही उसको 'निर्वाण पद' परमेश्वर प्राप्त हो गया। उसने कहा अब क्या करें ? मेरे जो चार-पांच सेवक थे वे पांचों छोड़ कर चले गये। क्यों? वह खीर लाकर थाली एक माता ने रख दी। वह शुद्रा थी, उन्होंने कहा गौतम शुद्रा की खीर खा गया, भ्रष्ट हो गया। इसको गु नहीं मानना, वे छोड़ कर चले गये। उसने कहा अब मुझे प्राप्त हुआ है। वे मेरे शिष्य चले गये सेवा करते, उनको पता नहीं था, पहले मुझे प्राप्त भी कुछ नहीं था, इसलिये जब प्राप्त हुआ, अब क्या करें?फिर उन शिष्यों की ओर उठ कर चला। जब उन शिष्यों ने देखा कहते वह आता है गौतम ।

लेकिन अब हमने न तो इसके पांवों में प्रणाम करना है और न इसपर

विश्वास करना है, जब वह समीप गया, जबरदस्ती उनके माथे झुक गये। उसने कहा तुम तो ये विचार करते थे, सर्वज्ञता आ गई उसमें ।तुम तो ऐसे बातें करते थे, वे कहते हमारा पक्का इरादा था लेकिन कोई शक्ति है जिसने पकड़ कर हमें तुम्हारे चरणों पर डाल दिया। फिर उसने कहा-अरे निर्वाण पद की प्राप्ति मुझे हो गई है। यह पद है ऐसे प्राप्त होता है, वह तुम्हारा आपा है, वह आत्मा है। इसलिये फिर उनको भी ज्ञान हो गया फिर उसका प्रचार करने लग गये। एक बार समस्त एशिया बौद्ध हो गया था। दूसरी बार ब्रह्मण विद्या ने पछाड़ कर धकेला है। इसलिये वह बौद्ध वह बुद्ध बड़ा महापुरूष हुआ है। इसलिऐ उसने कहा अरे- नारायण पद' तुझे तब प्राप्त होगा जब तेरा मन संसार से खाली होगा। जब तक तुम्हारे मन में संसार है, उसकी कामनायें हैं, वासनायें हैं तब तक वह पद प्राप्त नहीं होता। इसलिये भाई वह परमेश्वर है, जो वृत्ति का साक्षी, द्रष्टा, देखने वाला, चेतन, वही ब्रह्म और वही ईश्वर है, गुरू साहिब ने लिखा है -

घटि घटि मै हरिजू बसै संतन कहिओ पुकारि ।
कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि ।।

जो सब के हृदयों में निवास करता है, वह तुम्हारे हृदय में भी है, जिस दिन तुम्हें वह प्राप्त हो गया तेरे मोक्ष हो जायेगी, संसार से पार हो जायेगा। कृष्ण जी ने भी यही लिखा जा कर १८वें अध्याय में -

*ईश्वर सर्वभूतानां हृदेशे अर्जुन तिष्ठिति।* (गीता १८/६१)

वह कहता अरे वह सब के हृदयों में ईश्वर बैठा है, और तेरे हृदय में भी अर्जुन। ईश्वर बैठा है लेकिन तुझे अपने आप का ध्यान नहीं आया और बाहर है तेरी वृत्ति। तुम उस जो भीतर ज्योति है उसके आकार वृत्तिकर, तेरा आपा वही है, तू भी तर जायेगा। ईश्वर तुम से विलग नहीं और तुलसीदास ने भी रामायण में यही बात लिखी है -

*ईश्वर अंस जीव अविनासी*
*चेतन अमल सहज सुख रासी।*
*सो मायाबरन भयउ गोसाइ*
*बंध्यो कोर मरकट की नाई।* (रामचरितमानस ७/११७)

कहता अरे यह शुद्ध है, व्यापक है, श्रेष्ठ है, परिपूर्ण है लेकिन माया के

मोह ने यह दो बातें भूल गया जैसे बंदर लोभवश चनों में हाथ डालकर मुट्ठी छोड़ता नहीं है, फँस जाता है, और जैसे पिंजरे में तोता बंद हो जाता है, चोगे के लालच में । इस लिये तू संसार का लोभ, मोह, अहंकार आदि त्याग दे। ईश्वर तुम्हारे से विलग नहीं है। तुम ईश्वर के अंश हो और जीव नहीं हो। तुम निर्मल हो, सहज सुख राशि, तुम ज्ञान की राशि हो, तुम ज्ञान का पुंज हो, तुम भ्रम के कारण जीवपना प्राप्त हुआ, इस लिये भाई ईश्वर सर्वत्र व्यापक है, उसको ब्रह्म कह लो, ईश्वर कह लो, व्यापक कह लो, सत्‌चित आनंद कह लो, वह इसका आपा है, उसको आत्मा भी कहते हैं, परमेश्वर भी कहते हैं –

गुण गावऊ रंगि राता।

प्रेम के साथ उस के गुण गाओ। पहले प्रेम के साथ मन को भिगोलो । प्रेम के साथ, प्रेम में जब मन रम जायेगा तो फिर उसका गुण गायन करो, तुम्हें परमेश्वर प्राप्त हो जायेगा।

*साच कहौ सुन लेहु सनै*
*जिन प्रेम कियो तिन ही प्रभ पायो।* (अकाल उस्तत)

दशम् पातशाह कहते जिसने भी प्रेम किया भाई उसने परमेश्वर को पाया। अन्य इसमें कोई साधन नहीं ।

साच कहौ सुन लेहु सबै।

जब सबने प्रार्थना की, कहते सारे सुन लो मैं सत्य कहता हूँ।

जिन प्रेम कियो तिन ही प्रभ पायो।

जिसने भी प्रेम किया, प्रभु को वह पाता है। इस लिये भाई परमेश्वर जब गुण गाओ, भजन करो, पूर्ण प्रेम के साथ गाओ। आपका मन कहीं और न जाये। मन का लगाव और संसार में न हो, एक तुम्हारी वृत्ति प्रेमरंग से भरकर, प्रेम द्वारा परमेश्वर के साथ जुड़ जाये तो तुम्हें अविनासी पद की प्राप्ति हो जायेगी।

रहाउ

रहाउ रागियों के लिये होता है।

सतगुरि नाम निधानु द्रिडाइया ।।

सत्‌गुरू रामदास ने मुझे नाम दृढ़ करा दिया, साक्षात करा दिया। 'नाम'

नाम है परमेश्वर का, व्यापक का, चेतन का ।

*नाम के धारे खंड ब्रहमंड ।* (पृ० २८४)

जो समस्त संसार का स्वामी है कबीर को यह शंका की ब्राह्ममणों ने भाई तुम ओम यों कहते हो? तुम जुलाहे हो, यह तो ब्राह्ममणें का अधिकार है, तेरा ओम का क्या अधिकार है? उसने कहा में ओम आप वाला नहीं कहता, जो तुम लिखकर ओम मिटा देते हो, उसको नहीं मैं कहता।

*आंअंकार आदि मैं जाना।*
*लिखि अरू मेटै ताहि न माना ।*
*ओअंकार लखै जउ कोई।*
*सोई लखि मेटणां न होई ।।* (पृ० ३४०)

मैं तो उस ओंकार को मानता हूँ जो समस्त विश्व का आदि है, उत्पत्तिकर्ता, पालनकर्ता, लयकर्ता, रक्षाकर्ता। में उस ओम का पुजारी हूँ जो आप ओम लिखकर मिटा देते हो, इस को मैं नहीं मानता। इसलिये नाम भाई परमेश्वर है। नाम नामी का अभेद है। वह मुझे नाम, गुरू अर्जुन देवजी कहते, गुरू रामदास जी ने दृढ़ करा दिया है। दृढ़ क्या करा दिया साक्षात करा दिया।पहले यदि आपका थोड़ा आपा न हो तो तुम बुद्धि किसके साथ देखो? बुद्धि तो जड़ हे। बुद्धि तो तुम कहते हो कि आज मेरी बुद्धि भाई कुछ भ्रष्अ सी हो गई, मैं भूल गया, आज मेरा मन भी कुछ ठीक नहीं हैं। वह जो ठीक, गलत को जानने वाला चेतन आत्मा ह, इसका आपा है। वह परमेश्वर है, वह मुझे दृढ़ का दिया, वह मुझे नाम दृढ़कर दिया, उसी का नाम जपना। उसी का नाम एकंकार है, उसी का नाम सत्नाम है। गुरू साहिब ने लिखा है –

एकम एकंकार निराला ।।
अमरू अजोनी जाति न जाला ।।
अगम अगोचर रूपु न रेखु ,
खोजत खोजत घटि घटि देखिआ।।

कहते हैं कहाँ ? कहते 'खोजत खोजत घटि घटि देखिआ' कहते वह सबके हृदयों में ओंकार बैठा है। भाई साहिब भाई गुरूदास जी कहते –

एका एकंकारू लिखि देखालिआ ।

*ऊड़ा ओंकार पारिू बहालिआ ।* (भाई गुरूदास ३/१५)

पहले एका लिखा भाई परमेश्वर एक है, जन्म मरण से रहित है, शुद्ध है और

*आदि सचु जुगादि सचु*
*हे भी सचु, नानक होसि भी सचु ।* (पृ० १)

बाद में ओम लिखा भाई, यह उसका नाम है, इस एक का तुम नाम जपना। एक के तुम पुजारी हो और अनेक के तुम पुजारी नहीं। जो अनेकों में एक जानता है उसको सुमति कहते हैं, जो एक में अनेक देखता है वह कुमति हैं कुमति और सुमति का इतना ही अंतर है। भाई साहिब भाई कन्हैया ने सब में एक देखा, सब को जल पिलाया और तुम देखते हो उसको क्या फल प्राप्त हुआ? उसको ज्ञान प्राप्त हुआ, वह बख्शा गया । गुरू दशम् पातशाह ने कृपा करके उसको यहां खड़ा किया। उसको अपना आप साक्षात करा दिया। वह गुरू रामदास जी ने गुरू अर्जुन देव जी कहते नाम मुझे दृढ़ करा दिया, साक्षात करा दिया, नाम नामी का अभेद है।

चिंता सगल विनासी ।

अब सारी चिंता समाप्त हो गई, कोई चिंता शेष नहीं रही है। परमेश्वर को कोई चिंता नहीं होती है? चिंता बुद्धि में होती है। यह सब कुछ बुद्धि में होता है।

*भरीऐ मति पापा के संगि ।।*
*ओहु धोपे नावै के रंगि ।।* (पृ० ४)

मैल बुद्धि तक ही जाती है। वह तो शुद्ध है, चेतन तो प्रकाशक है, वहां तो मैल है ही नहीं, वहां तो चिंताएं भी नष्ट हो गयी, सब पाप भी नष्ट हो गये।

करि किरपा अपुनो करि लीना ।

परमेश्वर ने कृपा करके गुरू अर्जुन देव जी कहते मुझे अपना बना लिया। अब मेरा स्वामी परमेश्वर हो गया। अब मुझे यह दृढ़ निश्चय हो गया।

राखा एकु हमारा सुआमी ।
सगल घटा का अतंरजामी ।।

वह जो सबके हृदय में अन्तर्यामी बैठा है, वह मेरा मालिक है। वह मेरे हृदय में भी बैठे, वह सबके हृदय में भी बैठे। वह व्यापक, परिपूर्ण, चित्त, चेतन है।

मनि वसिआ अविनासी ।

अब नाश रहित जो अविनासी पद था, चेतन, नाश से रहित, वह मेरे मन में प्रकट हो गया, साक्षात हो गया,अविनासी पद की प्राप्ति मुझे हो गई।अविनासी पद की प्राप्ति ही मोक्ष है, आपको अविनासीपक्का साक्षात हो जाना, इसकी मोक्ष हो गई। जब तक यह मन बुद्धि अन्य कहीं काम, क्रोध ा, लोभ, मोह, अहंकार में है, शब्द, स्पर्श, रूप, गंध, रस में है तब तक यह परमेश्वर के पास नहीं पहुँचा। यह अपनी परीक्षा आप ही करे, और किसी से न कराये। इसे आप ही पता लग जायेगा।

ता कऊ बिघनु न कोऊ लागे ।

अब कोई विघन, कोई पाप नहीं लगेगा उस ब्रह्मज्ञानी महापुरूष को ।

जो सतिगुर अपुनै राखै ।

जो सतगुरू ने अपने बना लिये, उसको जन्म-मृत्यु से बचा लिया । पापों से बचा लिया, वे उपकृत हुये।

*जा कउ अपुनी करै बखसीस ।*
*ता का लेखा न गनै जगदीश ।।* (पृ० २७७)

वह लिखित से मुक्त हो जाता है ।

*लेखा छोड़ि अलेखै छूटह ।*
*चरन कमल बसे रिद अंतरि ।।* (पृ० ७१३)

उस गुरू के चरण कमल मेरे हृदय में बसते हैं, गुरू रामदास महाराज के, जो उन्होंने शब्द दिया, मेरे हृदय में बसते उसने शब्दी प्रकट कर दिया, परमेश्वर प्रकट कर दिया । शब्द-शब्दी का अभेद होता है ।

*सूरति सबदि भवसागर तरीऐ ।*
*नानक नामु वखाणे ।।* (पृ० ६३८)

जब सुरति (ध्यान) अविनासी शब्द के साथ मिल गई तो फिर नाम का वखान किया और फिर उपकृत हुआ ।

अंमृित हरि रसु चाखे ।

वह जो अमर करने वाला हरि रस था, वह मैने चख लिया। गुरू अर्जुन देव जी कहते, मुझे प्राप्त हो गया, मैने पा लिया ।

करि सेवा सेवक प्रभ अपुने ।

कहते अपने प्रभु का सेवक बनकर अपने प्रभु की सेवा किया कर। परमेश्वर की उपासना किया कर, परमेश्वर का सिमरन किया कर और परमेश्वर समझकर सब की सेवा किया कर, वह कब होगी?

*बिसरि गई सभ ताति पराई ।*
*जब ते साध संगति मोहि पाई ।। रहाउ*
*ना को बैरी नहीं बिगाना ।*
*सगल संगि हम कउ बनि आई ।।१।।*
*जो प्रभ कीनो सो भल मानिओ ।*
*एह सुमति साधू ते पाई ।।२।।*
*सभ महि रवि रहिआ प्रभु एकै ।*
*पेखि पेखि नानक बिगसाई ।।३।।* (पृ० १२६६)

अब मुझे वह परमेश्वर प्राप्त हो गया 'ताति' नाम है 'ईर्ष्या' का । अब मेरी ईर्ष्या सब समाप्त हो गई। ईर्ष्या एक ऐसी बीमारी है यह जीव को बड़ा दुख देती है। इसलिये जीव बनाया ही इसी ने है अब यह समस्त ईर्ष्या नष्ट हो गई अब सुमति प्राप्त हो गई सर्वत्र परमेश्वर दृष्टिगोचर हो गया, अब मैं बड़ा प्रसन्न हूँ।

जिनि मन की इछ पुजाई ।

जिस परमेश्वर ने मन की समस्त इच्छायें पूर्ण कर दी। चार बातें ही गुरू रामदास जी कहकर गये थे इतिहास में -

१. अमृतसर तीर्थ सम्पूर्ण करना
२. तरनतारन तीर्थ निर्माण करना
३. गुरूग्रन्थ साहिब की कोड़ बांधनी (सम्पादन करना)
४. करतारपुर एक नगर बसाना।

वे चारों पूर्ण हो गये गुरू अर्जुन देव जी की इसलिये मेरी समस्त इच्छायें पूरी कर दी गुरू परमेश्वर ने -

नानक दास ताकै बलिहारै ।

गुरू अर्जुन देव महाराज कहते मैं उसके ऊपर बलिहारी जाता हूँ, परमेश्वर के ऊपर कुर्बान जाता हूँ जिसने मेरी कृपा करके बुद्धि शुद्ध की, ज्ञान की प्राप्ति हो गई, समस्त कार्य मेरे सम्पन्न हो गये।

जिनि पूरन पैज रखाई ।

जिसने मेरी पूर्ण इज्जत रखी । सारे विरोधी थे, जिसने ईर्ष्या करने वाले, फीके पड़ गये पृथिया आदि। लेकिन वह मेरी पूर्ण रक्षा, उस परमेश्वर ने की। मेरी इज्जत परमेश्वर ने रखी, मुझे अपना समझकर बचाया। उसने अपनी शरण आये की मेरी इज्जत रखीं पहले 'शरण' पद आया। शरण में इतनी शक्ति है बख्शा जाता है शरण में आकर जीव।

बोलो सत्नाम श्री वाहिगुरू ।

❑

१ ओंकार सतिगुरु प्रसादि।।

## 4

**सोरठि महला ५**

**अपना गुरू धिआए । मिलि कुसल सेती घरि आए ।।**
**नामै की वडिआई ।। तिसु कीमति कहणु न जाई ।।१।।**
**संतहु हरि हरि हरि आराधहु ।।**
**हरि आराधि सभो किछु पाईए कारज सगले साधहु ।।रहाउ।।**
**प्रेम भगति प्रभ लागी । सो पाए जिसु वड़भागी ।।**
**जन नानक नामु धिआइआ ।। तिनि सरब सुखा फल पाइआ ।।२।।**

(पृ० ६२७)

सारी संगत कृपा कपा, दया, मेहर करके बोलो सत्नाम श्री वाहिगुरू, सत्नाम श्री वाहिगुरू। शब्द आपने श्रवण किया ईश्वरीय वाणी का गुरू अर्जुन देव जी द्वारा आया। इसमें बात एक ही है, मुक्ति आराधन में ही है।

*दुनीआ सागरू दुतरू कहीऐ किउकरि पाईऐ पारो ।*
*चरपटु बोलै अउधू नानक देहु सचा बीचारो ।।* (पृ० ६३८)

गोरख को उसने कहा, जब सब ने प्रश्न कर लिये, सब हार चुके । मुझे भी एक प्रश्न की आज्ञा दो उसने कहा तुम भी कर लो। यह प्रश्न चरपट ने किया -

*दुनिआ सागरू दुतरूकहीऐ किउ करि पाईऐ पारो।*
*चरपटु बोलै अउधू नानक देहु सखा बीचारो।।* (पृ० ६३८)

हे अवधूत नानक! 'अवधूत' शुद्ध का नाम है। जिसका मन आदि की कोई शंका, विकार, अतंःकरण में न रहे, उसको अवधूत कहते हैं। आप अब मुझे सत्य विचार करो कि पार कैसे करें? यह संसार जो है एक सागर है, यह तो सागर है इससे पार होने का कोई उपाय बताओ।

*जैसे जल महि कमलु निरालमु मुरगाई नैसाणे ।*
*सुरति सबदि भवसागर तरीऐ नानक नामु बखाणे ।।* (पृ० ६३८)

यह उत्तर गुरू साहिब ने दिया उसने कहा ठीक हे, बिलकुल ठीक ! इसका अभिप्राय यह हे कि आराधन स्थिर हुई सुरति ने करना है।

*सुरति सबदि भवसागर तरीऐ ।।* (पृ० ६३८)

सुरति का स्थिर होना बड़ा कठिन है। यह काम आपका है गुरू तो शब्द है ।

*गुरू परमेश्वर ऐको जाणु ।।*
*जो तिसु भाव सो परवाणु ।।* (पृ० ८६४)

वह शब्द है कहीं शब्द को ब्रह्म कहा है और कहीं शब्द को कहा है। गुरू साहिब ने तो स्पष्ट ही लिखा है -

*सबदि गुरू सुरति धुनि चेला ।।* (पृ० ६४३)

तुम्हारी सुरति का ध्यान जो लग जाना है यह चेला (शिष्य) है, शब्द गुरू है।

*गुरू परमेसरू ऐको जाणु ।।* (पृ० ८६४)

जितने महापुरूष हुये सब ने यह कहा है गरीबदास ने अपने ग्रन्थ में लिखा है -

**सुरति निरतु का बाधउु बेडा, गगन मंडल को कूच है ।।**

नानक दास ने भी सुरति को कहा सुरति जब इसकी स्थिर होगी। यह बिना गुरू के नहीं हो सकती, गुरू भी पूर्ण होगा, परमेश्वर रूप होगा, तब सुरति स्थिर होगी। सुरति जब स्थिर हो गई तो इसका आराधन चल जायेगा फिर इसका नाम चल जायेगा। जब सुरति तुम्हारी अन्य स्थान पर हो तुम आप ही देखो यदि तुम्हारी इस ओर हो तो तम्हें नाम पाँच बार भी कोई दे दे तो चलेगा नहीं। क्यों? सुरति ने नाम के साथ जुड़ना है। शब्द के साथ सुरति ने एक हो जाना है।

**सुरति सबदि भवसागरु तरीऐ नानक नामु वखाणै।।**

गुरू साहिब कहते फिर उस नाम को छोड़ना नहीं औंर नामन तुमसे छूटे। फिर तुम्हारी शक्ति नहीं कि तुम नाम को छोड़ दो। ऐसी चीज किसी को प्राप्त हो जाये, वह छोड़ता है कभी ?

वह नाम सुरति के साथ जब स्थिर होगा शब्द गुरू है, शब्द परमेश्वर है लेकिन सुरति की लौ एक बार लग गई फिर आप नाम को छोड़ेगें नहीं।

फिर तो तुम्हें नामी प्राप्त हो जायेगा, नाम नामी तो एक हैं दो तो हैं नहीं।

*नाम संगि जिस का मनु मानिआ ।।*

*नानक तिनहि निरंजनु जानिआ ।।* (पृ० २८१)

अब तूने निराकार को जान लिया है, नाम के साथ मन जुड़ गया लेकिन सुरति जो है वह गुरू ने स्थिर करनी है। तुम्हारे सामने रागियों ने पढ़ा है, हे मेरे गुरूदेव! मुझे राम नाम का प्रकाश करो। लेकिन राम नाम पहले वे नहीं जानते थे, गुरू अर्जुन देव जी? लेकिन वे गुरू रामदास महाराज जी को कहते मुझे नाम का प्रकाश करो। 'प्रकाश' नाम होता है ज्ञान का। नाम के साथ मेरी लौ जुड़ जाये तो मैं कृत्य कृत्य हो जाऊंगा और -

*गुरमति नामु मेरा प्रान सखाई ।।* (पृ० १०)

गुरू की कृपा द्वारा जो नाम प्राप्त होता है वह मेरे प्राणों का सखा होता है। मेरा ही नहीं सब के प्राणों का सखा होता है। वह मित्र हो जाता है इसलिये मुक्ति भवसागर में से तैरने को, पहले सुरति स्थिर होगी। शब्द के साथ सुरति जुड़ेगी और फिर भवसागर से पार जाने में कोई कठिनाई नहीं होती। फिर ठीक है चल भाई -

**सोरठि महला ५**

सोरठ राग में पंचम पातशाह कथन करते हैं - वे साक्षात हरि हैं ।

***धरनि गगन नव खंड महि जोति सवरूपी रहिओ भरि ।***

***मनि मथुरा कछु भेदु नहीं गुर अरजुनु परतरव्य हरि ।।***

(पृ० १४०६)

वह रामदास जी ने ज्योति गुरू अर्जुन देव जी में रख दी वह ज्योति आई थी धुर से ।

***जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ ।***

***ता के अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ ।।*** (पृ० १४०८)

उस ज्योति स्वरूप ने गुरूनानक कहलाया । गुरू कहो अथवा परमेश्वर कहो।

***गुरु परमेसर एको जाणु ।।*** (पृ० ८६४)

गुरू परमेश्वर एक ही होता है इसलिये वह ज्योति अब गुरू अमर देव

जी ने गुरू रामदास में रखी, गुरू रामदास जी ने वही ज्योति गुरू अर्जुन देव जी में रख दी। इसलिये और बड़ा प्रमाण यही है सुखमनी साहिब में -

*संत संगि अंतरि प्रभु डीठा ।।*

*नाम प्रभु का लागा मीठा ।।* (पृ० २६३)

गुरू साहिब कहते हैं संत गुरू रामदास महाराज जी की संगति में अपने भीतर प्रभु के दर्शन किये। वे जो देखने वाले कहते हैं - मैंने अपने भीतर परमेश्वर देखा तो परमेश्वर कोई होगा ही वहाँ, अथवा साक्षी रूप बैठा होगा अथवा दाना-बीना के रूप मे बैठा होगा अथवा पारस रूप में बैठा होगा अथवा दृष्टा के रूप में बैठा होगा। जब इसका ध्यान दृष्टा के साथ क्षणमात्र भी एक हो जाये तो इसको शान्ति आ जायेगी। उस समय इसके भीतर शान्ति होगी। लेकिन इसकी वृत्ति स्थिर हो जाये। इसलिये भाई यह गुरू का शब्द है परमेश्वर की ओर से यह शब्द प्राप्त हुआ और गुरू को ही प्राप्त हुआ । अब चल -

**अपना गुरू धिआए ।**

मैंने अपने गुरू का ध्यान किया और तुम भी अपने गुरू का भाई ध्यान करो।

**गुरू परमेसर ऐको जाणु ।।**

गुरू परमेश्वर होता है।

**ब्रहम गिआनी कउ खोजहिं महेसुर ।**
**नानक ब्रहम गिआनी आपि परमेसुर ।।**
**ब्रहमगिआनी सभ स्त्रिसटि का करता ।**
**ब्रहमगिआनी सद जीवै नहीं मरता ।।**
**ब्रहमगिआनी का सगल अकारू ।**
**ब्रहमगिआनी आपि निरंकारू ।।**

वह तो निरंकार का रूप है। रूप नहीं निरंकार ही है। इसलिये मैं अपने गुरू का नाम लिया है। तुम भी अपने गुरू का नाम जपो फिर क्या होगा?

**मिलि कुसल सेती घरि आए ।**

जब गुरू को लिल पड़े तो फिर बड़ी कुशल आनंद के साथ अपने घर

में, अपने स्वरूप में, अपने अंतःकरण में आये। गुरू ग्रन्थ साहिब में लिखा है कि कृपा करके परमेश्वर ने मुझे बुला लिया पहले ही और साथ लिखेगें बुला नहीं लिया, वह परमेश्वर घर में ही बैठा था जिसने मुझे बुलाया पहले ही। वह अंतःकरण में नहीं था चेतन ? जो सब में व्यापक है,वह निराकार तुम्हारे अंतःकरण में नहीं? उसने अपनी कृपा के साथ इसका नाम है प्रेमाभक्ति, बड़ी कृपा की मुझे बुला लिया और वह घर पहले ही बैठा था। कृपा करके मुझे वहां पहुंचा दिया उसने, पर वह तो अंतःकरण में पहले ही बैठा था। वह तो अंतःकरण में देखने वाला, बुद्धि को देखने वाला, मन को देखने वाला, प्राणों का दृष्टा, वह तो पहले ही वहां बैठा था।इसलिये मैने देखा कि गुरू तो पहले ही घर है, जिसने मेरे ऊपर कृपा करके यह दिखाया, वह तो पहले ही बैठा था। इसलिये वह प्रत्यक्ष के साथ मुझे मिला दिया। तुम्हारे हृदय में परमेश्वर है, उसके हुक्म के साथ सब कार्य चलता है, लेकिन आपने देखा तो नहीं कभी । क्यों? यह आँखे उसे देख नहीं सकती, यह नेत्र नहीं उसे देख सकते। वह तो उसकी कृपा द्वारा ही तुम्हारी तदाकार वृत्ति होगी। फिर तुम्हें ज्ञान हो जायेगा। इसको समाप्ति कहते हैं। सभ की वहां बुद्धि ने सम हो जाना है।

**सभो ब्रह्म उच्चते**

सम जो है वह परमेश्वर है इसलिये वह गुरू के साथ मैं गया, गरू को मिलकर मैं अपने घर आनंद स्वरूप में आया। आनंद रूप होकर, स्वरूप बनकर मैने अपने अंतःकरण में उसका रूप हो गया। इसको कहते हैं प्रेमाभक्ति और ज्ञान भी यही है और वास्तविक प्रेमाभक्ति भी है चलें-

**नामै की वडिआई**

यह सब नाम का ही महत्व है, अन्य किसी का नहीं। नामी ने मिलना ही नाम के साथ है।

नाम कहो, शब्द कहो जो आपकी खुशी है कहो, लेकनि सुरत तो आपकी है, तुम्हारी सुरत ने स्थिर होना है स्थिर करना आप जानते नहीं, ब्रह्मज्ञानी के बिना स्थिर करना नहीं कोई जानता ।

***ब्रहमगिआनी ब्रहम का वेता ।*** (पृ० २७३)

अब तुम बताओ, महल वे गुरू के, रथ पर आरूढ़ होकर गये और गये

जिस बात के लिये वह तुम्हें पता ही है, साहिबजादे के लिये गयें उनको गुरू साहिब ने कहा, बाबा बुड्ढ़ाके पास जाओ, यदि तुम्हें इस वक्त चीज की जरूरत है। उन्होंने कहा वह कौन है? धूलि आती है?कहा जी गुरू के महल है। कहते उनको कहां की जल्दी थी। तीन वर्ष जाकर रहना पड़ा और फिर सायं को जाकर रात्रि को बात की, वे कहते ऐसे तो संतों के पास नहीं जाते, यह तो ढंग नहीं। तुम तो कुछ बनकर गये थे। संतों के पास कुछ बनकर तो नहीं जाते। जो बना हुआ है उसको गुरू के पास जाने की आवश्यकता ही नहीं। वह तो गुरू ही हुआं उन्होंने कहा फिर भाई जानते हो तुम सब काम वे करते हैं, वे गुरूनानक के बख्शे हुऐ हैं, बख्शे हुओं के पास अब जाओ। फिर उन्होने बताया कि भाई इस प्रकार दूध जमाना, ऐसे बिलोना इा प्रकार मिस्सी रोटियां पकाना, साथ प्याज लेने हैं। जाना भी पैदल लेकर नंगे पांव। वे गये,वे जब इतनी दूर ही थे वे कहते माता बिना पुत्र की भूख का तो किसी को पता नहीं होता। पुत्र की भूख का माता को ही पता होता तो उन्होंने कहा रख दो। उन्होंने रख दिया तो उसने मारा प्याज पर हाथ और कहते तुर्कों के सिर तुम्हारा साहिबजादा इस प्रकार तोड़ेगा। क्यो? वे पूर्ण थे, वे बख्शे भी थे पहली पातशाही के, वे बख्शे हुए थे। इसलिये जब तक तुम बख्शे हुऐ पास नहीं जाओगे तब तक तुम्हारी सुरत नहीं जुड़ेगी। यह कोई कहने की बात नहीं। यह जो गुरूवाणी है यह प्रत्यक्ष है, इसमें कोई कहने की बात नहीं, यह पुराण तो नहीं । पुराण में तो कथा आती है, बड़े पुरखों की कही हुई । यह कोई पुराण है ? यह तो प्रत्यक्ष है, सत्य का निचोड़ है। यहां आप हम सब बैठे हैं, तुम सच बताना, तुम्हारी सुरत कभी शब्द के साथ जुड़ी है? नहीं । यह तो ऐसा ही काम है। यह परमेश्वर की दया से गुरू की दया दोनो इक्ट्ठी होगी। कृपा से आपकी सुरत शब्द के साथ जुड़ेगी।

यह बगार तुम्हारे जिम्मे होगी। निश्चिंत हो जाओगे तो यह प्रतिदिन की झझंअ काटी जायेगी। इस प्रकार कैसे मिलें, क्या करें ? उसे कहो हो गया, शेष क्या रह गया ? वह तो

***सुरति सबदि भव सागर तरीऐ ।*** (पृ० ६३८)

गुरूनानक देव जी, गरीबदास जितने संत हुये हैं उन्होनें यहां आकर ही

सबने बात की है और राधास्वामी तो लेते ही इसको और शब्द सुरत को चाहे वे किस प्रकार भी लें । पहले तो उनका शब्द सुरत ही होता है। इसलिये भाई! में एक स्थान पर था, वे मेरे साथ बात करने लगे। मैनें यह बातें उनके साथ कर दी, वे कहते आप राधास्वामी हो? कहते यह सुरत शब्द तो राधास्वामियों के अतिरिक्त कोई जानता नहीं। आपने तो यह कह दिया। मैने कहा अरे मेने लिखा हुआ पढ़ा था मैं जानता-वानता कुछ नहीं। इसलिये भाई, सुरत जब आपकी स्थिर हो जायेगी शब्द के साथ, तो सब काम आपका हो जायेगा। लेकिन गुरू के साथ मिलकर, गुरू ने ही शब्द में इसकी सुरत को स्थिर करना है। फिर उसका समस्त कार्य हो जायेगा।

**नामै की वडिआई ।**

यह नाम का महत्व हैं जो सुरत ने शब्द के साथ जुड़कर फिर राम कहना, सत्‌नाम कहना, वाहिगुरू कहना, ओम जो आपकी खुशी है कह लो, उसमें भी कोई अन्तर नहीं आता, है तो वही अल्ला भी तो वही है।

***अलाह पाक पाक है सक करउ जे दूसर होइ ।***

(पृ० ७२७)

पहली पातशाही कहते काजी को अरे जो अल्लाह है यह जाति शनाति से रहित, शुद्ध हैं वे कहते जी अल्लाह तो ठीक है लेकिन शंका तो करो यदि अल्लाह से बिना दूसरा कोई हो। उसको अल्लाह अल्लाह कह दो उसको निरंकार कह दो, कोई ओम कह दे, कोई सत्‌नाम कह दे। उस सत्‌नाम का नाम ही सतिनाम है।

***जपि मन सतिनाम सदा सतिनामु ।***
***हलति पलति मुख अजल होई है ।***
***नित धिआईऐ हरि पुरखु निरंजना । रहाउ।*** (पृ० ६७०)

तुम निरंजन पुरूष का ध्यान करो क्योंकि स्थिर इसने करनी है सुरत। क्यों? अपनी सुरत को इसने कही न कहीं जोड़ना है इसलिये -

***सुरति सबदि भवसागर तरीऐ नानक नाम वखाणे।।*** (पृ० ६३८)

नाम ने ही तुक्त करना है, उस नाम की यह महत्ता हैं यह जो गुरू का मिलाप कर दिया और गुरू ने अंगद कर दिया, कृत्य कृत्य कर दिया, यह उस नाम की महत्ता है। वह जो नाम सुरत जोड़कर कहना एक बार

कह दिया है -

***एकं चित जिहि इक धिन धिआइउ ।***

***काल फास के बीच न आइउ ।*** (अकाल उस्तत)

एक बार का बहुत हे, वह बहरा तो है नहीं प्रभु, भाई आप बहुत करोगे तो उसको सुनेगा न, वहां आपकी सुरति स्थिर हो जानी है, फिर वह काम तो शब्द ने कर देना है, उसको गुरू कह लो, परमेश्वर कह लो, उसको सगुण ब्रह्म कह लो, जो आपकी खुशी है कह लो, नाम बहुत हैं।

**तिसु कीमति कहणु न जाई ।**

इस नाम का मूल्य कोई कह नहीं सकता। गुरू साहिब कहते हम भी नहीं कह सकते। यह जो नाम है, सुरत जोड़कर इसका महत्व हम नहीं कह सकतें यह अमूल्य है। इसने आपको वहां पहुंचाना भी है।

***नामु संगी सो मनि न बसाइओ।***

***छोड़ि जाहि वाहू चितु लाइओ।।*** (पृ० ७१५)

जो वस्तुऐं छोड़कर जाना था सारा कुछ इसने चित में रखा और 'नामु संगी सो मनि न बसाइउ' नाम ने संगी होकर नामी को मिलाना था, उसके साथ आपका मन नहीं जुड़ा इसलिये -

***सुरति सबदि भवसागर तरीऐ नानक नाम वखाणै।*** (पृ० ६३८)

उस नाम को छोड़ना नहीं और न तुम छोड़ो। ये जिसका भी स्थिर हो गया, कबीर का हो गया, रविदास का हो गया, ध्ना का हो गया, उन्होंने छोड़ा नहीं। वह सोया पड़ा भी नहीं छोड़ सकता। उसकी शक्ति ही नहीं छोड़ने की। फिर उसका रहा ही न कुछ। उसका जो अहंकार था, वह तो गया-आया, वह तो जो कुछ था वही हो गया। इस करके भाई यह उस नाम की महत्ता है, कुछ कहो। कहते इसका कोई मूल्य नहीं। कीमत तो आत्म वस्तु की होती है तो फिर उसकी तुलना का कोई हो तो होती है। उसकी कीमत तुम क्या लगाओगे, जब परमेश्वर के बराबर का कोई है नहीं अथवा दो निराकार हैं एक निरंकारियों का निराकार है, एक तुम्हारा। वह जो निरंकारियों का निराकार है, वही हमारा है और जो हमारा निराकार है वही निरंकारियों का है और तो कुछ है नहीं, इसलिये भाई इसकी कीमत नहीं कही जा सकती बिना ब्रह्मज्ञानी से चलिये -

**संतहु हरि हरि हरि आराधहु ।**

संतों जो सब को हरे करने वाला, सर्वव्यापक है उसकी आराधना करो संतों। यह जो सम्बोधन है संतों को है। गुरू साहिब कहते जो सब जगह है, व्यापक है, हरे भरे संसार को करने वाला है उसकी आराधना करे। वह तुम आराधना सुरत के साथ कर सकते हो, और तो आपके पास कोई चीज नहीं आराधन की, अथवा तुम बताओ और कोई चीज है ? किसी के पास भी नहीं है। उसका आराधन से जब तुम्हारी सुरत जुड़ जायेगी तब होगा। उस परमेश्वर की आराधना करो।

**हरि आराधि सभ किछु पाईऐ ।**

यदि आपने हरि की आराधना कर ली सब कुछ पा लिया। शेष कुछ नहीं और बाकी कोई चीज ही नहीं रहती, जब परमेश्वर की आराधना हो जाये और बताओ कौन सी बात है? अथवा कोई दो निराकार हों तो भी आप कह सकते हो, वह तो एक है, वहां है एक - गोराया, वह कलाम बहुत पढ़ता और सुनाता बड़ा एस.डी.ओ. हैं उसके पास कई टीकायें हैं कुरान की, वह बहुत सुनाता है। उसमें एक बात आ गयी कुरान में, मुहम्मद की, कहता वह जो भीतर देखता वह खुदा है। मैने कहा कोई अन्तर तो पड़ा नही, जो भीतर देखने वाला और जानने वाला वही खुदा है और तो खुदा है नहीं और मैने कहा बात तो इसको भी वही कहनी पड़ी कुरान वाले को और तो कुछ नहीं रहा ।

यह बात भाई सिक्खों को, हिन्दुओं को, सब को कहनी पड़ीं जब आपने उसकी आराधना कर ली और बाकी तो कुछ नहीं। आप भूल गयें लेकिन यह है सीधा मार्ग। एक होती है कच्ची चाँदमारी वह किसी किसी समय काम दे जाती है लेकिन पक्का नहीं। कभी इधर कभी उधर। वह पक्की चाँदमारी जो सोलह आने हो, वही है। इसलिये जब आप उस शब्द के साथ एक होंगे, आपकी सुरत जुड़ गई, जो आप नाम कहोगे वह नामी को मिला देगा। देखने वाला भी वहीहै अन्य तो कोई है नहीं वही सत् है, निरंकार वही परमेश्वर है।

**कारज सगले साधहु ।। रहाउ।।**

सारे कारज सिद्ध कर लो। सारे कार्य भाई सिद्ध हो जायेंगे जब तुम

उसकी आराधना कर लोगे। तुम्हारे समस्त कार्य सिद्ध हो जायेंगे। लेकिन यह कृपा की बात है। ईश्वर की कृपा से ईश्वर प्राप्त होता है, परमेश्वर की कृपा से परमेश्वर प्राप्त होता है। हालांकि गुरू तो एक ही है, ज्योति तो एक ही हैं सबका गुरू एक ही होता है, परमेश्वर की ज्योति तो एक ही है। लेकिन वह गुरू भी तो गुरू की कृपा से प्राप्त होता हें बख्शा हुआ जो होगा उसके तुल्य कोई नहीं। यह तो आप सब को पता है कि कथा भी करते हैं वह जब ''बुद्धू के आवे'' की अरदास करने लगे, पंचम पातशाह करवाते हैं सिक्ख से वह कहता पँका। वह बाहर खड़ा कहता कच्चा, कच्चा, कच्चा। बाहर खड़ा वह कहता था मुझे भीतर गुरू के दर्शन कर लेने दो। वह जो बाहर दरवाजे पर खड़ा था सिक्ख वह समझता था कि मैले वस्त्रों वाला क्यों जाये भीतर। इसके वस्त्र तो फटे और मैले हैं। वह कहता जीयह क्या हुआ ? कहते जो होना था सो हो गया। ये कहते, यह क्या बात ? कहते वे गुरू रामदास बोले हैं, वह गुरू रामदास का अनन्य शिष्य हैं वह गुरू रामदास बोले हैं, हम हटा सकते हैं ? हमारे तो गुरू हैं। शीघ्र करो, उसको भीतर लाओ। भीतर क्यों नहीं था आने दिया ? कहते जी वस्त्र मैले हैं, फटे हुये हैं संगत श्रेष्ठ बैठी है, अच्छा नही लगेगां उन्होंने कहा -न । वही बात गुरू साहिब ने कहा यह तो कह दिया कि पक्कों के भाव बिकेगा लेकिन पक्का नहीं और बिका भी पक्कों के भाव ही, आपने इतिहास पढ़ा होगा सारा।

इसलिये भाई जब तक इसकी सुरत स्थिर नहीं होती उसकी सुरत गुरू रामदास जी ने स्थिर की हुई थी, वह आप तो नही बोला वहां सुरत स्थिर भी वहां से बोला। इसलिये समस्त कार्य सिद्ध हो जायेंगे लेकिन यदि तुम यह कार्य करोगे। आराधना करोगे परमेश्वर की। आराधना का एक ही अर्थ है 'एक रस' जैसे तेल की धारा बहती है उसमें अन्तर नही कभी पड़ता। वह एक स्थान पर ही बहती रहती है। आराधन उस वृत्ति का नाम है, वह वृत्ति कभी इधर उधर न जाये। समझ गये, यह बात है भाई अब पढ़ -

**हरि आरध सबो किछ पाइऐ ।**

यदि हरि की आराधना करोगे तो सब कुछपा लोगे। कुछ बाकी नहीं रहेगा ।

**कारज सगले साधहु ।रहाउ।।**

सारे कार्य भाई आपके सिद्ध हो जायेंगे कोई आपका बाकी नहीं रहेगा। लेकिन तुम्हारी आराधना चल जाये। वह शब्द, सुरत जहां जुड़ी है शब्द के साथ वह एक रस चल जाये। वे हटेगी नहीं।

**प्रेम भगति प्रभ लागी ।।**

प्रेमाभक्ति परमेश्वर के साथ जुड़ गयीं आराधना का अर्थ है, प्रेमाभक्ति का बढ़ जाना।

***प्रेम भगति एधरहि से नानक***
***करि किरपा संतु आदि करिओ है ।।*** (पृ० १३८८)

संत तो प्रेमाभक्ति द्वारा ही बनता है अथवा अन्य हो तो मुझे बताओ, स्थान कि फलाँ संत बन गया ? जब इसकी प्रेम के साथ वृत्ति जुड़ गई तो संत बन जायेगा। फिर संत में यह शक्ति आ जाती है।

***संत संगि अंतरि प्रभु डीठा ।।***
***नामु प्रभु का लागा मीठा ।।*** (पृ० २८३)

उसने अपने भीतर देखकर और दूसरे को दर्शन करा दिया परमेश्वर। इसका के भाई यह बात करनी है।

**सो पाए जिस वडभागी ।।**

जिस का सौभाग्य होगा उसको पायेगा। आराधना उसे प्राप्त होगी जिसके बड़े भाग्य होंगे, उसकी वृत्ति भाई वहां जुड़गी और बड़ा वहां लिखा है तुलसीदास ने -

***पुन्य पुंज बिनु मिलहिं न संता ।***
***सत संगति संसृति कर अंता ।।***

(रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड ४५, ६)

वे तुलसीदास को कहते, जी संत कैसे मिलेगा ?

**पुन्य पुंज बिनु मिलहिं न संता ।**

जब तक पुण्यों का समूह नहीं इक्ट्ठा होता, तब तक संत की प्राप्ति नहीं होती। वे कहते जो संत मिले तो क्या होगा ?

***पुन्य पुंज बिनु मिलहिं न संता ।***
***सत संगति संसृति कर अंता ।*** (मानस ७, ४५, ६)

उस संत के संग के साथ तेरे संसार का अंत हो जायेगा। तेरा जन्म-मरण कट जायेगां तुलसीदास जी ने लिखा है इसलिये जो बड़े पुण्य वाला बड़ा भाग्यशाली है, वह प्रेमाभक्ति द्वारा संत बन जायेगा और संत फिर इसका आपा के दर्शन करा देगा। यह तो सिद्ध बात है, आप भी बनकर देख लो।

**जन नानक नामु धिआइआ ।**

जितने भी लोग हैं, दास हैं, जिन्होंने भी नाम का जाप किया है, किसी ने भी जपा, यह एक ही शब्द हे सारे गंरू ग्रन्थ साहिब में वहां कुछ नहीं होता। वह में चला गया वहां हजूर साहिब , जत्थेदार समीप रहता था। वह कथा करता था, वहां हजूर साहिब। वे मेरे पास आये कहते कथा करो और जाती बार कह गये भाई मोटर भेजेगें। मुझे पता था कि पैसे तसे मेरे पास हैं नहीं, में पैदल भी तो जाऊँगा, मेने कहा अच्छा भेज देना। मैं गया, कहते जी कथा करो और जब मैं बैठा ताबिया गुरू ग्रन्थ साहिब की तो एक निहंग आ गया। वह कहता अरे हमारी गद्दी पर भगवा वस्त्र धारी ? उसने पहले ही पकड़ लिया जत्थेदार ने उसको। मैने सुन तो लिया सब। जत्थेदार पकड़कर उसे वहां ले गया। मैं वहीं शब्द लिया।

***उपदेसु चहु वरना को साझा ।*** (पृ० ७४८)

अब मैने सारे शब्द का अर्थ किया कि भाई यह तो सब की सांझी है वाणी। जिस दिन निहंगों की वाणी होगी कभी नहीं बैठेगें, समीप भी नहीं आयेंगे। वह जब मैं कथा कर के हटा उसेको जत्थे दार लाया, कहता अब बता। वह कहता मुझे क्या पता था, साधु इतना पढ़ा हुआ है। फिर मेरे पास बैठे रहे। मैने कहा क्या कहा है गुरूओं ने, सांझी नहीं वाणी ? चार वर्णों के लिये सांझी नहीं ? कहता जी भ्रम हो गया। यह वस्त्रों का भी भ्रम हो गया। मेने कहा भ्रम ही है और तो कुछ नहीं है ! इसलिये भ्रम ही है भाई। वह परमेश्वर सबका सांझा है। यह वाणी परमेश्वर की है, सह भी सबकी सामूहिक हें परमेश्वर की नदी चलती है, कोई स्नान करले, कोई पानी पीले, कोई धो ले, नदी ने कुछ नहीं कहना। जो भी परमेश्वर की सांझी चीजें हैं - यह पृथ्वी सांझी है, सब बैठे हैं किसी को कहती है कि तुम उठकर चले जाओ ? यह परमेश्वर की सांझी चीज है। वह उपदेस भी

चारों वर्णों का सांझा है मैने कहा। वह कहता जी बात तो ठीक कही । मुझे बाद में पता लगा जब आपने कही, मैने कहा- मेने भी जानबूझकर कही थी। इसलिये भाई सबका परमेश्वर एक है, दो तो है नहीं। गुरू साकबि ने भी 'एक' ही लिखा है :-

*एकम एकंकारू निराला ।*
*अमरू अजोनी जाति न जाला ।*
*अगम अगोचर रूपु न रेखिआ ।*
*खोजत खोजत घटि घटि देखिआ ।।* (पृ० ८३८)

गुरू साहिब कहते सब के हृदयों में प्रतिष्ठित हैं गुरू साहिब पहली पातशाही का यह अर्थ किया हुआ है बिलावल राग में हमने देखा है वह 'एक' सब के हृदयों में बैठा देखा है। भाई कन्हैया को भी वही दृष्टिगोचर हुआ उसने पानी पिलाया सबको।

❑

१ ओंकार सतिगुरु प्रसादि।।

## 5

**भूलिओ मनु माइआ उरझाइओ ।**
**जो जो करम कीओ लालच लगि ।**
**तिह तिह आपु बंधाइओ ।।१।। रहाउ।।**
**समझ न परी बिखै रस रचिओ**
**जसु हरि को बिसराइओ ।**
**संगि सुआमी सो जानिओ नाहिन**
**बनु खोजत कउ धाइओ ।।१।।**
**रतनु रामु घट ही के भीतरी**
**ताको गिआनु न पाइओ ।**
**जन नानक भगवंत भजन बिनु**
**बिरथा जनमु गवाइओ ।।** (पृ० २०२)

---

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सत्नाम श्री वाहिगुरू, सत्नाम श्री वाहिगुरू ।

**जैतसरा महला ६ १ ओंकार सतिगुर प्रसादि ।**

जैतसरा राग में नौवे पातशाह गुरू तेग बहादुर महाराज कथन करते हैं -

***तिलक जंझु राखा प्रभ ताका ।***
***कीनो बड़ो कलू महि साका ।***
***साधनि हेति इती जिनो करी ।***
***सीसु दिया पर सो न उचरी ।*** (वचित्र नाटक)

श्री गुरू तेग बहादुर महाराज 'हिदी दी चादर' इनको इसलिये कहते हैं इन्होंने हिन्द के धर्म की रक्षा की । धर्म बिना अवतार के कोई नहीं रख सकता। कारक भी नही रख सकता। ये गुरू अवतार थे। गुरूओं का यही वास्तविक धर्म है, धर्म की रक्षा करना, क्यों ? गुरूओं जो हुये इसलिये उन्होंने धर्म की रक्षा की।

**साधनि हेति इती जिनि करी ।**

धर्मी लोंगों के लिये उन्होंने शरीर अर्पित कर दिया। मेरे सत्गुरू जाते थे बाने बकाले। मैं उनको मत्था टेकने के लिये गया। मैं भी बैठ गया । उसमें भाई काहन सिंह नामे वाले और भाई अर्जुन सिंह बागड़ियां वाले, एक मोटर उनकी थी और एक मोटर महाराज जी की थी। जब वहां जाकर देखा मुझे काहन सिंह कहता माप कर तो देख जितनी गुफा चाहिये उतनी है कि कम या अधिक है। मैने कहा ठीक है। वह कहता इतनी गुफा में ही व्यक्ति तप कर सकता है अधिक लेट भी नहीं सकता इसलिये उन्होंने बड़ा भारी तप किया। उस तप की मर्यादा का पूरा काम किया, धर्म की रक्षा की तिलक जनेऊ की रक्षा किसी अन्य से तो न हुई, उनको ही करनी पड़ी। उस गुरू साहिब का यह शब्द है चलिये -

**१ ओंकार सतिगुर प्रसादि**

एक जो परमेश्वर है, वह सत्गुरू की कृपा से ही प्राप्त होता है अन्य कोई उपाय नहीं।

***भाई रे गुर बिनु गिआनु न होइ ।***
***पूछहु ब्रह्ममें नारदै बेद बिआसै कोइ ।।*** (पृ० ५६)

आप उनको जाकर पूछ लो यदि तुम्हें शंका है। पूर्ण गुरू बिना ज्ञान नहीं होता, ज्ञान बिना मोक्ष नहीं होती है।

**भूलिओ मनु माइिआ उरझाइिउ ।।**

यह मन भूल गया, उलझ गया। क्या उलझ गया ? अविद्या वृत्ति होती है एक, एक विद्या वृत्ति होती है। अविद्या वृत्ति यह होती है भाई वृत्ति और वृत्ति का साक्षी जो चेतन है, उनको वह दो नहीं जानता। यदि वह दो जानले तो वृत्ति तो जड़ है, यह चेतन है, जड़ चेतन का सम्बन्ध ही नहीं है आपस में। इसकी भूल ने एक ऐसी भूल डाल दी कि यह भूलता ही चला गया। वह जड़ चेतन की भूल ऐसी पड़ी कि इसको यह न पता लगा कि मैं चेतन साक्षी हूँ । वृत्ति दृश्य है, चाहे रजो, सतो, तपो किसी की भी हो, है तो गुणों की प्रकृति की है। यह प्रकृति जड़ हैं मैं चेतन हूँ, कोई सम्बन्ध नहीं।

***असंगों हि पुरूषा असंगो ही सज्जयते।*** (उपनिषद)

असंग है पुरूष, निराकार असंग है, न ही कभी सम्बन्ध वाला हुआ अब तक। ये दो ही सुरतियां हैं इसलिये इन को पता न लगा। जड़ चेतन का जो भेद करना था, वह इससे भेद न हुआ। ये उसकी जो इन्द्रियां थी, मन बुद्धि थी वे विषयों से मिल गई और इसको स्वयं भी न पता लगा कि मैं कौन हूँ। इसने मिला सा ही समझ लिया लेकिन मिला तो है नहीं लेकिन मिला जैसा हो गया इसका नाम अविद्या वृत्ति है भूल गया और जब इसको कोई सत्संग प्राप्त हो गया तो इसको विवेक हो जायेगा। एक कबीर पंथी हमारे साथ था। एक घंटा वह दृष्टा, दृश्य ऊपर लगाता था। अलग करने में विवेक करता था। उसको मैने कहा तुम इन के साथ कोई बात करो। वह करने लगा वे क्रोधित हो गये। वह कहता में नहीं आपके साथ बात करता। वे कहते क्यों? कहता तुम्हें विवेक नही, जिसको विवेक न हो उसको उपदेश देना बात करना गलत होता है या तो पहले विवेक हो। विवेक क्या होता है ? वह जड़ चेतन को भिन्न मानता है। मैं चेतन साक्षी सब की वृत्तियों का साक्षी, दृष्टा हैं जितनी भी वृत्तियां, जितने भी विचार, जितनी भी इच्छायें वासनायें सब साक्षी के आगे से निकलती है। तुम अपने भीतर भी देख लो, एक देखता भी जायेगा। वे निकल भी जायेंगे। यदि थोड़ी देर के लिये वह नाम के साथ जुड़ेगा फिर उसको भगाकर ले जायेगा। क्यों ? वह नाम की ओर चला रहा हैं। दूसरा विचार आया इधर ले गया। फिर उसने मन को रोका, फिर विचार को रोकने लगा, फिर दूसरा विचार आ गया, फिर तीसरा विचार आ गया, वह इधर ही चल पड़ा। इसलिये जब इसको जडत्र और चेतन का विवेक हो जायेगा कि मैं चेतन हूँ, साक्षी हूँ, समस्त वृत्तियों का दृष्टा हूँ, पारस हूँ फिर इसको कभी यह भी आ जायेगा। मैं व्यापक भी हूँ इसलिये जब इसको यह समझ आयेगी, जब इसको यह विवेक होगा कि जड़, जड़ ही है और चेतन, चेतन ही है। दृष्टा, दृष्टा ही रहेगा। दृश्य, दृश्य ही रहेगा। सत्, सत् ही रहेगा। असत्, असत् ही रहेगा। ये फिर मिल नहीं सकते। लेकिन विवेक भी तो एक वृत्ति है। अविद्या भी वृत्ति, भूल जिसको भूल कहते हैं क्यों ?

**भूलिओ मन माइिया उरझाइिउ ।।**

है न। यदि भूला तो माया ने उलझाया। भ्रमित करने वाली भी इसके

मन को माया ही है। इस लिये जब इसको जड़ चेतन का पता लग गया तो वह भी तो एक वृत्ति है। इसको यह पता लग गया कि जड़ मिथ्या है, चेतन सत् है। चेतन ज्ञान है, यह अज्ञान हैं वह नित्य है, यह अनित्य है। इसको सारा निर्माण हो गया विवेक हो जायेगा। लेकिन विवेक भी तो एक वृत्ति है, अविद्या भी एक वृत्ति है। उस विवेक वृत्ति ने अविद्या वृत्ति का नाश करना हैं लेकिन वह जो विद्या वृत्ति है, वह जो चेतन है।वह विद्या वृत्ति वाला विद्यमान तो यह आप ही है। विद्या वृत्ति में बैठा विद्या वृत्ति को देखने जानने वाला दृष्टा यह आप ही है। आप ही निराकार है, असंग है, निर्विकार हैं निर्विकार एक चेतन ही है और संसार की कोई निर्विकार वस्तु तुम्हें नहीं मिलेगी। क्यों ? जड़ वस्तुयें हैं सब इसलिये वह निर्विकार हे, यह प्रकृति है। प्रकृति जड़ है इसलिये उस वृत्ति वाला विद्यमान यह चेतन है जब अपने आपका इसको ज्ञान हो गया, वह नित्य अपरोक्ष है, कभी वह ढका नहीं गया वह छिपा नहीं।

**दाना बीना साई मैंडा**
**नानक सार न जाणा तेरी ।।**

वह दाना बीना साई मालिक है। वह स्वामी आप ही सब के भीतर साक्षी रूप में विद्यमान है। वह है विद्यमान, वह है चेतन। यहां आकर इसका भ्रम दूर हो गया अब पढ़ भाई

**भूलिओ मन माइिया उुरणईउु ।।**

माया ने इस मन को भ्रमित करके उलझा लिया इसको यही पता न लगा कि मैं कौन हूँ और मिथ्या कौन है, सत् कौन है, असत् कौन है, वास्तविक कौन है, कृत्रिम कौन है, नित्य कौन है, अनित्य कौन है। इस माया में इसका मन उलझ गया। मन भी तो एक वृत्ति है इसकी वृत्ति क्यों उलझ गयी आगे चलो -

**जो जो करम किओ लालच लगि ।**

जो भी इसने सकाम कर्म किया लालच के लिये किया

**जो जो करम किओ लालच लगि**
**तिह तिह आपु बंधाइिओ ।।१।। रहाउ।।**

उसमें यह स्वयं बंध गया गुरू साहिब ने स्पष्ट लिखा है -

**करमा उपर निबड़ै जे लोचै सब कोई ।।**

निर्णय कर्मों पर चाहे कोई कुछ कहे इसके कर्मों पर इसका निर्णय होना है ।

***जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु ।।*** (पृ० १३४)

यह तो कर्मों का क्षेत्र है कर्म दो प्रकार के लिखे हैं। एक विधि और एक निषिद्ध। वे विधि चार प्रकार के लिखे है।

१. नित्य २. निमित्र ३. प्रायश्चित ४. काम्य (कामना सहित) जो भी कामना करके कर्म करेगा उसका भोक्ता उसको बनना पड़ेगा। इसको ज्ञान नहीं होगा वे प्रतिबंधक हैं कर्म। कर्मों की निवृत्ति पर ज्ञान होता है। उस ज्ञान ने कर्मों की निवृत्ति करनी है। ज्ञान ने कर्मों को भस्म करना है। इसलिये जो जो भी इसने कर्म किये कामना करके किये लेकिन सब से वास्तविक कर्म तो एक ही था, कौन? निष्काम कर्म, निष्काम सेवा।

***सेवा करत होइ निहकामी ।।***
***तिसु कउ होत परापति सुआमी ।।*** (पृ० २८६)

इसने जितने भी सेवा के कर्म किये निष्काम कर्म किये कामना रखकर तो कोई नहीं किया तो फिर इसको पकड़े कौन ? इसको बांधें कौन ? कर्म तो भाई कन्हैया ने भी किया। युद्ध में पानी पिलाया, बहुत देर तक पिलाया, जब तक वहां निवास किया लेकिन उसको कर्म ने बाँधा नहीं । उसने ईश्वर की, गुरू की सेवा की, उसने अन्य किसी की सेवा नहीं की। कर्म कैसे उसको बांधते ? यदि उसका कर्म कामना करके सकाम कर्म होता तो वह बंध जाता जन्म-मरण में। निष्काम कर्म करके वह जन्म-मरण में नहीं बंधा। निष्काम कर्म करो, ईश्वर अप्रण कर्म करो, गुरू अर्पण कर्म करो।

**समझ न परी बिखै रस रचिओ ।**

जब विषयों में इसकी वृत्ति रच गई इसकी इन्द्रियां भी विषय-विशेष हुई, इसकी मन बुद्धि भी विषय-विशेष हुई, इसको यह समझ नहीं पड़ी मैं कौन हूँ ? यह तो चेतन था, यह तो निराकार था। निराकार आज तक बंध ाा तो है ही नहीं कभी । भ्रम हो जाता है। इसलिये उन विषयों के रस को इसने सच्चा मन लिया। इसलिये इसको समझ न पड़ी ।

**समझि परी तउ बिसरिओ गाबनु ।।**

कबीर सब कुछ कहके अन्त में कहता है

***कथनी बदनी कहनु कहावनु***

***समझ परी तउ बिसरिओ गाबनु ।।*** (पृ० ४७२)

जब इसको समझ पड़ गयी तो इसका भाई वह जो गौण था, व्यर्थ, मिथ्या ज्ञान वह निवृत्र हो गया। लेकिन वह यर्थाथ ज्ञान और मिथ्या ज्ञान निवृत्र होगा। जब इसको यह पता लगा -

***नहिं दृष्टा दृष्टि न लिप्यते।*** (उपनिषद)

दृष्टा की दृष्टि कभी लृप्त नहीं हुई।इस पर तुम विचार करना। वह कौन है? इसकी वृत्तियाँ कितनी बदली हैं दिन में ।

लेकिन जो वह दृष्टि 'चेतन' देखने वाली है, वह सब का निर्णय कर जाती है कि पहले मेरा यह संकप था, फिर मेरा यह संकल्प था, फिर मैने संकप किया ही नहीं। उन सबका प्रकाशक, चेतन, साक्षी, आत्मा, दृष्टा वह कभी नहीं बदलेगा।

**नहिं दृष्टा द्ष्टि लिप्यते ।**

वह दृष्टा की दृष्टि कभी लुप्त नहीं होती । न लिप्यते ।

कभी लुप्त नहीं होगीं लेकिन उसकी तलाश नहीं की इसने। वह इसका जो द्रष्टा था न, साक्षी चेतन, उसकी तलाया नहीं की इसने। यह तो वह जो बाह्य वृत्तियां थी, उनके साथ ही जुड़ा रहा। कभी हँसने लग गया, कभी रोने लग गया, कभी शोक करने लगा । वह जैसी वृत्ति उठी, वैसा ही यह हो गया। यह बाह्य वृत्ति है लेकिन इसके भीतर वह वृत्ति भी थी जो समस्त वृत्तियों को देखने वाली थी, सारे विचारों को देखने वाली थी। वह तो चेतन दृष्टि थी, वह तो द्रष्टा की दृष्टि थी।

***तदा द्रष्टा स्वरूपे अवस्थाने।*** (उपनिषद)

पतंजलि ने जाकर बाद में कहा 'अरे तू स्वरूप में स्थित हो जा। तुम द्रष्टा हो न ! जो है न दृष्टि तुम्हारी नित्य, सत्, चेतन उसमें लोप हो जा, तुम उसमें स्थित हो जाओ, तेरे समस्त दुःख नष्ट हो जायेंगे। इसलिये वह दृष्टि इसको न प्राप्त हुई। बाह्य दृष्टियों पर रहा। जिन बाह्य दृष्टियां हैं वे इसकी वृत्ति को अवश्य आकर्षित करके ले जायेंगी। जब यह मन का

द्रष्टा होगा, इसको आकर्षित कौन करेगा ? द्रष्टा का द्रष्टा कोई नहीं है। नियम है यह एक समस्त ग्रन्थों का। तेरा द्रष्टा तुम हो, चेतन, देखने वाले तुम ही हो।

*मुई सुरति बादु अहंकारू ।*
*ओहु न मूआ जो देखनहारू ।।*
*पड़ि पड़ि पंडितु बादु बखाणै ।*
*भीतरि होदी बसतु न जाणै ।।* (पृ० १५२)

वह कहता तुझे वह आत्म वस्तु, आत्म दृष्टि मिली नहीं वह पंडित कहता जी आप नहीं फिर मरेंगे ? वह कहता –

**हउ न मूआ मेरी मुई बलाइ।**

वह मेरी अविद्या रूपी बला मर गई। विवेक वृत्ति द्वारा आपके स्वरूप को समझ लिया, जान लिया मेरा जन्म मरण किस प्रकार होगा ?

*हउ न मूआ मेरी मुई बलाइ ।।*
*ओहु न मूआ जो रहिआ समाइ ।।* (पृ० १५२)

वह जो सर्वत्र व्यापक है, वह कभी जन्म-मरण वाला है ? वह कहां जन्मे-मरेगा ? वह तो व्यापक है, द्रष्टा तो व्यापक हे। इसलिये द्रष्टा का द्रष्टा कोई नहीं, साक्षी का साक्षी कोई नही। इसलिये इसको वह पता लग गया। यह कर्मो में फंस गया सकाम कर्मों में और जन्म-मरण में जा पड़ा। यदि पहले ही यह निष्काम से चलता इसके फँसने का मतलब ही कोई नहीं था। परा पहले यह निष्काम में चल ही नहीं सका। इसको बहुत चीजों के संस्कार थे, देखने जानने थें इसलिये यह फँस गया। यह गया तो था हरा घास चरने, लेकिन पकड़ लिया वहां मालिक ने । अब क्या करे ? इसलिये यह भूला हुआ था तो यह भूल कर माया में उलझ गया और सकाम कर्मों में पड़ गया। पहले सकाम कर्मों को गुरू साहिब ने गुरू ग्रन्थ साहिब में कही आज्ञा नही दी। दृढ़ योग की भी कही आज्ञा नहीं दी और जो कार्य हैं उनकी भी कहीं आज्ञा नहीं दी। यही कहा –

*सिमरि सिमरि नामु बारंबार ।।*
*नानक जीअ का इहै अधार ।।* (पृ० २६५)

तुम सिमरन न बंद करना परमेश्वर का, सिमरन में जब परमेश्वर का ही

सिमरन होगा परमेश्वर का ही ध्यान होगा तो इसको कोई पकड़ नहीं सकता। न ही कोई पकड़ने वाला है इसको। इसलिसे यह सीधे रास्ते आ जाये। यह माया में उलण गया सकाम कर्मों में फँसा हुआ, फिर यह जन्म मरण में चला गया । इसको समझ नही पड़ी इस बात की अब पढ़ भाई –

**जसु हरि को बिसराउओ ।।**

तुम ने एक ही कार्य करना था परमेश्वर का यश, सिमरन नाम का, लेकिन तुझे भूल गया, तुम भगवान को भूल गये जो याद रखने वाला हर समय तेरे साथ था, जिस की सत्ता से तुम विश्व को याद करते हो, वह तुम्हें भूल गया ।

***सबना जीआ का इकु दाता सो मैं बिसरि न जाई।।*** (पृ० २)

वह जो सब जीवों का एक दाता है उसको कभी भूलना नहीं। गुरू साहिब कहते तुम उसको भूल गये, भुला दिया तो तू यहां फँसा ।

**संगि सुआमी सो जानिओ नाहीं।**

तुम यह बात देखो, जो नित्य दृष्टि है, वह चुतन तुम्हारे भीतर सब को देखता है। साक्षी, वह द्रष्टा सब को देखता है, सबको जानता है। वह दाना बीना साई मैंड़ा जो है वह सब को देखने वाला सबको जानने वाला लेकिन सत्ता स्फूर्ति भी तो वही देता है। इस समस्त संसार को बनाना, इसको चलाना, पालना और नष्ट करना ये तीनों काम उसने किसी को दिये नहीं। न उत्पत्ति दी है, न पालना दी है। उसका अंत पर आकर जब श्वास पूरा हो उसकी बदली करनी अथवा मोक्ष देनी यह भी उसके हाथ में है सब। यह किसी के हाथ में नहीं है। उसको याद रखना हर समय बस। उसको भूल गया वह हरि का यश, भाई यह जीव भूल गया। नौवें पातशाह कहते –

**बनु खोजन को धाइओ ।।**

'बन' अर्थात संसार की खोज करने लग पड़ा। विज्ञान वालों ने संसार की कितनी खोज की है लेकिन उस खोज ने उसको वह पद नहीं देना कभी भी मोक्ष पद नहीं इसको मिलना। इसलिये भाई यह संसार में डूब गया ।

***काहे रे बन खोजन जाई ।*** (पृ० ६८४)
***वह तो रतन पदारथ घर ही माही ।।*** (पृ० १५२)

वह पदार्थ तो तेरे हृदय में है, वह कही बाहर तो है नहीं इसलिये भाई जिस रत्न को तुमने खोजना था, आत्मा को, अपने आप को सही करना था, उसकी खोज को छोड़कर तुम संसार की खोज में लग गये -

***रतनु नाम घर ही के भतरि ।।***
***जो सब में रमा हुआ राम है ।***
***रमत राम जनम मरणु निवारै ।*** (पृ० ८६५)

वह तुम्हारे हृदय में है। यदि वह तेरे भीतर ज्योति न हो तो तेरी बिजली न जले। वह तेरा जो कमल है बल्ब, उसका ही न पता लगे। तेरे भीतर चेतन न हो तो मन का तुम्हें कैसे पता लगे ? यह तो तुमने अनेमान कर लिया भाई संकल्प विकल्प है। भाई संकल्प और विकल्प इसका नाम ही मन है। जो निश्चय रूपी वृत्तिहै उसको बृद्धि कहीते हैं जो चिंतन में लगा है, चाहे संसार के, चाहे परमेश्वर के, वह चित्त है। जो अहंकार करना, चाहे शरीर का करो, चाहे स्वरूप का करो। स्वरूप का अहंकार तो इसको समीप ले जायेगा और जो देह का अभिमानहै इसको बाहर निकाल लायेगां इसकरके यदि वह भीतर न होता, चाहे अन्तःकरण की वृत्तियां तुझे दिखती ही नहीं। न बृद्धि दिखाई देती न मन दिखाई देता न चित्त दिखाई देता न अहंकारं वह जिनके कारण तुम उसको देखते हो अंतःकरण को वह परमेश्वर है, वह तेरा आपा है नहीं। यदि तुम्हारा आपा मन होता वह जो है, बुद्धि जड़ है, चित्त जड़ है, अहंकार जड़ है और जड़ को किसी ने देखा जाना नहीं आज तक। देखने वाला और जानने वाला सोडहम् प्रकाश होता है। -

***एक समय मान होइ साक्षी अरू आभास***
***दूजो चेतन को विषय साक्षी स्वयं प्रकाश।***

(निश्चलदास विचार सागर ४/११६)

उसने कहा एक ही प्रतिबिंब और बिंब होते हैं आभास होता है ।

जब भी तुम घट में प्रतिबिंब देखते हो, उस घट को तोड़ देगें वह प्रतिबिंब यहां से जाकर कहां जायेगा ? बिम्ब में जायेगा, और कहीं लय नहीं होगा। वह फिर सूर्य से उसको निकाल नहीं सकते तुम फिर उसके अक्स को निकाल सकते हो? उस आकार को तो निकाल सकते हो, उसको

नहीं निकाल सकतें वह मूल होता है। वह तो बिम्ब है, प्रतिबिंब तो उसमें हैं वह तो पानी गिरा दो तो -

***जिउ प्रतिबिंबु कउ मिली है उदक कुंभु बिगराना।।***

(पृ० ४७५)

वह कहता जल का कुभ जब गिर गया, प्रतिबिंब जाकर बिम्ब में मिल गया। कब ? जब इसको अपने स्वरूप का पताचल गया । वह जो इसने जीत कल्पित किया हुआ 'प्रतिबिम्ब' वह स्वयं ही हट जायेगा। यह जो कुछ है, अपना स्वरूप रहेगा। वह कौन है ? वह सोडहम् प्रकाश है -

*साक्षी ब्रहम स्परूप इक, नहीं भेद को गंध ।*
*राग द्वैष मती के धरम, ता मैं मानत अंध ।।*

(निश्चलदास विचार सागर २/१२)

यह अज्ञानी लोक बुद्धि के धर्मों को मानते हैं। उसका कोई धर्म नहीं वह तो परमेश्वर शुद्ध है, सोडहम् प्रकाश है, व्यापक है। उसी का अर्थ है अब पढ़ यह शब्द -

**रतन रामु घट ही के भीतरि ।**

वह रत्न रूपी राम, शुद्ध, चेतन, वह तो तेरे हृदय के भीतर है, वह ब्रह्म, पारब्रह्म सबका आत्मा रूप होकर सबके हृदय में बैठा है। वह पारब्रह्म रूप है, वह परिपूर्ण है, तेरा आपा वह है जीव ! तेरा आपा यह नहीं । तुम तो आत्मा हो, तुम मन नहीं हो, बुद्धि नहीं, चित्त नहीं तुम ज्ञानेन्द्रिय नहीं, कमे ाíन्द्रय नहीं, कुछ नहीं यह तो जड़ है सारा और तेरा आपा वह है।

ता को गिआनु न पाइओ ।।

उसका तुझे अपने स्वरूप का ज्ञान नहीं हुआ कि मेरा स्वरूप यह हैं यह तुझे ज्ञान पक्का दृढ़ नहीं हुआ भाई मेरा स्वरूप यह है। जब तुम यहां आ जाओगे तेरी ये जो माला है यह भी छूट जायेगी और सिमरन भी छूट जायेगा, तो फिर समाधि हो गई, चाहे क्षणमात्र हो ।

***एक चिति जिह इक धिन धिआइउ ।***
***काल फास के बीच न आदउ ।।*** (अकाल उस्तत)

यदि इस पर ईश्वरीय कृपा हो गई यह सीधा होकर परमेश्वर का हो

गया सक को त्याग कर । इसको अपना स्वरूप प्राप्त हो जायेगा। यह जन्म-मरण से छूट जायेगा। वह कैसा स्परूप है ? आगे चल -

**जन नानक भगवत भजन बिनु ।**

**बिरथा जनमु गवाइओ ।।**

यह है और जो 'रमत राम घट ही के भीतर' वह अन्य हैं वह जो रमा हुआ राम था व्यापक तेरे हृदय में नहीं था ।

*घटि घटि में हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि ।।*

*कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि ।।*

(पृ० १४२७)

यह तो संसार के संत बता गये कि सबके हृदयों में परमामा निवास करता हैं यह तो संतों की गवाही है, तो फिर वह क्यों व्यर्थ गया ? वह घट में जो तुम्हारा रत्न है न शुद्ध चेतन वह तेरा आपा है अब चल -

***ता को गिआनु न पाइओ।।*** (पृ० १४२७)

उसका तुम्हें ज्ञान नहीं हुआ, स्वरूप ज्ञान नहीं हुआ, इसका अर्थ यह है संसार के तुमने ज्ञान कर लिये, संसार को तुमने खोज लिया लेकिन तुझे अपना स्वरूप न मिला। तुम बल्कि उलझन में पड़ गये यह माया के लोभ में पड़ गया।

**जन नानक भगवंत भजन बिनु ।**

भाई परमेश्वर के भजन बिना किसी को आज तक ज्ञान नहीं हुआ। नाम नामी का अभेद हैं जिस समय तेरा मन नाम के साथ एक हो गया, यह तो तुम कितनी बार श्रवण कर चुके हो बई नाम के साथ जब मन मिल जायेगा तो इसको परमेश्वर मिल जायेगा । नाम नामी का अभेद है। इसलिये भाई नाम सबसे ऊँची वस्तु है। वह परमेश्वर के भजन के बिना - आगे चलो।

बिरथा जनमु गवाइओ ।।

तेरा सारा जन्म व्यर्थ गया। तुम्हें वह वस्तु तो प्राप्त नहीं हुई जो तुम चाहते थे। वह तुम्हारा आपा था तुम्हारे हृदय में । आपा तो मिला न, बाहर फिरता रहा अपना आप तो तुझे मिला न, तुझे बाहर फिरने की आदत पड़ गई। वह तुम्हारी वृत्ति संसार में फंस गई और संसार को ढूढता

ढूढता तुम मरे और मिला कुछ नहीं। इसलिये जब तक तुम्हें स्वरूप का दृढ निश्चय नही होगा तब तक तुझे परमेश्वर की साक्षात् प्राप्ति नहीं होगी। साक्षात् तो तेरा आपा ही है। पहले उसका धर्म ही साक्षात् है। छिपा तो कभी है नहीं परमेश्वर, उसके सहारे तो सारा विश्व है। उसकी सत्ता स्फूर्ति के साथ संसार चलता है। यह उसका आपा है लेकिन मिलता है नहीं। इसकी वृत्ति बाहर चली गई, यह बाह्य वृत्ति पर ठहर गया, वह जो दृष्टि भी इसकी 'द्रष्टा' उसको भूल गया। इसलिये 'न लिप्यते' वह कभी लुप्त होने वाली नहीं।

***नहि द्रष्टा दृष्टि लिप्यते ।*** (उपनिषद)

वह तो कहता अविनाशी है, यह उपनिषद में आता है। कहता इसका द्रष्टा, आपा कभी लुप्त नहीं हुआ लेकिन इसका मन नहीं ठहरा। अब मन ने ठहरना तो कहीं है और ठहरने का स्थान भी कोई और नहीं हैं एक चीज को देखोगे, करोगे फिर और कुछ करना पड़ेगा। एक शब्द आप गाओगे, अगला फिर और सोचना पड़ेगा। ठहरने का समय नहीं मिला, तभी पुराने लोग जाकर बड़ा अभ्यास करते होते, इसलिये किसी समय परमेश्वर को दया आ जाये, ठहर जाये। फिर जो होगा देखी जायेगी।

***प्रथमे मनु परबोध अपना पाछै अवर रीझावै ।।***

(पृ० ३८१)

पहले अपने मन को साथ ले फिर लोंगो को भी रिझा ले, प्रसन्न कर ले, फिर कोई भय नहीं है। लेकिन स्वरूप न भूले अपना।

**बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरू ।**

❑

१ ओंकार सतिगुरु प्रसादि।।

## 6

बारह माहा माँझ महला ५ - घरू ४
१ ओंकार सतिगुर प्रसादि

किरति करम के बीछुड़े करि किरपा मेलहु राम ।।
चारि कुंट दहदिस भ्रमे थकि आए प्रभ की साम ।।
धेनु दुधै ते बाहरी कितै न आवै काम ।।
जल बिनु साख कुमलावती उपजहिं नाही दाम ।।
हरि नाह न मिलीऐ साजनै कत पाईऐ बिसराम ।।
जितु घरि हरि कंतु न प्रगटई मठि नगर से ग्राम ।।
स्रब सीगार तंबोल रस सणु देही सभ खाम ।।
प्रभ सुआमी कंत विहणीआ मीत सजण सभि जाम ।।
नानक की बेनंतीआ करि किरपा दीजै नामु ।।
हरि मुलहु सुआमी संगि प्रभ जिसका निहचल धाम ।।१।।
चेति गोबिंदु अराधीऐ होवै अनंदु घणा ।।
संत जना मिलि पाईऐ रसना नामु भणा ।।
जिनि पाइआ प्रभु आपणा आए तिसहि गणा ।।
इकु खिनु तिसु बिनु जीवणा बिरथा जनमु जणा ।।
जलि थलि महीअलि पूरिआ रविआ विचि वणा ।।
सो प्रभु चिति न आवई कितड़ा दुखु गणा ।।
जिनी राविआ सो प्रभु तिना भागु मणा ।।
हरि दरसन कंउ मनु लोचदा नानक विआस मना ।।
चेति मिलाए सो प्रभु तिस कै पाइ लगा ।। २।।

(पृ० १३३)

आप इस बात को जानते हो, पहली पातशाही ने बारह माह तुजारी में उच्चारण किया था। लेकिन उसमें अलंकार अधिक थे, समझ कम पड़ते

थे। सारी संगत ने एकत्रित होकर पंचम पातशाह के पास प्रार्थना की भई ऐसा बारह माह उच्चारण करो, महाराज ! जो हमारी समझ में आ जाये। गुरू साहिब ने बहुत सरल किया।इसमें पंजाबी के पद बहुत अधिक हैं। अमृतसर की बोली है, पंजाब के महय की बोली है इसलिये पंजाबियों को विशेष रूप से समझ आता है, सब कृपा करके, दया करके, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरू, सतिनाम श्री वाहिगुरू।

**१ ओंकार सतिगुरू प्रसादि**

एक जो परमेश्वर है, वह पूर्ण ब्रह्मज्ञानी की कृपा से प्राप्त होता है।

***ब्रहमगिआनी कउ खोजहि महेसुर ।***

***नानक ब्रहमगिआनी आपि परमेसुर ।।*** (पृ० २७३)

***साहिबु मेरा एको है ।। एको है भाई एको है ।।*** (पृ० ३५०)

वह जीव अपने कर्मों के अनुसार विलग हुए हैं परमेश्वर से। किसी ने अलग नही किये यदि विलग किये होते तो उसका नाम लेते ।

किरति करम के वीछड़े

यह इन्होंने जैसे जैसे कर्म किये उस के फलस्वरूप विलग हुये ।

हे राम ! हे व्यापक ! कृपा करके आप इनको अपने साथ मिला लो। यह परमेश्वर प्रति पुरूषार्थ है। यह गुरू ग्रन्थ साहिब मार्ग बताते हैं भाई उस परमेश्वर की कृपा से परमेश्वर को प्राप्त होगे।

**चारि कुंट दह दिस भ्रमे ।**

चार योनियों में और दस दिशाओं में वे भटके सारे में भटक चुके हैं ।

**थाकि आए प्रभ की शाम**

जब ये थक गये तो परमेश्वर की शरण आये, गुरू रामदास तक आये। फिर ये प्रभु की शरण पड़े ।

**धेनु दुधै ते बाहरी कितै न आवै काम ।।**

जो गाय दूध नहीं देती, वह किसी काम की नहीं लोग उसको छोड़ देते हैं, बाहर निकाल देते हैं गायें जो अधिक दूध देती हैं, उनको पुरस्कार मिलता है। इसलिये जैसे वह व्यर्थ है, जब तक यह परमेश्वर का दास नहीं बना तब तक यह व्यर्थ है, तब तक भक्तों में गिना नहीं गया । तब तक यह कृपा का पात्र नहीं हुआ।

**जल बिन साख कुमलावती**

जल से बिना 'साख' नाम है खेती का जब मुरझा जाये जब वह सूख जाये तो-

**उपजहिं नाही दाम ।।**

फिर उसके पैसे तो नहीं वसूल किये जाते, दाम तो नहीं मिलते। वह तो आई-गई, सूख गई। इसलिये जो नाम से रहित जीव है वह किसी काम का नहीं। वे जन्म लेगा और मरेगा और योनिओं में जायेगा। वह किसी गिनती में नहीं भाई। इसलिये जो खेती पककर फल दे दे उसके दाम भी मिलेंगे, खायेंगे, पियेंगे सब जानते हो आप।

**हरि नाह न मिलीए साजनै**

'हरि' जो मालिक है सबका, वह सच्चा सज्जन जब तक प्राप्त न हो -

**कत पाइऐ बिसराम ।।**

यह जन्म-मरण से किस प्रकार छूटे ? इसका जन्म-मरण से छुटकारा कैसे होगा ? नहीं होगा ।

**जितु घरि हरि कंतु न प्रगटई**

जिस अन्तःकरण में, जिस मन में परमेश्वर प्रकट नहीं हुआ, साक्षात्कार नहीं हुआ। लेकिन परमेश्वर तो मन में बैठा है। मन तो आपके सम्मुख है, जो मन संकल्प विकल्प करता है, वह तुम सब जानते हो। मन तो जड़ है, मन को तो कभी संकल्प विकल्प करने की शक्ति ही नहीं है। जो मन में ईश्वर की ओर से संकल्प विकल्प आता है अथवा भूल के कारण आता है, वह तुम सब जानते हो ।

**भठि नगर से ग्राम ।।**

वह ग्राम, वह शरीर झाड़ की भाँति है, चाहे वह बड़ा सुंदर ग्राम है, बड़ा सुंदर शरीर है, बड़ा सुंदर है लेकिन उसको तुम झाड़ समझो। वह व्यर्थ है, उसमें निवास करके तुम ने सुख, आत्मसुख प्राप्त नहीं किया। संसार के दुःख सुख का अनुभव किया इसलिये वह किसी काम का नहीं।

**स्रब सीगार तंबोल रस ।**

जितने भी वैराग्य, विवेक इसने श्रृंगार किये, तंबोल, संसारके रस भी इन्होंने भोगे हैं।

**सुण दोही सब खाम ।।**

लेकिन शरीर सहित सब व्यर्थ। 'खाम' अर्थात् व्यर्थ। वे सब व्यर्थ गये ।

**प्रभ सुआमी कंत विहुनीआ ।**

वह जो सबका मालिक, प्रेरक, प्रभु है स्वामी उसके बिना ये सब यम हो गये इन्होंने आप का कुछ भी नहीं करना। उन्होनें भाई आपकी कोई सहायता नहीं करनी है।

***अन्त बार नानक बिनु हरि जी***
***कोऊ कामि न आइओ ।।*** (पृ० ६३४)

अंत समय बिना परमेश्वर के कोई काम नहीं आता। परमेश्वर के दर्शन होते हैं तो इसका जन्म-मरण काटा जाता है। यह परमेश्वर के साथ एक हो जाता है। इसको मुक्ति मिल जाती है मशाम शरीर की। लेकिन जब तक यह परमेश्वर से विमुख है तो वे सारे लोग इसके लिये यम की भाँति हैं, दुःखदायी हैं।

**मीत सजण सबि जाम ।।**

जितने भी इसके मित्र हैं, सज्जन हैं, क्यों यम हैं ? उन्होंने अंततः इसका मलान किया। ईश्वर के दर्शन के साथ ईश्वर की प्राप्ति होती है। जब तक परमेश्वर के दर्शन न हों तब तक इसको परमेश्वर प्राप्त नहीं होता। जब परमेश्वर की कृपा हुई इसको परमेश्वर प्राप्त हो जायेगा। इसका सब शरीर भी, मन भी, बुद्धि भी सफल हो जायेगी।

**नानक की बेनंतीआ**

श्री गुरू अर्जुन देव जी कहते मेरी एक प्रार्थना है -

**करि किरपा दीजै नामु ।।**

हे परमेश्वर, कृपा करके मुझे नाम दो ।

***नाम संगि जिसका मनु मानिआ ।।***
***नानक तिनहिं निरंजनु जानिआ ।।*** (पृ० २८१)

नाम के साथ जब मन रंग गया, इसको निराकार परमेश्वर का साक्षात्कार हो जायेगा ।

***नामु संगी सो मनि न बसाइओ ।***
***छोड़ि जाहि बाहू चितु लाइओ ।।*** (पृ० ७१५)

नाम इसके साथ न हुआ, यदि नाम इसके साथ होता तो इसका भला हो जाता और इसको सब कुछ प्राप्त होता। जनक जी ने वहां दिखाया है जब यम ने कहा परमेश्वर के पास चलो जनक उस मार्ग गया । जब उसने नरकों का दुःख सुना, उसने यमराज को पूछा यह क्या है ? कहा ये नरक के जीव हैं। कर्मों के अनुसार दुःखी जीव हाय ! हाय ! करते हैं कहता इनको छोड़ दो । वह कहता न जी न मैं सेवक हूँ मैं ईश्वर का दास हूँ , मैं आज्ञा मानता हूँ उसकी, मेरे में शक्ति नहीं छोड़ने की। उसने कहा इन का भला हो सकता है ? मैने देखने जाना है। वे गये, वहां शन्ति हो गई। क्यों शान्ति हो गई ? उसके पास नाम था। जब जनक गया वह शान्त हो गया । वे कहते अब नहीं हाय ! हाय ! करते ? कहा, आप हैं ब्रह्मज्ञानी पूर्ण, आपके प्रभाव से इसके दुःख हट गये, इसलिये शान्त हो गये। उन्होंने कहा फिर मैं यहीं रह जाता हूँ यदि मेरे साथ ये शान्त होते हैं, मैं यहीं रह जाता हूँ और रहना भी नहीं बनता यहां तुम्हारा। इसलिये उस जनक ने यह कहा फिर इनका छुटकारा हो सकता ? उसने कहा हां, हो सकता जी। किस के साथ ? कहता जी नाम के साथ हो सकता अन्य कोई उनके छुटकारे का उपाय नहीं। जब नाम प्राप्त हो जाये तो नामी वहीं ही होता है । जब नामी वहां है फिर हाय ! हाय ! करने का क्या मतलब ? इसलिये वह कहता यदि नाम के साथ हो सबता तो मेरा नाम जो मैनें जपा है वह एक बार का रख लो और इनके कर्म रख लो। उसने इसी प्रकार किया। वह पलड़ा नाम वाला भारी हो गया। कहता जी काटे गये सारे। वह आपका नाम रखने से सब दुःख काटे गये, पलड़ नाम का भारी है, इसलिये सारे दुःख काटे गये, नाम में इतनी शक्ति है। नाम और नामी एक होता है, दो नहीं। एक स्थान पर गुरू ग्रन्थ साहिब में आता है।

गुरू साहिब कहते - यह जो संसार है, यह बड़ा गहन है। हमने भी इसमें प्रवेश किया, हम नाम को साथ लेकर गये और पार हो गये। नाम जहाज है, नाम नौका है। यह नाम को न भूले, नामी इसको प्राप्त हो जायेगा। फिर यह डूबता नहीं। आपको पता है प्रहलाद डूबा नहीं, पहाड़ से गिराया, मरा नहीं, कुछ नहीं हुआ। उसने अपितु यह कहा कि थल में, जल में, सर्वत्र परमेश्वर है क्यों ? वह नामी था, ब्रह्मज्ञानी था, नाम उसके

पास था, वह ब्रह्मज्ञानी था। नाम जब प्राप्त हो जाये तो नामी प्रज्ञप्त हो जाता है। यह नाम, गुरू साहिब कहते कृपा कर परमेश्वर। मैं एक मांग मांगता हूँ, मुझे नाम दो, अन्य कोई वस्तु नहीं मांगता। नाम पर ही छुटकारा होना है। चल -

**हरि मेलहु सुआमी संगि प्रभ जिस का निहचल धाम ।।**

जिसका 'निहचल धाम' परमेश्वर का है। हे स्वामी ! हे परमेश्वर ! हे मालिक ! मालिक ! मुझे उसके साथ मिला दो। यह एक मेरी प्रार्थना है।

**चेति गोबिंदु अराधिऐ ।**

चैत्र मास में भाई तुम परमेश्वर की आराधना करो, यह चैत्र मास का यहां मतलब है।

**होवै अनंन्दु घणा ।।**

फिर तुम्हें घना अर्थात् बहुत आनंद होगा। बहुत आनंद होगा। बांगर की बोली है, 'घना' बहुत को कहते हैं। आपको कबहुत आनंद होगा लेकिन यदि आपने चैत्र मास में उस परमेश्वर के नाम की आराधना करोगे।

**संत जना मिलि पाईऐ ।।**

हमने संतों को मिलकर पाया है गुरू साहिब कहते -

**रसना नामु भणा ।।**

हमारी रसनाके साथ नाम एक हो गया, हमारे हृदय में नाम प्राप्त हो गया। नामी की कृपा हो गई और इसलिये वह हमें प्राप्त हुआ लेकिन गुरू रादास संत की कृपा से प्राप्त हुआ।

**जिनि पाईया प्रभु आपणा।**

जिन्होने अपना आपा प्रभु प्राप्त कर लिया । प्रभु इसका आपा है। क्यों? परमेश्वर एक है दो तो है नहीं।

*एंककारू अवरू नहीं दूजा नानक एकु समाई ।।* (पृ० ६३०)

एक एकंकार है दूसरा कोई नहीं, इसलिये वह एकंकार जो परमेश्वर है सबके हृदय में बैठा, वह प्राप्त हो गया। फिर पढ़ते।

**जिनि पाईआ प्रभु आपणा**

जिसने अपना आत्मा-परमात्मा पा लिया ।

**आए तिसहि गणा ।।**

उनका आना संसार में सफल हो गया। 'गणा' अर्थात् सफल हो गया।

**इकु खिनु तिसु बिनु जीवणा**

नाम को भूलकर एक क्षणमात्र भी जो जीना है

**बिरथा जनमु जणा ।।**

उस व्यक्ति का जन्म व्यर्थ हो गया। वहां हम गये थे बाग में। वहां आते जाते थे लोग वह हमारे पास आते जी फलां व्यक्ति आया। वे व्यक्ति पुरूष को 'जणा' कहते हैं। उस व्यक्ति को जिसको वह प्राप्त नहीं हुआ, उसका जन्म व्यर्थ है।

**जलि थलि महीअलि पूरिआ ।**

वह परमेश्वर कैसा है ? जल में, थल में, 'मही' पृथ्वी में 'अलि' आकाश में सर्वत्र पूर्ण है।

**रविआ विचि वणा ।।**

वह वन में भी व्यापक है सब में ।

**सो प्रभु चिति न आवई ।**

जब वह प्रभु इतना समीप अपना चित् में न आये तो बड़े अफसोस की बात है। वह तो आपा है, आत्मा है।

***जिनी आतमु चीनिआ परमातमु सोई ।***
***एको अंम्रित बिरखु है फलु अंम्रितु होई ।।*** (पृ० ४२१)

इसलिये वह आत्मा परमात्मा एक है ।

**क्तिड़ा दुखु गणा ।।**

कितने दुःख इसके गिने जायें, कितना समझा जाये, कितना दुःख है ? जो सर्वत्र व्यापक है तुम बताओ वह तुम्हें प्राप्त न हो, सोने का गहना कड़ा तुम्हें प्राप्त हुआ लेकिन सोना न प्राप्त हुआ। कितने खेद की बात है। वह कड़ा सोना ही है, तुम्हारी आत्मा ही परमात्मा है और तो नहीं कोई है। उसकारे छोटी उपाधि के कारण आत्म कह देते हैं। वह बड़ी उपाधि के कारण परमात्मा कह देते हैं। वस्तु तो एक है, वह तुम्हारा आपा है। कितना दुःख है जो अपना आप न प्राप्त हो।

**जिनी रविआ सो प्रभु**

जिन्होंने उस परमेश्वर की आराधना की, सिमरन किया।

*सिमरि सिमरि नामु बारंबार ।*
*नानक जीअ का इहै अधार ।।* (पृ० २६५)

**तिंना भागु मणा ।**

उनके भाग्य 'मणा' बहुत हैं जिन्होंने अपने परमेश्वर की आराधना की, उसकी प्राप्ति हुई उनका भाग्य बहुत बड़ा है।

**हरि दर्शन को मन लोचदा**

हरि के दर्शन को मेरा मन लालायित है, चाहता है।

**नानक पिआस मना ।।**

बहुत प्यास लगी हुई है, अत्यंत प्यास लगी हुई है। पंचम पातशाह को बहुत प्यास लगी हुई थी, जब उन्होंने पत्र लिखा। वह प्यास गुरू रामदास ने उनकी देखी तो उन्होंने शिष्यों को भेजा भई लाओ। इसलिये जब इसको पूरी प्यास लगेगी, वह जल नाम रूपी जल परमेश्वर अवश्य देगा। इसलिये अभी इसको पूरी प्यास नहीं। जब तक विषयों की प्यास है तब तक परमेश्वर की प्यास नहीं। जब असको परमेश्वर की प्यास लगेगी वह अन्तर्यामी है वह अपने आप उसको प्राप्त हो जायेगा।

**चेति मिलाए सो प्रभु ।**

वह प्रभु मुझे चैत्र मास के द्वारा गुरू साहिब कहते मिलाया गुरू रामदास ने। वह परमेश्वर प्रेरक सबका स्वामी श्री गुरू रामदास जी ने कृपा करके मुझे मिलाया ।

*संत संगि अंतरि प्रभु डीठा ।*
*नामु प्रभु का लागा मीठा ।।* (पृ० २९३)

वह संत संग के साथ मैने भीतर प्रभु के दर्शन किये। अब मुझे भूलता नहीं। वह इतना मधुर लगा जितनी और कोई वस्तु नहीं। फरीद ने भी लिखा है -

*फरीदा सकर खंडु निवात गुड़ माखिओं माझा दुधु ।*
*सबे वसत् मिठिआ रब न पुजनि तुधु ।।* (पृ० १३२२)

जब सब वस्तुयें उनकी माता ने रख दी, भाई! ऐसा आपने कभी जंगल में खाया पिया रस युक्त चीजें ? वह कहता बहुत रस युक्त हैं माता ! लेकिन

**रब न पुजनि तुधु ।।**

परमात्मा के बराबर नहीं। हे माँ ! तुझे परमात्मा प्राप्त नहीं हुआ यदि तुम ने परमात्मा का आनंद देखा होता तो आप यह ऐसी बात न करते। इसलिये भाई सबसे मधुर प्यारा परमात्मा है। मिट्ठे का अर्थ है प्यारा ! सबसे प्यारा अपना आप होता है।

**तिस के पावि लगा ।।**

उस गुरू रामदास के चरणों में मै लगा। तुम्हें भी जो मिला दे उसके चरणों में लग जाओ। जो तुम्हें परमेश्वर के साथ एक कर दे उस के चरणों में लग जाओं। द्वेष और राग ये दो पक्ष हैं। ईर्ष्या, वासना आदि हैं द्वेष और एक होता है राग। आराधना, नाम जपना, यह है राग। ये दो तत्व हैं परमेश्वर तो एक है, जो कृपा करके मिलाने वाला वह देनों पक्षों से भिन्न वह एक ही है।

***साहिबु मेरा एको है । एको है भाई एको है ।।*** (पृ० ३५०)

वह मालिक एक हे, तत्व दो हैं राग और द्वेष ।

**चेति मिलाए सो प्रभू तिस के पांव लगा ।।**

**बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरू ।**

❑

**१ ओंकार सतिगुरु प्रसादि।।**

## 7

**धनासरी महला ५।।**
**जिनि तुम भेजे तिनहि बुलाए सुख सहज सेती घरि आउ।।**
**अनद मंगल गुन गाउ सहज धुनि निहचल राजु कमाउ।।१।।**
**तुम धरि आवहु मेरे मीत।।**
**तुमरे दोखी हरि आपि निवारे अपदा भई बितीत।। रहाउ।।**
**प्रगट कीने प्रभ करनेहारे नासन भाजन थाके।।**
**घरि मंगल वाजहि नित वाजे अपुनै खसमि निवाजे।।२।।**
**असथिर रहहु डोलहु मत कबहू गुरु कै बचनि अधारि।।**
**जै जैकारु सगत भूमंडल मुख ऊजल दरबार।।३।।**
**जिन के जीअ तिनै ही फेरे आपे भइआ सहाई।।**
**अचरजु कीआ करनै हारै नानक सचु वडिआई।।४।।**

(पृ० ६७८)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु, सतिनाम श्री वाहिगुरु।

**धनासरी महला ५।।**

धनासरी राग में पंचम पातशाह श्री गुरु अर्जन देव जी कथन करते हैं–

**जिनि तुम भेजे तिनहि बुलाए**

जिस परमेश्वर ने तुम्हें भेजा ळै वही तुम्हें बुलायेगा। बख्शेगा भी बुलाकर। जिसने तुम्हें भेजा है वही तुम्हें बुलायेगा भी। और इसमें किसी का सम्ब न्ध नहीं। परमेश्वर अपने भक्तों का रक्षक स्वयं है अझैर बुलाने वाला भी आप है। भेजने वाला भी आप है और बुलाने वाला भी आप है और बख्शने वाला भी आप है।

**सुख सहज सेती घरि आउ।।**

'सुख सहज सेती' सहज नाम है शान्ति, ज्ञान का। अपने घर अपने

स्वरुप में आना, अपने स्वरुप में पहुँचना। इसका स्वरुप है 'सोइ'। 'सोइ' क्या होता है? 'सोइ' स्वरुप परमेश्वर निराकार। और 'सोइ' पद किसी के साथ नहीं लगता। 'सोइ' स्वरुप होता है। इसलिये अब पढ़ भाई –

**जिनि तुम भेजे तिनहि बुलाए**

जिन्होंने तुम्हें कृपा करके भेजा और बुलाया भी उसने है तुम्हें।

**सुख सहज सेती धरि आउ।।**

सहज सुख के 'सेती' अपने स्वरुप में पहुँचो। अपने स्वरुप में स्थित हो जाओ। यह द्रष्टा रुप में ही स्थित होता है, कभी क्षण मात्रा लेकिन वह द्रष्टा जो है।

*मूई सुरति बादु अहंकारु।।*
*ओहु न मूआ जो देखणहारु।।२।।*
*जै कारणि तटि तीरथ जाही।।*
*रतन पदारथ घट ही माही।।*
*पड़ि पड़ि पंडितु बादु बखाणै।।*
*भीतरि होदी वसतु न जाणै।।३।।*
*हउ न मुआ मेरी मुई बलाइ।।*
*ओहु न मूआ जो रहिआ समाइ।।*
*कहु नानक गुरि ब्रहम दिखाइआ।।*
*भरता जाता नदरि न आइआ।।४।।* (पृ० १५२)

द्रष्टा का जो सवरुप है वह 'सोई' स्वरुप है, वहीं परमेश्वर है। जो द्रष्टा था, वही परमेश्वर है, दृश्य नहीं कभी हुआ, यह नियम है, द्रष्टा का दृष्टा भी काई नहीं। यदि कहें भई परमेश्वर मालिक है द्रष्टा का, फिर तो वह कभी जन्म-मरण में नहीं आता, वह स्वरुप इसका वास्तिवक है। वह 'सुख सहज सेती' सुख के साथ सहज में अपने स्वरुप में स्थित हो जाये।

जो तुम्हारा 'सेई' स्वरुप है उसमें स्थित होगा।

**अनद मंगल गुन गाउ सहज धुनि**

वह सहज की जो ध्वनि है, वह आनंद मंगल में गुण गाया करो। आनंद सुख परमेश्वर है, आनंद मंगल परमेश्वर है, उसके गुण गायन किया करो। उसके सम्बन्ध में लिखा है–

*मूई सूरति बादु अहंकार।।*

*ओहु न मूआ जो देखणहारु।।* (पृ० १५२)

वह देखने वाला कभी जन्म-मरण में नहीं आया। वह है द्रष्टा, वही है परमेश्वर, वही व्यापक है लेकिन दृश्य की दृष्टि से उसको द्रष्टा कहा चेतन को। वह द्रष्टा किसी वस्तु का नहीं, वह समस्त-

*द्रिसटिमान है समल मिथेना।।* (पृ० १०८३)

जो देखने में आता है वह झूठ होता है। उसकी कोई सत्ता नहीं होती। सत्ता एक है, दो सत्तायें तो हैं नहीं। यदि दो सत्तायें हों तो एक दृश्य की सत्ता हो जाये और एक द्रष्टा की सत्ता हो जाये ना! वह जो सुरत को जानने वाला है, वह द्रष्टा, चेतना, वह अपने घर कहें स्वरुप में स्थित होता है तो कोई संकल्प विकल्प नहीं रहता। इसलिये अपने घर आओ, अपने स्वरुप में स्थित होन पर जो अपने स्वरुप में पहुँच जायेगा। उसको मंगल, आनंद सब प्राप्त हो जायेंगे।

**निहचल राजु कमाउ।।**

निश्चल राज है, 'राजयोग' जिसको कहते है। वह जो सदैव रहने वाला है 'परमेश्वर' वह आपका वास्तविक राज है, वास्तविक स्वरुप है, वह राज अर्जित करो।

**तुम घरि आवहु मेरे मीत।।**

हे मेरे मित्र ! तुम अपने स्वरुप में स्थित हो जा। तुम अपने घर में स्थित हो जाओ।

*घर महि घर देखाइ देइ सो सतिगुरु पुरखु सुजाणु।।*

(पृ० १२६१)

घर नाम है। अन्तःकरण का। उसमें घर क्या है? अपना स्वरुप। वह जो उसको दिखा दे, वह सत् गुरु है, वह पूर्ण ब्रह्मज्ञानी होता है। तुम अपने घर में स्थित हो जाओ।

**तुमरे दोखी हरि अपि निवारे**

जितने भी आपके विरोधी थे वह परमेश्वर ने स्वयं हटा दिये। कई लोग 'प्रिथिये' पृथ्वीदास (गुरु रामदास जी के दूसरे पुत्र) का अर्थ लगाते हैं, बहुत लगाते हैं लेकिन यह निश्चित नहीं लेकिन जग तुम अपने स्वरुप में आकर

स्थित हो जाओगे तो मेरे समस्त दुःख निवृत्त हो जायेंगे जीव !

**अपदा भई बितीत ।। रहाउ।।**

और समस्त-जो तुम्हारी आपदा थी, 'आपदा' नाम है दुःख का, वह सारी व्यतीत हो गई, वह समाप्त हो गई। स्वरुप में 'आपदा' होती ही नहीं। स्वरुप में दुःख नहीं होता। अपना स्वरुप 'सोइ स्वरुप' है, सुख स्वरुप है। वह आत्म स्वरुप में कभी दुःख आया नहीं, न इसने सोचा है।

**प्रगट कीने प्रभ करनेहारे**

वह जो 'कर्ता पुरखु' सब कुछ कर सकने में समर्थ प्रभु है। उसने प्रकट करने हैं। उसके साथ जब यह एक हो गया।

**सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ नानक नामु बखाणै।।**

जब इसकी सुरत शब्द में स्थित हो जाये फिर संसार से पार हो जाता है। अभी इसकी सुरत स्थित नहीं हुई। वह जैसे कोई कोई कारीगर एक वस्तु को मिला देता है, वह पूर्ण गुरु है, जो बख्शे इसकी सुरत को शब्द के साथ मिला देता है तो उस नाम को कभी भूलता नहीं है। इसलिये उसने लिखा है -

*दुनीआ सागरु दुतरु कहीऐ किउ करि पाईऐ पारो।।*
*चरपटु बोलै अउधू नानक देहु सचा बीचारो।।४।।*
*जैसे जल महि कमलु निरालमु मुरगाई नै साणे।।*
*सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ नानक नामु वखाणे।।*

(पृ० ६३८)

इसकी सुरत जब शब्द के साथ स्थित हो जायेगी, फिर यह जाम को नहीं छोड़ेगा, यह बख्शा गया और न फिर यह कभी जन्म-मरण में आयेगा। यह भाई गुरु साहिब कहते, ऐसे किया करे। यह वह, एक सीधा व्यक्ति था, इसने जानबूझ कर प्रश्न किया था पिछला इसलिए भाई तुमने सुरत को शब्द के साथ स्थित करना, तुम्हारी सुरत और शब्द एक हो, दो न हों। जब तुम्हारी सुरत शब्द के साथ मिल जायेगी तो इसकी कोई सत्ता नहीं रहेगी, फिर तो शब्द स्रु हो जायेगा। शब्द वह होता, जब सिद्धों ने पूछा तुम्हारा गुरु कौन है? वे कहते -

**सबदु गुरु सूरति धुनि चेला।।**

गुरु साहिब कहते, वह शब्द हमारा गुरु है। हमारी जो सुरत है, उसकी ध्वनि उस शब्द में जुड़ जानी चाहिये है। इसलिए फिर इसका जन्म-मरण समाप्त हो जायेगा। इसकी जो आपदायें है समस्त नाश हो जायेंगी।

**प्रगट कीने प्रभ करनेहारे**

वह परमेश्वर सब कुछ कर सकने में समर्थ 'कर्ता पुरखु' ने प्रकट किया है। कब ? जब सुरत शब्द के साथ अभिन्न हो गई। उस शब्द ने शब्दी बना दिया परमेश्वर ने। यह संसार में भी प्रकट हो गया और जन्म मरण भी काटा गयझ।

**नासन भाजन थाके।।**

वह जो प्रतिदिन मन, वह वृत्ति कहो, म कहो, वह जो प्रतिदिन दझैड़ती थी सुरत, वह अब भागने दौड़ने से थक गई। थक कर, शरण आकर, उसकी इसलिए फिर भाग-दौड़ जन्म-मरण समस्त नाश हो जायेंगे, एक नहीं रहेगा। इस संसार की सत्ता ही नहीं रहेगी। अब तो एक ही सत्ता रह गई इसका अपना आप 'आनंद स्वरुप'।

**घरि मंगल वाजहि नित्त वाजे**

ते घर में प्रतिदिन मंगल वाद्य बजते हैं, खुशियों के बाजे बजते हैं। उस परमेश्वर के, मालिक के, वे खुशियों के, तेरे भीतर, तेरे अन्तःकरण में बाजे बजते हैं। अब कोई हर्ष शोक नहीं रहा है।

**अपुनै खसमि निवाजे।।**

यह तुझे अपने प्रभु ने शोभा दी है। 'निवाजे' नाम है शोभा दी, उस तेरे प्रभु ने, 'कतर्झ पुरखु' ने, तुझे शोभा दी है, तुझे बख्श दिया, वह जो बख्शना है।

***जा कउ अपुनी करै बखसीस।।***
***ता का लेखा न गनै जगदीस।।*** (पृ० २७७)

वह बख्शना है जो, वही शोभा देना है। आज से इसका जन्म-मरण काटा गया, 'निवाजे' प्रकट हो गये।

**असथिर रहहु डोलहु मत कबहू**

कभी विचलित न होना, अपने मन को कभी न विचलित करना। तुम मन तो हो नहीं, मन को देखने वाले हो। तुम जब मन से मिलोगे फिर दुःखी

सुखी हो जाओगे, तुम मन तो है नहीं, तुम तो मन को देखने वाले हो, मन को कौन देखता है ? आत्मा, परमात्मा, चेतन देखने वाला है मन को। वह जो करे सो करें वह जो किसी द्वारा विचलित भी नहीं होता। इसलिये जब वह गुरु के वचन में स्थिर हो कर रहेंगे फिर तुम कभी विचलित नहीं होंगें, लेकिन गुरु के वचन के साथ तुम्हारा मन एक हो जाये।

**गुरु के बचनि अधारि।।**

इसका आश्रय रह गया गुरु का वचन, क्यों ? अब और आश्रय तो है नहीं। वह गुरु ने जो कृपा करके नाम दिया, शब्द दिया, वही तुम्हारा आध ाार है। तुम्हारा नाम ही 'आधार' है। क्यों ? नाम-नामी एक हैं, दो तो है नहीं, वही तुम्हारा आश्रय है। उस गुरु के शब्द से कभी मन इधर उधर नहीं ले जाना, लेकिन वह चला जाता है, जग तक पूर्ण गुरु की कृपा न हो, तब तक स्थिर नहीं होता। बाबा बुड्ढ़ा जैसे छोटी आयु में ही, पूर्व पूण्य उन्होंने बीजे हुये थे, सारी आयु कहीं नहीं गया मन। और हमारा मन गुरु के शब्द में जुड़ जाये, उनका मन गुरु के वचन जो हुये, में जुड़ गया, वह भी अंत में आकर। गुरु अर्जुन देव जी कहते हैं इतिहास में, कहते भाई तुमने बड़ी सेवा की है। इतनी देर सेवा की है। पहले स्वरुप पर। उन्होंने तो आठ वर्ष सेवा की लहणा ने, गुरुआई उनको मिल गई। वे कहते ऐसी बात नहीं, यह जो कर्म है गुरुआई का है- लेकिन यह पीछे हट गया जब वहां मुर्दा वाली परीक्षा में आया। जब उन्होंने गुरु साहिब ने संकेत किया तो इन्होंने कहा किस ओर से खाऊँ ? मैंने कहा जो इसका साथ होगा वह देखेंगे। इसलिये मैं पीदे हट गया इनसे। इस कर के वे पूर्ण थे, तभी ऐसा हुआ-

***नानक अंगद को बपु धरा।।***
***धरम प्रचुरि इह जग मो करा।।*** (विचित्र नाटक)

ज्योति तो वही थी जो धुर से आई थी

***जोति रुपि हरि आपि गुरु नानकु कहायउ।।***
***ता ते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ।।*** (पृ० १४०८)

अब उसी ज्योति ने, गुरु साहिब ने लिखा है -

***जोति ओहा जुगति साइ सहि काइआ फेरि पलटीऐ।।***

(पृ० ८६६)

ज्योति और युक्ति वही रहेगी, शरीर का ही भेद होना है। वह आप श्री गुरु नानक देव की ज्याति गुरु अंगद देव में अवतरित हुई। गुरु अर्जुन देव जी कहते है वही ज्योति आये और फिर ऐसे ही कहा गुरु रामदास जी ने –

*गुर जोति अरजुन माहि धरी।।* (पृ० १४०८)

वह ज्योति गुरु थी, वह गुरु ज्योति जहां जानी थी, वहीं गुरु बनना था। वह ज्योति ही गुरु होता है और तो गुरु होता नहीं और जो हम तुम गुरु बनते हैं यह वास्तविक ऐसे गुरु तो नहीं, यह ज्योति रखने वाले गुरु तो नहीं, यदि हो तो बताओ।

यदि हमारी सुरत भी स्थिर हो जाये तो भी हमारा काम बन जाये। तुम देखते हो, यदि तुम 'सुखमनी' पढ़ते हो, नाम जपते हो, 'जपुजी साहिब' पढ़ते हो, वह भीतर मन कहीं कहीं भागा फिरता है। यदि वह स्थिर हो जाये, बस एक बार स्थित हो जाये–

*सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ* (पृ० ६३८)

सुरत शब्द के साथ अभिन्न हो जाये अझैर शब्द एक है। यह भूल गया। इसलिये भाई स्थिर रहो, अस्थिर न हो कभी यह परमेश्वर अस्थिर नहीं होने देता।

**गुरु कै बचनि अधारि।।**

आपका आश्रय ही गुरु का शब्द है, संसार में। शब्द ने ही शब्दी को मिलाना है, नाम ने ही नामी को मिलाना है, नाम नामी तो अभेद है, शब्द शब्दी का अभेद है। वह तुम्हारा जो गुरु का वचन है, वही आश्रय है, वहां से कभी न हिलना कभी। फिर डोलोगे नहीं, यदि शब्द को छोड़ दिया तो मन ने पता नहीं इतनी देर में कहां कहां जाना है, यह तो रोके नहीं रुकता ससुरा। यह तो उनके पीछे ही उड़ता है।

यदि पूर्ण गुरु इसकी सुरत को एक बार जोड़ दे, फिर यह रुक जायेगा, वाणी भी पढ़ी जायेगी, फिर घूमता भी जायेगा। यह तो ऐसे ही कहता रहता है, ये तो तुम जानते ही हो लेकिन एक बार इसकी सुरत शब्द के साथ जुड़ जाये, फिर यह बख्श जायेगा। लेकिन गुरु के शब्द पर इतना भरोसा हो, आश्रय ही वही हो, जीव का आश्रय ही एक शब्द है गुरु का।

**जै जै कारु सगल भू मंडल**

सारे मंडल में तेरी फिर जै जै कार हो जायेगी, वैसे भी तुम देखते हो लोगों को कहते, धन्य कबीर, धन्य रविदास और लोग जलूस निकालते हैं, जो कहते थे हम वहां गये जहां नामदेव हुआ है - उस मंदिर। वहां जो सीढ़ियां है सग ुछि इधर है, सरोवर इधर है और उसका मंदिर दूसरी ओर है, हमने भी देखा, मेरे साथ ज्ञानी बलवंत सिंह था, उसने कहा जी हम तुम्हारा उद्धार कर देंगे, बख्शे जाओ, लेकिन करेंगे उस मंदिर में। मैंने कहां इस मंदिर में नहीं करते ? कहता न जी यहां छींबा आया, वह छींबा जब आया, मंदिर तब का भ्रष्ट गया है, हम नहीं यहां प्रवेश करते। समझ गये। वह जिन्होंने मंदिर में प्रवेश करना भ पाप समझते हैं अब उनका जलूस निकालते हैं लोग, क्योंकि वे पूर्ण हुये, वे पहुँच गये, क्यों? उनको गुरु के शब्द में इतनी भी शंका नहीं हुई। वे गुरु के शब्द के साथ ही पार हो गये। वह गुरु के शब्द में ही गुरु होता है, सिद्ध बात है। वह कहता आँवा कच्चा ! कच्चा ! कच्चा ! क्यों ? वहां गुरु रामदास थे। वह गुरु रामदास का बख्शा हुआ था। उन्होंने जो कहा, उसने गुरु का शब्द बदला नहीं, उन्होंने कहा भाई पक्कियों के भाव बिकेगा वैसे रहेगा तो कच्चा, पकता नहीं। कहते जी यह तो शिष्य है ऐसा। कहते न ना यह तो गुरु रामदास जी का बख्शा हुआ है। इसलिये जब यह गुरु के शब्द का पूर्ण भरोसा कर ले, गुरु के शब्द के साथ इसकी सुरत एक हो जाये, बस फिर ठीक है।

यह तो आप स्वयं ही जानते हैं, कितना मन स्थिर होता है। नहीं ठहरता यह तो लोग आप ही कहते हैं, जो हम वाणी पढ़ते हैं, मन नहीं ठहरता। मैंने कहा सब की यही बात है, तुम अकेले को क्या कहें, इसलिये भाई सब की यही बात है। इसलिये भाई गुरु के शब्द पर भरोसा रखो। वही तुम्हारा आश्रय अङौर वही तुम्हें पार करने वाला गुरु का शब्द।

**जै जै कारु सगल भू मंडल**

आपकी जय जयकार समस्त भूमण्डल में होगी। जय नामदेव, जय रविदास, जलूस निकालते हैं उसकी जय जय होगी।

**मुख ऊजन दरबार।।**

अङौर सच्चे दरबार परमेश्वर के सम्मुख, मुख तुम्हारा उज्ज्वल होगा कोई पाप नहीं, आपके समीप होगा, तुम्हारा मुख उज्ज्वल होगा।

**जिनके जीअ तिनै ही फेरे**

जिनके ये थे उसी ने ही बख्शे, चाहे गुरु के माध्यम से बख्शे, चाहे कैसे बख्शे। बख्शे तो उन्होंने ही उस परमेश्वर ने भाई जिसके थे, उसने ही बख्शा इनको।

**आपे भइया सहाई।।**

उसने आप ही सहायता की। वह दसवें पातशाह ने पंक्ति लिखी है।

***समे संत पर होत सहाई।।*** (दशम् ग्रन्थ २४ अवतार)

वे सब संत जितने लिखे अवतार कहो, संत कहो, उन सब की अंत समय में सहायता की।

**बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरू ।**

❑

**१ ओंकार सतिगुरु प्रसादि।।**

# 8

**राग धनासरी बाणी भगत कबीर जी की**

**१ ओंकार सतिगुरु प्रसादि।।**

**सनक सनंद कहेस समानां।।**
**सेख नागि तेरो मरमु न जानां।।**
**संत संगति रामु रिदै बसाई।।१।।रहाउ।।**
**हनूमान सरि गरुड समानां।।**
**सुरपति नरपति नही गुन जाना।।२।।**
**चारि बेद अरु सिंम्रिति पुरानां।।**
**कमलापति कवला नहीं जानां।।३।।**
**कहि कबीर सो भरमै नाही।।**
**पग लगि राम रहै सरनांही।।४।।**

(पृ० ६६१)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु, सतिनाम श्री वाहिगुरु।

यह शब्द, कबीर साहिब द्वारा आया है। कबीर, ब्रह्मज्ञानी, बड़ा महापुरुष था। एक मत का यह आचार्य हुआ है, कबीर पंथियों का, और महायोगी और महापुरुष हुआ है और बड़ा योग्य महापुरुष हुआ है। उस पर जन कृपा हुई तो उसने वाणी उच्चारण की। उस द्वारा जो ईश्वरी वाणी का शब्द आया उसकी व्याख्या करते हैं। चल-

**रागु धनासरी बाणी भगत कबीर जी की**

धनासरी राम में, कबीर साहिब महाराज, कथन करते हैं -

**१ ओंकार सतिगुरु प्रसादि।।**

एक वह जो परमेश्वर है, जाति विजाति से रहित, असंग वह गुरु की

कृपा सें प्राप्त होता है। ब्रह्मज्ञानी गुरु की कुपा हो तो प्राप्त होता है।

**सनक सनंद महंस समानां।।**

ये चार हुये हैं संत-सनक, सनंदन, सनतृ कुमार और सनातन। 'महेश' नाम है महादेव का और 'समाना' उनके समान महापुरुष बख्शे हुये सारे।

**सेख नागि तेरो मरमु न जानां।।**

शेषनाग जो तेरा हर समय नया सिमरन करता है, इन सब ने तेरा अंत नहीं जाना। तू बेअंत है। बेअंत का अंत कोई जान ीाि नहीं सकता। यदि कोई अंत जान ले फिर वह बेअंत का अंत कोई जान ही नहीं सकता। यह कहने का मतलब है और इतने बड़ों का दृष्टांत दिया, इसका अर्थ है कि हे परमेश्वर ! तुम बेअंत हो।

***महिमा नही जानहि बेद।। ब्रहमें नहीं जानहि भेद।।***

***अवतार न जानहि अंत।। परमेसर पराब्रहम बेअंतु।।*** (पृ० ८६४)

वह बेअंत है, यदि उसका कोई अंत कह दे तो बेअंत कैसे रहे? इसलिये हे परमेश्वर ! तुम बेअंत हो।

**संति संगति रामु रिदै बसाई।।रहाउ।।**

कहते यदि तुम राम को अपने हृदय में बसाना चाहते हो तो संत की संगत किया कर। 'संत' नाम है ब्रह्मज्ञानी का।

**ब्रहम गिआनी कउ खोजहि महेसुर।।**

**नानक ब्रहम गिआनी आपि परमेसुर।।**

ब्रह्मज्ञानी संत का संग करना, उसके संगति से तुम परमेश्वर को अपने हृदय में प्रकट कर सकता है।

**हनुमानि सरि गरुड समानां।।**

हनुमान एक बड़ा महापुरुष, भक्त, योग्य हुआ है जिसने अपने सारे शरीर में रोम-रोम में राम राम लिखा दिखा दिया, यह लम्बी कथा है। और गरुड़ एक बड़ा महापुरुष हुआ है जिसको 'विष्णु वाहन' मानते है। उनके समान भी चाहे हो जाओ।

**सुरपति नरपति नही गुन जानां।।**

सुरपति देवताओं का पति इन्द्र, नरपति जो मनुष्यों के राजे जो बड़े हैं इन्द्र मालिक, उन्होंने भी तेरा रहस्य नहीं जाना आज तक।

**चारि बेद अरु सिंम्रिति पुरानां।।**

**चार वेद, सत्ताईस स्मृतियां और अठारह पुराण।**

**कमलापति कवला नहीं जानां।।**

कमला का पति श्री विष्णु भगवान एवं लक्ष्मी उसकी पत्नी। उस लक्ष्मी ने भी उसका भेद नहीं जाना, उसको भी पता नहीं, यदि पता होता तो वह कथा में लिखा हुआ है, वह भगवान् को पूछती है तुम सबको भोजन देते हो प्रतिदिन ? कहते सब को देते हैं। उसने क्या किया एक डिब्बी लेकर उसमें कीड़ा को बंद करके और आठ पहर के पश्चात्, सोलह पहर हो जायेंगे तो पूछूँगी भगवान् को। और यदि इसको रहस्य मालूम होता तो इस प्रकार शंका क्यों करती? उसने अपने माथे पर तिलक लगाकर, चावल लगाते हैं हिन्दू मत में। वह चावल एक लगा रह गया उसमें। वह परमेश्वर को तो पता था इसका क्या संकल्प है। जब वह कीड़े को बंद करने लगी वह चावल की डिब्बी में गिर गया, उसमें बंद कर दिया, उसको कोई पता नहीं। सोलह पहर के पश्चात् वह पूछती है कि महाराज सब को दे दिया? वे कहते हाँ जी। कहे मेरे पास तो सोलह पहर का बंद किया हुआ कीड़ा था, तेरे विचार को देखते थे। जब तुमने संकल्प किया वह संकल्प तो हम देखते थे।

***दाना बीना साई मैडा नानक सार न जाणा तेरी।।***

(पृ० ५२०)

वह हमारे विचारों को तो परमेश्वर जानता है इसके विचारों को न जानता होता तो तुम्हारे पुण्य के विचार निकल जाते तो हानि हो जाती। कई पापों के निकल जायें, अन्याय हो जाये इसलिये -

***राखा एकु हमारा सुआमी।।***

***सगल घटा का अंतरजामी।।*** (पृ० ११३६)

वह सब के हृदयों का अन्तर्यामी है। जब यह तुमने विचार किया तेरी अँगुली को लगा दिया था एक तंदुल। जब तुम बंद करने लगी, वह पहले गिर गया, खोलकर देख ले। वह जब उसने खोला, उसने आधा खाया था, आध ा रहता था। यदि लक्ष्मी को पूर्ण्ज्ञ विश्वास होता तो वह परीक्षा क्यों लेती, इसलिये न लक्ष्मी को परमेश्वर का पता है और न ही किसी और को। वास्तविक तौर पर सही किसी को पता नहीं। जितनी वह बुद्धि देता है उतना

ही पता होता है। वैसे ही लोग पागलपन में फिरते हैं। बुद्धि तो परमेश्वर ने प्रदान करनी है।

*ब्रहम गिआनी से जन भये।।*
*नानक जिन प्रभु आपि करेइ।।* (पृ० २७२)

पंचम पातशाह कहते ब्रह्मज्ञानी तो वह होता है जिसको परमेश्वर आप करे। जो वैसे ही ब्रह्मज्ञानी बनकर लोगों को बताता फिरे वह तो पागल होता है, ऐसे ही धोखा देता है। उसने तो गलत किया काम। इसलिये उसका अंत नहीं जाना किसी ने, उनके मर्म को नहीं जाना। वास्तविकता को नहीं जाना परमेश्वर की पूरे तौर तो वह कृपा जैसी करेगा, उतना ही जीव को पदार्थ मिलेगा।

**कहि कबीर सो भरमे नाहीं।।**

कबीर कहता भाई भ्रम में न पड़ो एक काम जो मैं बताता हूँ वह करो। पढ़ आगे -

**पग लगि राम रहै सरनांही।।**
**बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरू ।**

❑

१ ओंकार सतिगुरु प्रसादि।।

## 9

### सोरठ महला ५ घर २।।

**मात गरभ महि आपन सिमरनु दे तह तुम राखनहारे।।**
**पावक सागर अथाह लहरि महि तारहु तारनहारे।।१।।**
**माधौ तम ठाकरु सिरि मोरा।।**
**ईहा ऊहा तुहारो धोरा।।रहाउ।।**
**कीते कउ मेरै संमानै करणहारु त्रिणु जानै।।**
**तम दाता मागन कउ सगली दानु देहि प्रभ भानै।।२।।**
**खिन महि अवरु खिनै महि अवरा अचरज चलत तुमारे।।**
**रुड़ो गूड़ो गहिर गंभीरो ऊचौ अगम अपारे।।३।।**
**साधसंगि जउ तुमहि मिलाइओ तउ सुनी तुमारी बाणी।।**
**अनदु भइआ पेखत ही नानक प्रताप पुरख निरबाणी।।४।।**

(पृ० ६१३)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बालो सतिनाम श्री वाहिगुरु, सतिनाम श्री वाहिगुरु।

एक बात सुन ले व्यास कहता शुकदेव को कि तू जनक के पास जा। उसको पता था कि मेरे पास तो अब श्रद्धा है नहीं। जनक के जायेगा, यदि श्रद्धा होगी, तो जायेगा, वहां इसका उद्धार हो जायेगा। उसने सत् वचन (हाँ) कर दिया और जनक के द्वार पर गया, और जनक में योग एवं ज्ञान दो चीजें थीं। योग सर्वज्ञता को पैदा करता है और ज्ञान जन्म-मरण को काटता है, और उसको पीले ही पता लग गया कि शुकदेव ने आना है, उसके अन्तःकरण में त्याग का अहंकार है, मुझे वह राजा समझता है, प्रवृत्ति में उलझा हुआ समझता है। इसलिये मैं उसका पहले अहंकार तोड़ूँगा तो जाकर उसको ज्ञान होगा। व्यास का तात्पर्य इस बात से यह है-उसने द्वार बंद कर दिया कि इस द्वार के सामने आकर खड़े होगा नंगा, उसके एक कोपीन ही

होगी और जो भी यहाँ पत्तलों पर भोजन करे सके सिर पर मारें।

*जूठन जूठि पई सिर ऊपरि खिनु मनूआ तिलू न डुलावैगो।।*

(पृ० १३०६)

लेकिन उसने क्षणमात्रा भी अपना मन विचलित न किया, वह अपनी बात पर खड़ा रहा था ठीक। उसने पूछा क्या अवस्था है? कहते उसकी अवस्था में कोई फर्क नहीं पड़ा। जनक कहता इसको स्नान करा कर बहुत अच्छी तरह, मेरे पास लाओ। वह लाया गया। आता हुआ उसके पास एक तुंबी थी। उसमें कोपीन थी, वह ड्योड़ी के आले में रख आया, बई – वापसी पर उठा लेंगे। लेकिन जनक ने अपने योगबल से आग लगा दी और उसको चिंता हो गई। जब उसने बहुत कहा बई आग लग गई। उसने कहा आत्मा नहीं जलने वाला जनक का, वह अटल, अजर, अमर है। जब उसके हृदय में संकल्प आया कि मेरी तुंबी न जल जाये। जनक ने कहा तेरी तो संसार में कोई सत्ता है नहीं। उसको पता लग गया, वह चरणों में गिर पड़ा तो उसने शुकदेव को ज्ञान का उपदेश दिया। 'आत्मा' नाम अपने आप का है 'आत्मा' नाम चेतन का, आत्मा, 'दाना बीना याई मैंडा है'। आत्मा वह चीज है जो अपन आप है। यह ग्रन्थों में निर्णय किया हुआ कि आत्मा कभी किसी को परोक्ष नहीं हुआ आज तक। आत्मा कभी छिपा नहीं किसी का भी, यदि आत्मा छिप जाये, परोक्ष हो जाये तो फिर विचार जो हैं उठते थोड़े ही। वे विचार संकल्प-विकल्प उनको किसके साथ देखें? यह हर समय रहने वाले नहीं। ये जड़ हैं। यह कभी प्रत्यक्ष भी नहीं हुआ। कभी आपके सामने भी नहीं आया आत्मा। सामने आपके तीन गुणों को और पाँच तत्त्वों की वस्तु आयेगी चाहे माया की हो, चाहे अविद्या की हो, चाहे प्रतिदिन तमो, सतो की हो, चाहे पाँच तत्त्व हों, यही सामने तुम्हारे आती है। आत्मा तो अपरोक्ष है।

**यत् साक्षात् अपरोक्ष पारब्रह्म।।**

उपनिषद् के बीच श्रुति है, जो साक्षात्कार अपरोक्ष पारब्रह्म है, वह त्रिपटी का ज्ञाता है। त्रिपटी का विषय नहीं होता। त्रिपुटि, यह देखो यह त्रिपटी है कि वस्तु ळै। विषय वृत्ति यहां से उठी इसके आकार हुई। जहां से उठी वह अन्तःकरण है और तीनों चीजे सतों गुण का कार्य अन्तःकरण, वृत्ति रजोगुण को और तमोगुण का आभास। यह त्रिपटी है, ये तीनों चीजें हैं, तीनों

चीजों को देखने वाला वह आप परमेश्वर है। कोई ऐसी त्रिपुटी नहीं जो परमेश्वर को दिखाई न दे। दाना बीना चेतन का, न दिखे। वह आप अपरोक्ष है, तुम अपने भीतर भी देखते हो, कोई विचार आपके भीतर छिपा हुआ नहीं। चाहे आप अपने विचारों को मुझ से छिपा लोगे, मैं अपने विचारों को तुम्हारे से छिपा लूँगा लेकिन परमेश्वर से तो नहीं कोई छिपा सकता यदि परमेश्वर से छिपा सकता, उसका विचार लिखा ही न जाये। इसलिये हमें घाटा पडत्रता है। इसका आपा ही वास्तविक चेतन है। उसको हम छिपा समझते हैं, छिपा हुआ समझते हैं, कहीं और समझते हैं, और जो देखने वाला पुरुष है, वही हमारे अन्तःकरण का साक्षी है। बिना पूर्ण योग के ज्ञान नहीं। पुरुष ने तुम्हारे अन्तःकरण के जो विचार हैं उनको बदल नहीं देना, तुम्हारे कर्म भी उसने बदल नहीं देने। तुम्हारे कर्म को एक ही बदल सकती है, वह एक वस्तु है। वह कौन सी है। अब पढ़ो –

**मात गरभ महि आपन सिमरनु दे तह तुम राखनहारे।।**

अपना सिमरन परमेश्वर ने कृपा करके माँ के गर्भ में दिया अज्ञैर फिर उसका रक्षक हो गया। रक्षा होती ही सिमरन वाले की है। जिसके पास सिमरन नहीं, उसका रक्षक ईश्वर नहीं होता। वह तो उपने विचारों के साथ चलता है। उसके विचार जितने आते हैं वे तो अहंकार सहित हैं। रमण जी ने बड़ा सुंदर लिखा है, बई पहला संकल्प इसका विचार जो है उसको अहंकार कहते हैं, ''मैं हूँ'' 'अब, मैं' को किसी के साथ तो लगायेंगे ही। उनको पूछो तुम कौन हो? मैं जट्ट हूँ, मैं ब्राह्मण हूँ, मैं विद्वान  हूँ, मैं योग्य हूँ। इसको परिच्छन्न अहंकार कहते हैं, इसको जीव कहते हैं। इसलिये जहां एक संकल्प उठा, वह आत्मा परिपूर्ण्ज्ञ है, वह दाना है, बीना है, साई है, द्रष्टा है। द्रष्टा कभी परोक्ष नहीं होता, यह नियम है। द्रष्टा ही तुम्हें ध्यान में आयेगा। नाम भी द्रष्टा में है। नाम ही –

***नउ निधि अंम्रितु प्रभु का नामु।।***
***देही महि इस का बिस्राम।।*** (पृ० २८३)

नव निधि को देने वाला, अमर करने वाला, एक परमेश्वर का नाम ही है। लेकिन है कहाँ ?

**देही महि इस का बिस्राम।।**

देह में बुद्धि का, वृत्ति का साक्षी होकर, द्रष्टा होकर।

*मुई सुरति बादु अहंकारु।।*
*ओहु न मूआ जो देखणहारु।।* (पृ० १५२)

वह द्रष्टा जन्म-मरण में नहीं आता, उसको ही नाम कहते हैं।

*नाम के धारे खंड ब्रहमंड।।* (पृ० २८४)

नाम भी उसी को कहते हैं। लेकिन इसको दृढ़ निश्चय नहीं हुआ कि मेरा अपना आप ही है। जिस दिन इसका पक्का दृढ़ निश्चय हो गया, इसके सब विचार, समस्त मोह, काम, क्रोध आदि समस्त वृत्तियां पीछे हट जायेंगी। इस करके वह है नाम और उस नाम का सिमरन दिया किसने? परमेश्वर ने कृपा करके वह मुझे माता के गर्भ में प्राप्त हो गया।

**पावक सागर अथाह लहरि महि।।**

यह असीम लहरों का जो सागर है - संसार रुपी बड़ा भारी। लहरें क्या होती हैं? जैसे तुम बाहर देखते हो, जब जल किसी जोहड़ का, टोबे का स्थिर हो, वायु आये, लहरें चलने लगती हैं और फिर जब वायु बंद हो जाये वह स्थिर हो जाता है। हमारे भीतर जितनी भी वासनायें हैं, कामनायें है, वह लहरें चलती हैं, जब यह आती हैं वायू? तो हमारे जो विचार हैं वे उस तरह ही हो जाते हैं। वह जो भीतर चेतन आत्मा था परिपूर्ण उस में एकाग्रता न हुई। एकाग्रता होती है समस्त विचारों का बंद हो जाना। वह एकाग्रता एक के साथ हो। मन के आगे, वृत्ति से आगे, एक ही हो, अन्य कोई न हो।

*एको जपि एको सालाहि।।*
*एकु सिमरि एको मन आहि।।*
*एकस के गुन गाउ अनंत।।*
*मनि तनि जापि एक भगवंत।।*
*एको एकु एकु हरि आपि।।*
*पूरन पूरि रहिओ प्रभु बिआपि।।*
*अनिक बिसथार एक ते भए।।*
*एकु अराधि पराछत गए।।*
*मन तन अंतरि एकु प्रभ राता।।*
*गुर प्रसादि नानक इकु जाता।।* (पृ० २८६)

बस ! जितना यह बदले, लेकिन एक नहीं बदलेगा उसी का जाप, उसी का सिमरन, वही तीनों कालों में व्यापक। लेकिन इसकी वृत्ति एक के आकार हो जाये। उसको 'एका' कहते हैं। वह एक कौन है ?

*एकम एकंकार निराला।। अमरु अजोनी जाति ना जाला।।*
*अगम अगोचर रुपि न रेखिआ।।*
*खोजत खोजत घटि घटि देखिआ।।* (पृ० ८३८)

वह सब के हृदय में एक है।

*ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।*
*भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारुढ़ानि मायया।* (गीता १८/६१)

वह सब हृदयों में एक है।

*क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्ट क्षेत्रेषु भारत।*
*क्षेत्र क्षेत्रज्ञ योर्ज्ञानं यत्रज्ज्ञानं मतं मम।*

(श्रीमद्भगवद्गीता १३/२)

वह क्षेत्रज्ञ एक है।

**क्षेत्रज्ञ चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत।**

वह सब शरीरों में हैं, सेसार में जितने महापुरुष आये, कोई प्रेमाभक्ति को लेकर आया, कोई ज्ञान को लेकर आया, कोई गुरु को लेकर आया, कोई सिमरन को लेकर आया और भगवान् कृष्णा ने गीता में एक स्थान पर कहा कि तुम किसी अन्य के आगे प्रार्थना न करना और मेरे आगे अरदास करना।

*सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।।*
*अहंत्वा सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।*

(श्रीमद्भगवद्गीता १८/६६)

मैं तेरा मोक्ष कर दूँगा और तेरे पाप काट दूँगा। वे इस लक्ष्य को लेकर ही कहते , वह शरीर को लेकर नहीं कहता। वह आत्मा को लेकर ही हता है। इसलिये जो बुद्धि में स्थित होकर बुद्धि को जानकर प्रकाश करने वाला बुद्धि रुपी गुफा में बैठा है।

बुद्धि रुपी गुफा में बैठा वह आत्मा, वह द्रष्टा, ज्ञाता, साक्षी ये सब उसके नाम हैं, वही व्यापक परिपूर्ण्ड्ड परमेश्वर है, उसका सिमरन, हे परमेश्वर! तमने मुझे दिया और गर्भ में तूने मुझे सिमरन के साथ जन्म दिया। यह अब

आप अपने भीतर विचार करो जब आपका मन एक स्थान पर टिका हुआ है, चाहे किसी भी वस्तु में टिका हो तब अन्य विचार आपके पास नहीं आयेंगे। जब कोई सुनायेगा तो सुनोगे क्या। जब एक का सिमरन इसको ईश्वर की कृपा से, परमेश्वर की कृपा से गुरु की कृपा से प्राप्त हुआ। फिर इसका मन वह जो लहरें हैं सागर की नाना प्रकार के विचार, उन सब को काटकर इसमें स्थित हो जाता है, लेकिन जब यह सिमरन करे, मन इसका एक से अलग न हो।

***साहिबु मेरा एको है। एको है भाई एको है।।*** (पृ० ३५०)

वह तो एक है।

***एकंकारु अवरु नही दूजा नानक एकु समाई।।*** (पृ० ६३०)

वह एक ही सब का स्वामी है। उसका सिमरन मुझे परमेश्वर की कृपा से माता के गर्भ में प्राप्त हुआ और इन सब से पार हो गया। चलें-

**तारहु तारनहारे।।**

हे मुक्तिदाता ! तू ही उद्धारक है। मुझे भी इस 'मैं' से मुक्त किया सिमरन द्वारा। सिमरन एक ऐसा साधन है। गुरु ग्रन्थ साहिब में लिखा है-

***सिमरि सिमरि नामु बारंबार।।***
***नानक जीअ का इहै आधार।।*** (पृ० २९५)

अन्य कोई साधान नहीं बताया। एक सिमरन एकमात्र साधन है, जो इसको जन्म-मरण के चक्कर से निकाल कर ले जाता है। यही संसार के महापुरुष उपदेश करते हैं कि भाई सिमरन न छोड़ना, सिमरन को न भूलना, सिमरन का परिपक्व हो जाना ही ज्ञान है।

***सभना जीआ का इकु दाता***
***सो मै विसरि न जाई।।*** (पृ० २)

वह जो समस्त जीवों का, चार प्रकार के प्राणियों का दाता है, उसको भूलना नहीं, उसको भूलना ही अज्ञान है और उसके सिमरन का पक जाना ही ज्ञान है।

**एक चित्त जिहि एक छिन धिआइओ।।**
**काल फास के बीच न आइअ।।**

यदि एक क्षण मात्र भी सिमरन परिपक्व हो जाये, इसको प्रत्यक्ष हो जाए

आत्मा का। जन्म-मरण कट जाये, दशमू पातशाह का महावाक् है। इसलिये अब अपने भीतर विचार कर लो। सिमरन ने मुझे इन लहरों से मुक्त किया, मेरे पर बड़ी भारी कृपा हुई। आप भी भाई सिमरन किया करो, पंचम पातशाह का तात्पर्य यह है -

**माधो तू ठाकरु सिरि मोरा।।**

हे मायापति ! तुम मेरे मालिक हो। ठाकुर मालिक को कहते हैं। सिर मोरे समस्त शिरोमणियों का शिरोमणि तुम हो मालिक मेरे, सब ो बड़ा। हे परमेश्वर ! तुम सब के मालिक हो और मेरा भी मालिक तू ही है।

**ईहा ऊहा तुहारो धोरा ।।रहाउ।।**

'धोरा' नाम है आश्रय का, बाँगर की बोली है, और यहाँ और वहाँ, लोक परलोक में, मुझे तो तेरा ही आसरा है, अन्य किसी का आश्रय नहीं है। यह निश्चय होना चाहिये है। लोक में भी तेरा आसरा है, परलोक में भी परमेश्वर तेरा ही आसरा है। लेकिन यदि हमें यह विश्वास होगा तो हम ऐसे कर्म क्यों करेंगे जो आजकल चले हुये हैं, फिर तो सब में परमेश्वर है। फिर तो सब एक हैं, जब संत एक हैं, जब संत की कृपा हो जाये, यह पंचम पातशाह का वाक् है।

*बिसरि गई सभ ताति पराई।।*
*जब ते साध संगति मोहि पाई।।*
*ना को बैरी नहीं बिगाना*
*सगल संगि हम कउ बनि आई।।*
*जो प्रभ कीनो सो भल मानिओ*
*एह सुमति साधू ते पाई।।*
*सभ महि रवि रहिआ प्रभु एकै*
*पेखि पेखि नानक बिगसाई।।* (पृ० १२६६)

अब तो कोई शत्रु या बिगाना रहा ही ना ! यह तो साधु उस संत महापुरुष रामदास द्वारा हमें यह कृपा प्राप्त हुई। सब में परमेश्वर दिखाई दिया।

*संत संगि अंतरि प्रभु डीठा।।*
*नामु प्रभू का लागा मीठा।।* (पृ० २६३)

उस संत के संग के साथ भातर परमेश्वर को देखा। परमेश्वर भीतर तुम्हारे अपना आप ही है। तुम्हारे जो वृत्ति पर आरुढ़ चेतन है, जो सब विचारों को, वृत्ति को, जो विचार उठते हैं, समस्त विचारों को देखता है, जिसके सम्बन्ध में गुरु साहिब ने लिखा है –

*नानक पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछाणिआ।।*

(पृ० १४४)

गुरुनानक देव कहते पारख वह आप है। मैं एक बार चला गया, एक पहाड़ की गुफा जैसी है, कुटिया है, वहाँ एक कबीर पंथी संत था। वह समीप नहीं था किसी को रहने देता। मैं भी चला गया, ब्रह्ममुहूर्त में हम गये थे। उसने सारी शक्ति लगा दी, पारखी के बिना कोई बात नहीं की, मैंने सोचा गुरुग्रन्थ साहिब में भी 'पारख' लिखा है –

*नानक पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछाणिआ।।*

(पृ० १४४)

और 'पारख तो आप है वह। अपने जितने खोटे खरे विचारों की परख यह आप कर सकता है और तो कोई परख करके बतायेगा नहीं। पारख यह है। पारख यह आप है। यह जो पारख आप है, वही इसका आपा है, आत्मा। और तो सत्य कोई है नहीं। जब सत्य एक है, यदि सत्य दो होते तो एक ईश्वर सत्य बना रहता और एक जीव सत्य बना रहता, लेकिन सत्य एक है। सत्य नहीं दो हो सकते। तीनों कालों में सत्य एक है। गुरु साहिब ने आरम्भ में ही लिख दिया –

आदि सचु जुगादि सचु।। है भी सचु नानक होसी भी सचु।।

यह सत्य का प्रतीक है कि 'एक' सत्य है, यह सत्य जो है, इसका आत्मा है। सत्य कौन है? आत्मा। सत्य कौन है ? परमेश्वर। सच कौन है ? ज्ञाता। यह सत्य अपना आप नहीं है? लेकिन इसको अपपने आप का प्रत्यक्ष नहीं हुआ। प्रत्यक्ष क्या ? दृढ़ निश्चय नहीं हुआ। जब सह सिमरन करता, इसका मन संसार के विचारों को लेकर अन्य स्थान पर चला जाता है। कई विचार इसके भीतर आते हैं, मान के, अपमान के, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के । इन सभी विचारों को काटकर इसकी सत्य के साथ वृत्ति जुड़ गई। सत्य तो एक ही है, सत्य दो तो नहीं है। और सत्य व्यापक है, और जो व्यापक

है, वह कहीं नहीं?

*घट घट में हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।।*
*कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि।।*

(पृ० १४२७)

वह सब के हृदयों में सत्य एक ही है। वह सब कुछ अपना आप है, सत्ता दो नहीं। जब इसको उस सत्य की प्राप्ति हो गई तो सह सिमरन द्वारा परमेश्वर को मिल जायेगा। सत्य ने ही परमेश्वर का सिमरन करना है।

*किरतम नाम कथे तेरे जिहबा।।*
*सति नामु तेरा परा पूरबला।।* (पृ० १०८३)

'सतिनाम' तो परा वाणी से भी 'पूर्बला' है। वाणियाँ चार हैं

१. बैखरी २. मध्यमा ३. पश्यन्ति ४. परा।

परा जो हृदय में से उठती है। उस परा से भी पूर्व सत्य था।

*आपीनै आप साजिओ आपीनै रचिऔ नाउ।।*
*दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ।।* (पृ० ४६३)

'आपीनै' अपने आप से निर्मित किया। अपना आप बनाया। ''दुयी कुदरति साजीऐ'' और दूसरा कौन है? नाम। पहले कौन है, 'एक' और दूसरा है 'नाम', तीसरी है प्रकृति और चौथा है 'द्रष्टा'।

वह जो 'एक' था, वही स्वयंभू है। और जो स्वयभू है, वही एक है, और बीच में कोई विशेषण नहीं। इसलिये वह स्वयभू है। वह परमेश्वर है, उसका सिमरन जीव को भाई पार कर देगा।

**कीते कउ मेरै संमानै।।**

यह बड़ी भारी गलती है, 'कीता' कौन है? जीव जो फँसा हुआ है। जो एक संकल्प के साथ बना है, 'मैं हूँ', मैं ब्राह्मण हूँ, मैं क्षत्रीय हूँ, मैं वैश्य हूँ। 'कीता' को जीव कहते हैं, इसको परमेश्वर के समान मानना, यह बड़ी भारी गलती है, जीव को परमेश्वर के साथ मानना, यह बड़ी भारी गलती है लेकिन चेतन को चेतन के साथ मानना गलती नहीं है।

*हरि हरि जन दुई एक है बिब बिचार कछु नाहि।।*
*जल ते उपज तरंग जिउ जल ही बिखै समाहि।।*

(बिचित्र नाटक)

यह तो एक 'करता' है लेकिन जीव जो है वह तो एक नहीं। गुरु जो है वह तो कहता -

***मैं हों परम पुरख को दासा।।***
***देखन आयो जगत तमासा।।*** (बिचित्र नाटक)

जीव ने तो यहाँ खड़े होकर बोलना है, लेकिन जब इसको अपने स्वरुप का ज्ञान हो गया तब -

***हरि हरि जन दुई एक है बिब बिचार कछु नाहि।।***
***जब ते उपज तरंग जिउ जल ही बिखै समाहि।।***

(बिचित्र नाटक)

दोनों महावाक् दशम् पातशाह के हैं, लेकिन उन में विरोध नहीं है। उध ार जीव प्रति है और यह ब्रह्म ज्ञानी प्रति है, ज्ञाता प्रति है। इसलिये आप यह बताओ, वेद के तीन काण्ड हैं - ज्ञान, उपासना और कर्म काण्ड। अब इन तीनों को एक तो आप कर नहीं सकते और जहाँ जीव खड़ा होगा वहाँ उसे पकड़ना है। यदि कर्म में खड़ा होगा तो वहाँ से पहले आप निष्काम कर्मों में लाओगे, सकाम में से। यदि निष्काम कर्मों में खड़ा होगा तो उपदेश तुम उसे उपासना का दोगे और यदि उसका सिमरन उपासना में खड़ा होगा तो ज्ञान में लाओगे। इसको तो उपदेश मिलना है गुरु का। उसने देखना है, यह कहाँ खड़ा है? उससे अगला उपदेश देना। जीव प्रायः सकाम कर्मों में होता है। उसको निष्काम कर्मों का उपदेश देना कि फलाने, ने धन्ना ने ऐसे किया, देखो क्या गति हुई, उसने क्या किया और उसको वहाँ लाना, अब निष्काम कर्मों में आ गया। उसे कहना कामना तो प्रतिबंधक है, तुम निष्काम होकर सेवा करो।

***सेवा करत होइ निहकामी।।***
***तिसु कउ होत परापति सुआमी।।*** (पृ० २८६)

इस प्रकार उसको ऊँचा करना। इसको ज्ञान आ जाना, ज्ञान तो कोई दूसरी वस्तु नहीं, ज्ञान तो अपना आप है।

**करणहार त्रिणु जानै।।**

तुमने उसे तृण के समान जाना, जो 'कर्ता पुरखु' था। उसको तो तुच्छ जाना और आप अहंकार के साथ कुछ बनकर बैठ गया। आप कौन है?

इसको यह नहीं पता। एक रमण ऋषि हुये, उन्होंने यह बात बताई। एक उसे पूछता, आकर कहता जी, आप मुझे उपदेश दो। कहा कि तुम कौन हो? पहले तुम इस पर विचार करना - बई - मैं कौन हूँ? तुम मन हो कि बुद्धि हो। कि शरीर हैं कि इन्द्रिय हैं, तुम हो कौन? यह सब विचार करना जो है वास्तविक चेतन, जो बुद्धि में आरुढ़ हो स्थित है, उसको चेतन कहते हैं। पर क्या है ?

**एक समें ही भान होइ साखशी अरु आभास।।**
**दूजो चेतन को विशे साखशी स्वयं प्रकास।।**

(निश्चलदास 'विचार सागर' ४/११६)

**बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरू ।**

❑

१ ओंकार सतिगुरु प्रसादि।।

**10**

---

**गउड़ी महला ५।।**

**पउणै पाणी अगनी का मेलु।।**
**चंचल चपल बुधि का खेलु।।**
**नउ दरवाजे दयवा दुआरु।।**
**बुझु रे गिआनी एहु बीचारु।।१।।**
**कथता बकता सुनता सोई।।**
**आपु बीचारे सु गिआनी होई।।१।।रहाउ।।**
**देही माटी बोलै पउणु।।**
**बुझु रे गिआनी मूआ है कउणु।।**
**मूई सुरति बादु अहंकारु।।**
**ओहु न मूआ जो देखणहारु।।२।।**
**जै कारणि तटि तीरथ जाही।।**
**रतन पदारथ घट ही माही।।**
**पड़ि पड़ि पंडितु बादु बखाणै।।**
**भीतरि होदी वसतु न जाणै।।३।।**
**हउ न मूआ मेरी मुई बलाइ।।**
**ओहु न मूआ जो रहिआ समाइ।।**
**कहु नानक गुरि ब्रहमु दिखाइआ।।**
**मरता जाता नदरि न आइआ।।४।।** (पृ० १५२)

---

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बालो सतिनाम श्री वाहिगुरु, सतिनाम श्री वाहिगुरु।

यह पहली पातशाही का शब्द है इसमें एक ही बात बतानी है -

**हउ न मूआ मेरी मुई बलाइ।।**
**ओहु न मूआ जो रहिआ समाइ।।**

यह बात जीवों को समझानी है, बतानी है लेकिन कैसे बतानी है ?

**मूई सुरति बादु अहंकारु।।**

**ओहु न मूआ जो देखणहारु।।**

जो देखने वाला है, वह कभी मरने वाला नहीं होता। 'दाना बीना' कभी मरा नहीं आज तक और न उत्पन्न हुआ है। जो चीज पैदा होती है, वह मरती भी है।

*न जायते म्रियते वा कदाचिन्।।*

*नायं भूत्वा भविता व न भूयः।।*

*अजो नित्यः शाश्वतो ऽयं पुराणों।।*

*न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।* (गीता २/२०)

यह शरीर परिवर्तित होता है, उसका परिवर्तन नहीं होता। वह अजर अमर वस्तु है। उसके सम्बन्ध में गुरु साहिब ने एक शास्त्री पंडित को इसमें उपदेश करना है, उसका पुत्र गुजर गया था। बड़ा शोक था उसको। इसलिये उसको उपदेश किया कि शोक तेरा करना नहीं बनता। यह देखने वाला कभी जन्मता मरता नहीं।

*द्रिसटिमान है सगल मिथेना।।* (पृ० १०८३)

जो देखने में आता है, वह रता नहीं है। जो देखने वाला है, वह जन्म तरण वाला नहीं है। जो देखने में आता है, वह सब मिथ्या झूठ है। यह देखने वाला अविनाशी है, अजर है, अमर है, व्यापक है। चल-

**गउड़ी महला १।।**

गउड़ी राग में पहली पातशाही महाराज श्री गुरुनानक देव जी कथन करतें हैं - बोलो सब मिलकर श्री गुरुनानक देव महाराज, धन्य श्री गुरु नानक देव महाराज -

**पउणै पाणी अगनी का मेलु।।**

यह पंच तत्वों का मेल हुआ - आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी। यह मेल होकर स्थूल शरीर बना पांच तत्वों का। चलें -

**चंचल चपल बुधि का खेलु।।**

इसमें एक चचंल बुद्धि भी है जिसको मन भी कहते हैं। यह सब कर्म इसने आप किये। यह खोल इसे स्वयं ही देखना पड़ा। किसी के कर्म किये

कभी दूसरे को नही मिले।

*जेहा बीजै से लुणै करमा संदड़ा खेतु।।* (पृ० १३४)

और

*करमा उपरि निबड़ै जे लोचै सभु कोइ।।* (पृ० १५७)

यह समस्त जो ब्रह्मांड है यह कर्म की बात है।

*करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु।।* (पृ० २)

कर्मों के द्वारा तुम्हें सम्मान मिलेगा - जाति, आयु, भोग एवं शरीर और जब उस परमेश्वर की कृपा हो जायेगी तो तुम्हारी मोक्ष हो जायेगी। मोक्ष रुप तुम पहले ही हो। तुम्हें अपनी दृष्टि को बदलना है और जितनी भी द्रष्टि है, तुम आप देखते हो, द्रष्टा जो है इसकी दृष्टि आज तक कभी लुप्त नहीं हुई। द्रष्टा की दृष्टि नित्य होती है। इसलिये तुम देखते हो जहां भी आपका ध्यान जाता है वह त्रिपुटी बदलती रहती है लेकिन जो वह त्रिपुटी को देखने वाली दृष्टि है वह चेतन है। वह कभी बदला नहीं आज तक। वह द्रष्टा है, वह 'दाना बीना' है, वह व्यापक है, वह पारख है। इसलिये भई! उस तुम्हारी चंचल बुद्धि ने सकाम कर्म किये तब तुझे तेरे सामने बनाया हुआ संसार दिखाई दिया।

**नउ दरवाजे दसवा दुआरु।।**

नौं दरवाजे ने ये गोलक। सात ऊपर हैं, दो आंखें, दो नथुने, दो कान और एक मुख और दो नीचे हैं और दसवां द्वार है गुरु के पास। वह गुरु द्वारा प्राप्त होता है।

**बुझु रे गिआनी एहु बीचारु।।**

हे ज्ञानी! उस पंडित को कहते हैं, इस विचार को तुम बताओ। इनमें से कौन मरा और कौन पैदा हुआ, किसके विकार, और चेतन तो निर्विकार है।

**असंगों ही पुरुषा अ संगों नहि जायते।।** (उपनिषद)

असंग ही है आज तक। असंग का आजतक सम्बन्ध भी नहीं हुआ कभी, न होगा। और तम तो वह जो वस्तु है न, उसमें तेरी भ्रांति हो गई, तूने अध यारोप कर लिया। उसने हिलना डुलना नहीं। माया परिणामी है, चंतन नित्य है। परिणाम माया का न हो तो भी उपयुक्त नहीं है, यह तो परिणाम होना ही है, तीन शरीर माया के हैं।

*त्रैगुण्य विषया वेदा निस्त्रै गुण्यों भावार्जुन।।*
*निर्द्वन्दो नित्य सच्वस्थो नियोर्गक्षेत्र आत्मवान्।* (गीता २/४५)

तू नियोग क्षेत्र हो जा, चिंता छोड़ दे। इसलिये तुझे वह परमेश्वर प्राप्त हो जायेगा। वेद ने तीन गुणों तक जाना है। जब आगे से उसने कहा इसके आगे क्या? कहता - नेति-नेति। मुझे नहीं पता और तू देख मुझे नहीं पता। इसलिये वह परमेश्वर परिपूर्ण है, सबमें व्यापक है, वह जन्म मरण से रहित, नारायण है उसका कभी जन्म मरण नहीं हुआ पंडित! यह तू चिंता ही छोड़ दे। यह तुम्हारा ही किया हुआ था तुझे ही प्राप्त होना था। तू प्रभु इच्छा में स्थित हो जा। यह परमेश्वर का हुक्म था।

**हुकमै अंदरि सभु को**

जितने संसार में हैं, सब हुक्म में हैं, हुक्म से परे काई नहीं है।

*बाहरि हुक्म न कोइ।।*
*नानक हुकमै जे बुझे त हुउमै कहै न कोइ।।* (पृ० १)

यदि हुक्म को यह जान ले तो अहंकार न करे कभी। इसलिये अहंकार से रहित है यह। यह परमेश्वर है। जहां अहंकार नहीं होता वहां परमेश्वर होता है। गुरु ग्रन्थ साहिब रुचि से पढ़ोगे तो कही तुम्हें स्वयं ही आ जायेगा भई जहां सिमरन पूर्ण होता है वहां अहंकार गिर जाता है। आगे अनाहत एक रस हो जाता है। नाम धुन के पश्चात लौ लगती है। लौ तो अविनाशी पद की प्राप्ति है इसलिये भई जब अहंकार निवृत्त हो जाये तो शुद्ध ब्रह्म रह जाता है। इसलिये अहंकार जो है यह अध्यस्त है, झूठा है, तुम्हारा कल्पित है, जाति का, धर्म का। जो आपने कल्पना की उसी में तुम पड़ गये। तुमने अपने ध र्म की कल्पना की, स्वयं ही जाति कल्पना की, वह समस्त कल्पना अध यारोपित है। लेकिन तुम्हें पक्का पता नहीं था भई! यह अध्यारोप है ओर सत्य एक ही है, कौन ? परमेश्वर।

*एकम एकंकार निराला।। अमरु अजोनी जाति न जाला।।*
*अगम अगोचरु रुपि न रेखिआ।।*
*खोजत खोजत घटि घटि देखिआ।।* (पृ० ८३८)

वह तो सबके हृदयों में साक्षी रुप, द्रष्टा रुप में बैठा है। वह कभी बढ़ने घटने वाला नहीं।

*न घाट है न बाढ है न बाढ घाट होत है।*

(अकाल उस्तति्)

वह बढ़ने घटने वाली वस्तु नहीं, वह अटल है, नित्य है, अविनाशी है, निर्विकार है। चलें -

**कथता बकता सुनता सोई।।**

जो कथन करता है, कथनी के साथ लगकर जो कविता आदि करता है, कानों से चुनता है, वह वही है, वह तुम्हारे हृदय में भी साक्षी रुप होकर बैठा है। द्रष्टा रुप होकर बैठा है, पारख रुप होकर बैठा है। वही व्यरपक चेतन है, उसको आत्मा कहते हैं।

*अंतर आतमै ब्रहमु न चीनिआ।।*

*माइआ का मुहताजु भइआ।।* (पृ० ४३५)

इसने, जो इसके भीतर आत्मा था, उसको व्यापक नहीं जाना क्योंकि यह माया त्रिपुटी के अधीन हो गया। जो त्रिपुटी उठती है उसके साथ यह मिल जाता है। मैं ही इस बात का भोगता हूँ, मैं ही कर्ता हूँ। तुम्हें पता है भई विषयों के पारायण इन्द्रियां होती हैं, इन्द्रियों के साथ फिर मन जुड़ता है, वह बुद्धि जुड़ती है। यह असंग तो नहीं जुड़ता। असंग तो निर्विकार है, लेकिन तुम को विश्वास नहीं आया भई, मैं निर्विकार, अविनाशी हूँ, असंग हूँ, यह पक्का विश्वास नहीं हुआ। यह तो अज्ञान है और कोई अज्ञान नहीं है। इसको अज्ञान कहते हैं इसलिये इसको बोध नहीं हुआ। इसलिये भाई वह 'सो' जो है वही कथनी के साथ करनी के साथ वही सगुण इन्द्रियों के साथ। वह समस्त त्रिपुटियों के साथ जुड़ा सा प्रतीत होता है, पर जुड़ा कभी है नहीं। वह -

*असंगो ही पुरुषा असंगो नहि सज्यते।।* (उपनिषद्)

वेद कहता वह संग वाला हुआ ही नहीं कभी वह असंग है, निर्विकार है।

**आपु बिचारे सु गिआनी होई ।।१।। रहाउ।।**

यह उस 'सो' को जब अपना आप विचार ले तो वह ज्ञानी हो जायेगा। 'सो' जो व्यापक है, वही द्रष्टा रुप होकर इसकी वृत्ति में बैठा है। वही साक्षी रुप होकर इसके हृदय में बैठा है। वही पारख रुप में आगे आप बैठा है।

*नानक पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछाणिआ।।*

(पृ० १४४)

और पारख तो आप ही है वह। जड़ तो कभी पारख हुआ ही नहीं आज तक। त्रिपुटी कभी पारख नहीं हुई। वह त्रिपुटी का साक्षी जो है वह व्यापक चेतन है, वह आपा है, व्यापक है। वह कहते जो यह विचार ले वह ज्ञानी हो जायेगा लेकिन उसके निश्चय में थोड़ा भी अन्तर न हो।

**संसय विपरजै न होएं।।**

यह ग्रहण कर ले। अविद्या के तीन परतें लिखी हैं अग्रहण, विपर्यय और संशय। और कोई अविद्या वस्तु ही नहीं है। तीनों परतों से जो परे है, इन तीनों का प्रकाशक जो अविद्या का भी प्रकाशक है उसका नाम चेतन है, परमेश्वर है, व्यापक है, उसको द्रष्टा कहते हैं। वह जो अपना आप विचार लेगा, वह ज्ञानी हो जायेगा।

**देही माटी बोलै पउणु।।**

कहते इसके भीतर कौन बोलता है? वह कहता देह है मिट्टी की। भीतर है पवन, बोलती है मशीनरी। वह कोई व्यक्ति नहीं बैठा बोलता। यह बात मेरी एक बड़े महापुरुष के साथ हुई। मैंने कहा ध्वन्यात्मक शब्द खुल जाता है ? कहते न ! नहीं खुलता। मैंने कहा जो कानों में उँगलियाँ ऐसे करते हैं ? कहता गलत करते हैं।

***प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ।।***

***अंम्रित नामु रिद माहि समाइ।।*** (पृ० २६३)

प्रभु के सिमरन से यह सब कार्य हो जाता है। जब आपका सिमरन पूरा हो जायेगा, आपकी ध्वनि आत्मिक शब्द अपने आप ही खुल जायेगा। किसी ने नहीं खोलना। यह परमेश्वर की एक धर्म नीति है। 'प्रभ कै सिमरनि' मन का मल चला जाता है। इसलिये वह अमर करने वाला जो नाम है, परमेश्वर है, वह तुम्हें अपने आप प्राप्त हो जायेगा। जो भी आप संसार का काम करेंगे, एक विचार कर लेना कि द्रष्टा तुम होगे। चाहे शब्द को सुनोगे तो भी द्रष्टा तुम होगे। किसी का ध्यान करोगे तो भी द्रष्टा तुम होगे। यह तो एक नियम हो गया, द्रष्टा तुम्हें ही बनना पड़ेगा। क्योंकि वृत्ति में जो आरुढ़ चेतन आपका 'आपा' है, द्रष्टा तो उसने बनना। अन्य तो कोई द्रष्टा है नहीं, पर तुम और ही किसी झगड़ों में पड़ जाते हो। तुम अपने आप को सही करो

सब से पहले। वह कबीर को कहा पागल है कहता –

*जो बउरा जो आपु न पछानै।।*

*आपु पछानै त एकै जानै।।* (पृ० ८५५)

कहता पागल तो वह होता है, जिसने अपना आप नहीं पहचाना। अज्ञानी पागल होते हैं। कहते जिन्होंने पहचान लिया –

**आपु पछानै त एकै जानै।**

फिर तो एक को जान लेगा, एक का ज्ञाता हो जायेगा और जो सब के हृदयों में है, उसका ज्ञाता हो जायेगा।

**बुझु रे गिआनी मूआ है कउणु।।**

यह पंडित को कहते हैं हे ज्ञानी ! तुम बने हुए ज्ञानी हो बताओ अब मरने वाली कौन सी वस्तु है इसकी ? हमें बताओं कौन सी मरने वाली है? पांच तत्त्वों में से कोई मरने वाला है और वह जो तेरा कारण शरीर है अज्ञान का, उसमें से कोई मरने वाला है? वह तो जड़ है पहले, वह तो पहले ही मरा हुआ है। वह जो चेतन, द्रष्टा वह कभी मरने वाला है ? और अब हम आपको पूछते हैं बई मरने वाली कौन सी वस्तु है? गुरु साहिब कहते पंडित को बताओ हमें।

**मूई सुरति बादु अहंकारु।।**

वे कहते मरेगी तुम्हारी सुरत, बदलेगी अहंकार वाली। वह निश्चल दास लिख गया 'विचार सागर' में –

*एक समें ही भान होइ साक्षी अरु आभास।।*

*दूजों चेतन को विषय साक्षी स्वयं प्रकाश।।*

(निश्चलदास, विचार सागर ४/११६)

वह कहता एक ही समय में जल में जल का चन्द्रमा और वास्तविक चन्द्रमा होंगे तो मुझे दिखाई देता। सूर्य होगा तो सूर्य का प्रतिबिम्ब तुम्हें जल में दिखाई देता। वह एक समय होगा यह नियम है, इसलिये जिसको तुम एक चेतन जीव कहते हो और परमेश्वर एक ही समय में होते हैं। दूसरा कौन होता है वृत्ति सहित आभास, जिसको जीव कहते हैं वे चेतन के विषय है, कहे जी चेतन किसके विषय हैं ? चेतन स्वयं प्रकाश, वह तो स्वयं सिद्ध और स्वयं प्रकाश है।

**मूई सुरति बादु अहंकारु।। ओहु न मूआ जो देखणहारु।।**

इसलिये वह मरने वाला नहीं है। यह मशीनरी के भीतर से आवाज आती है, यह कोई परमेश्वर की आवाज नहीं होती। यदि यह परमेश्वर की आवाज है तो लिख लो, ग्रन्थ बनालो तुम। यह (गुरु ग्रन्थ साहिब) परमेश्वर की आवाज है, यह आपके सामने लिखी पड़ी है। ऐसे जैसे उलझनों में न उलझा करो कभी तुम। ठीक वास्तविक चीज को जानो।

**मूई सुरति बादु अहंकारु।।**

व्यर्थ जो तुमने अहंकार किया हुआ है, जाति का, धर्म का, शरीर का, फलां फलां विद्या का, ये निष्फल है सब और तेरी सुरत भी। क्यों? यह परतः प्रकाश है, स्वयं प्रकाश तो तुम ही हो, तेरे बिना संसार में कोई स्वयं प्रकाश नहीं। जब वह मण्डन मिश्र के पास गया शंकराचार्य काश्मीर में श्रीनगर। उसके बाहर लिखा था 'परतः प्रकाश', न्याय का बड़ा भारी पंडित था और शंकराचार्य ने 'स्वतः प्रकाश' लिखा। वह जब जाने लगा कहता कौन है लिखने वाला? वह कहता मैं हूं। कहता सिद्ध करेगा? वह कहता हाँ करुगाँ। चल शास्त्रार्थ कर। कोई उनको मध्यस्थ न मिले। शंकराचार्य ने कहा यदि कोई मध्यस्थ न मिले तो तुम्हारी जो धर्म पत्नी है उसको मध्यस्थ बना लो। वह कहता तुम्हें स्वीकार है? वह कहता हां, मुझे स्वीकार है। जब साक्षी पर पहुंचे 'परतः प्रकाश' में सारे चले गये 'न्याय' जितने शास्त्र थे। 'स्वतः प्रकाश' तो साक्षी का था तो उन्होंने कहा कि तुम 'स्वतः प्रकाश' हो कि नहीं ? वह हार गया और जब उसने अपनी घरवाली धर्मपत्नी को पूछा बता कहती पति जी हार तो तुम गये अब देख लो। तो फिर वह मण्डन मिश्र शिष्य हुआ शंकराचार्य का, उसका नाम सुरेश्वराचार्य लिखा है। उसने बड़े ग्रन्थ लिखे हैं।

इसलिये वह परतः प्रकाश है सारा, और स्वतः प्रकाश जो तुम्हारी वृत्ति में ज्योति है, चेतन वह है। वह जो निश्चलदास ने लिखा है–

***चेतन समान न मैं विरोधी ता को साधक है।।***
***बिरती में आरुढ़ व विरोधी विरती जानिऐ।।***

(निश्चलदास विचार सागर ५/१५४)

जो तुम्हारी वृत्ति में स्थित है चतन, वह स्वयं प्रकाश है, वह स्वतः सिद्ध

है, वह तेरा आपा है और तेरा आपा काई नहीं। वही

*क्षेतज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत।।* (गीता - १३/२)

वह सब क्षेत्रों में बैठा है क्षेत्रों। भगवान कृष्णा कहते जो मेरा क्षेत्रज्ञ है वह सब क्षेत्रों में है। यही ज्ञान है मेरे मत में।

**ओहु न मूआ जो देखणहारु।।**

और द्रष्टा तो कभी मरी ही नहीं आज तक। वह देखने वाला नहीं मरा भाई। वह जो पराख है वह नहीं मरने वाला। जो दाना बीना है वह नहीं मरने वाला, वह तो वयापक चेतन है।

**जै कारणि तटि तीरथ जाही।।**

वह कहता तीर्थों के किनारे पर जाकर तप करेंगे फिर मन शुद्ध होगा। वह कहता जिसके लिये तुमने तीर्थों के तटों पर जाना है -

*रतन पदारथ घट ही मारी।।*

***रत्न, शुद्ध पदार्थ, चेतन, साक्षी, द्रष्टा, व्यापक तेरे भीतर बैठा है।***

***घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।।***

***कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि।।***

(पृ० १४२७)

मैंने भी यह बात देखी ग्रन्थों की। पंडित राम सिंह आदि मुझे बताते होते थे, ज्योति सब में है। वे कहते-वह सब में है, यह बात जब आयेगी -

*ईश्वरः सर्वभूतानां हृदेशे अर्जुन तिष्ठति।।* (गीता १८/६१)

यह तेरे हृदय में है अर्जुन। और गुरु साहिब भी -

**घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।।**

फकीर भी सब यही कहेंगे। इसलिये जो तुम्हारे हृदय में बैठा वह आपा है, वह यर्थाथ है, वह व्यापक है।

**पड़ि पड़ि पंडितु बादु वखाणै।।**

पंडित तूने पढत्र पड़कर षट् शास्त्र व्यर्थ ही व्याख्यान किये, तुम्हें वास्तविक वस्तु नहीं प्राप्त हुई। चलो आगे -

**भीतरि होदी वसतु न जाणै।।**

वह आत्म वस्तु तो तेरे हृदय में है, तेरे ममन में है, भीतर है।

*पूजन चाली ब्रहम ठाइ।।*

*सो ब्रहमु बताइओ गुर मन ही माहि।।१।।*
*जहा जाईऐ तह जल पखान।।*
*तू पूरि रहिओ है सभ समान।।* (पृ० ११६५)

वह कहता तुम तो सब में व्यापक था, गुरु के बिना मिला नहीं था। इसलिये पढ़ पढ़ पंडित तूने व्याख्यान किये और विवाद किया। तुझे आत्म वस्तु नहीं पंडित प्राप्त हुई, यदि आत्म वस्तु प्राप्त हो जाती तो तुझे हर्ष - शोक न होता।

**हउ न मूआ मेरी मुई बलाइ।।**

यह उत्तर है। पंडित कहता जी फिर आप नहीं मरोगे? यहां गुरु साहिब ने स्पष्ट कहा -

**हउं न मूआ मेरी मुई बलाइ।।**
**ओहु न मूआ जो रहिआ समाइ।।**

वह कहता मैं मरने वाला नहीं, मेरी बला चली गई। मेरी अविद्या जो अध यस्त, झूठी थी, वह नाश हो गई। मैं मरने वाला नहीं। कभी व्यापक मरा है आज तक ? वह सब में तो पहले ही व्यापक है। कहां मर कर जायेगा। कोई स्थान तो है नहीं उसके जाने को वह आप ही है सबमें। इसलिये वह व्यापक कभी मरने वाला नहीं पंडित! वह अजर, अमर है। वह निर्विकार है, अविनाशी है, शुद्ध है।

*हउ न मूआ मेरी मुई बलाइ।।*
*ओहु न मूआ जो रहिआ समाइ।।*
*कहु नानक गुरि ब्रहमु दिखाइआ।।*
*मरता जाता नदरि न आइआ।।* (पृ० १५२)

○ *जनमि न मरै न आवै न जाइ।।*
*नानक का प्रभु रहिओ समाइ।।* (पृ० ११३६)

नानक का प्रभु तो व्यापक है, इसलिये वह जन्म मरण वाला नहीं जन्म-मरण वाला कोई भी नहीं। परमेश्वर सबमें उपाधि भेद पर बैठा है, सब की वृत्तियों में बैठा है, सब का आपा। इसलिये अविनाशी है, शुद्ध है।

**बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरू ।**

❑

१ ओंकार सतिगुरु प्रसादि।।

## 11

### सोरठ महला ५।।

**गुरि पूरै किरपा धारी।। प्रभि पूरी लोच हमारी।।**
**करि इसनानु ग्रिहि आए।। अनद मंगल सुख पाए।।१।।**
**सुंतहु राम नामि निसतरीऐ।। ऊठत बैठत हरि हरि**
**धिआईऐ अनदिनु सुक्रितु करीऐ।।१।।रहाउ।।**
**संत का मारगु धरम की पउड़ी को वडभागी पाए।।**
**कोटि जनम के किलबिख नासे हरि चरणी चितु लाए।।२।।**
**उसतति करहु सदा प्रभ अपने जिनि पूरी कल राखी।।**
**जीअ जंत सकभ भए पवित्रा सतिगुर की सचु साखी।।३।।**
**बिघन बिनासन सभि दुख नासन सतिगुरु नामु द्रिड़ाइआ।।**
**खोए पाप भए सभि पावन जन नानक सुखि घरि आइआ।।४।।**

(पृ० ६२१)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बालो सतिनाम श्री वाहिगुरु, सतिनाम श्री वाहिगुरु।

हुक्मनामा ईश्वरीय वाणी का, गुरु पंचम पातशाह श्री गुरु अर्जुन देव जी महाराज द्वारा आया है। ईश्वरीय वाणी का जो उपदेश होता है वह उपदेश चारों वर्णों का एक होता  है। यह गुरु ग्रन्थ साहिब का जो उपदेश है यह चारों वर्णों का सांझा है। क्यों ? ज्ञान होता ही सांझा है, यह नियम है एक। ज्ञान का बंटवारा आज तक कोई पैगम्बर, ना गुरु, कर नहीं सो। यदि कर सका है तो बता दो आप। ज्ञान होता ही सांझा है। इसमें ज्ञान है। यह शुद्ध ज्ञान है। इसलिये वह गुरु द्वारा शब्द जो आया है वह इन्होंने अभी पढ़ा है। उसकी जैसी व्याख्या हमारा मन, परमेश्वर की कृपा से हमारी बुद्धि करेगी, करेंगे।

इसक अभिप्राय यह है – 'गुरु' पद ही एक इस तरह का है। संसार में पहला पद ही गुरु है। यदि तुम कहो परमेश्वर बड़ा है – ना ना।

*जोति रुपि हरि आपि गुरु नानकु कहायउ।।*
*ता ते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ।।* (पृ० १४०८)

और

*गुरु परमेसर एको जाणु।।*
*जो तिसु भावै सो परवाणु।।* (पृ० ८६४)

गुरु और परमेश्वर एक होता है। चेतन एक है, यत्य एक है। कपिल मुनि जब दो सत्य कह बैठा, जितने भी उसने कथन किये थे, उसने दो सत्य कह दिये – जीव और ईश्वर। व्यास ने पूछा सत्य एक है कि दो ? वह कहता एक। वह कहता फिर दो क्यों कहे ? इसका जो शास्त्र है सांख्य, इसिलये निराधार है। नहीं! सत्य एक होता है। लेकिन इसमें एक बात है। अब तुम पहली पंक्ति पढ़ो भाई –

**सोरठि महला ५।।**

सोरठ राग में पंचम पातशाह गुरु अर्जुन देव कथन करते हैं –

**गुरि पूरै किरपा धारी।।**

पूर्ण गुरु ने कृपा की। पूर्ण गुरु आपको पता है कौन था ? वह संत था, उसका नाम संसार में गुरु रामदास भी प्रसिद्ध है। गुरु एक ऐसी पदवी है।

*गुरु कुंजी पाहू निवलु मनु कोठा तनु छति।।*
*नानक गुर बिनु मन का ताकु न उघड़ै अवर न कुंजी हथि।।*
(पृ० १२३७)

अन्य किसी के हाथ में चाबी नहीं। कबीर साहिब ने लिखा है –

*कबीर सेवा कउ दोइ भले एकु संतु इकु रामु।।*
*रामु जु दाता मुकति को संतु जपावै नामु।।* (पृ० १३७३)

संत कैसे बनता है ?

*प्रेम भगति उधरहि से नानक*
*करि किरपा संतु आपि करिओ है।।* (पृ० १३८८)

संत जो परमेश्वर का बनाया हुआ हो, उसको तुम हटा दोगे ? जो आप संत बनेगा, वह रह जायेगा संत ? वह आप ठोकरें मारता फिरता है। संत

जो परमेश्वर बनाता है

**ब्रहम गिआनी से जन भए।**

***नानक जिन प्रभु आपि करेइ।।*** (पृ० २७२)

यह कार्य तो भगवान् के पास है, किसी अन्य व्यक्ति के पास तो नहीं। वह भगवान् के जो भेजे हुए हैं, उनके पास है। हां, तुमने यह काम करना है।

***प्रेम भगति उधरहि से नानक***

***करि किरपा संतु आपि करिओ है।*** (पृ० १३८८)

वह कृपा करके परमेश्वर ने संत बनाया। गुरु अर्जुन देव जी कहते -

**संत संगि अंतरि प्रभु डीठा।।**

**नामु प्रभू का लागा मीठा।।** (पृ० २६३)

संत के संग के साथ गुरु अर्जुन दंव जी 'सुखमनी साहिब' में कहते, हमनें अपने भीतर परमेश्वर देखा। अब हमें वह कभी भूलता नहीं। परन्तु आप ऐसा समझें, वह सब के भीतर नहीं बैठा हुआ ?

***सभ महि जोति जोति है सोइ।।***

***तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ।।***

***गुर साखी जोति परगटु होइ।।*** (पृ० १३)

जब तक गुर ब्रह्मज्ञानी साक्षी न हो, वह ज्योति प्रकट हो जायेगी तुम्हारी, यदि किसी की हो गई तो बताओ? वह बाबा बुड्ढ़ा जब गया उसको जाते ही संत बना दिया गुरु नानक देव ने और वह संत भी किसी की कृपा से बनता होता है। लेकिन प्रेमाभक्ति के साथ, सिमरन के साथ संत बनता है। यह चीज ऐसी ळै।

***सिमरि सिमरि नामु बारंबार।।***

***नानक जीअ का इहै अधार।।*** (पृ० २६५)

जीव का आधार सिमरन ही है। गुरु घर की दो वस्तुयें हैं, सिमरन और सेवा।

***सेवा करत होइ निहकामी।***

***तिस कउ होत परापति सुआमी।।*** (पृ० २८६)

सिमरन और सेवा में यह ऊंचा चलता है। यदि दोनों छोड़ दिये जाएं तो

दोनो पंख तोड़ बैठा अपने। फिर उड़ने की इसमें शक्ति ही नहीं रहती। इसलिये पहले तुमने सिमरन पकड़ना है, फिर निष्काम सेवा करनी है, तुम अपने आप उड़ोगे प्रभु की कृपा से।

***खोजत खोजत ततु बीचारिओ दास गोविंद पराइण।***
***अबिनासी खेम चाहहि जे नानक सदा सिकरि नाराइण।।***

(पृ० ७१४)

और भी कहा है -

***अजामलु पापी जगु जाने निमख माहि निसतारा।।*** (पृ० ६३२)

अजामिल ने कितना जपा था, लेकिन संत की कृपा से उसने नाम नहीं छोड़ा, उसके पाप सब धोये गये, एसकी मुक्ति हो गई, मोक्ष हो गई। तुमने इस बात की ओर देखना है बई ! सिमरन हमारा चलता है ? सिमरन गुरु बिना कब चलेगा ?

***सभ महि जोति जोति है सोइ।।***
***तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ।।*** (पृ० १३)

वह जो ज्योति है वह सबमें नहीं है ? चार प्रकार के प्राणियों में ? तुम्हें मैं एक बात पूछता हूँ, तुम अपनी वृत्तियाँ - रजो, तमो, सतो, उठती हैं, संकल्प, उनको ज्योति के साथ देखते हो कि और किसी के साथ देखते हो? मैं तुम्हें पूछता, बोलता अब कोई नहीं। ज्योति के साथ ही देखते हो कि और भी है कुछ वहां ? वह तो प्रकाश ज्योति ही है। लेकिन वृत्तियों को तो तुम जानते हो कि बई - यह जो मेरी वृत्ति तमोगुणी हो गई, मेरी रजोगुणी हो गई, सतोगुणी हो गई, देखते भी हो। किसी को तुम पूछते नहीं। यदि कोई कहे अरे तेरा तो यह विचार है, कहता मेरा तो यह विचार है, वह देखकर ही कहते हो। लेकिन आप को एक मैं बात पूछता हूँ तुमने कभी पृत्तियों से अलग होकर भी देखा है आज तक अपने आप को ? कोई बोलता ही नहीं। पतंजलि ने सारी शक्ति लगाकर योग का एक सूत्र कहा -

***तदा द्रष्टुः स्वरुपे अवस्थानम्।।***

समाधि पाद १/३ (पंतजलि योग-सूत्र)

वह कहता अरे ! तू स्वरुप में स्थित हो जा वह जो तुम्हारा द्रष्टा रुप है, उसमें स्थित हो जा।

*मूई सुरति बादु अहंकारु।। ओहु न मूआ जो देखनहार।।२।।*
*जै कारणि तटि तीरथ जाही।। रतन पदारथ घट ही माही।।*
*पड़ि पड़ि पंडितु बादु वखाणै।। भीतरि होदी वसतु न जाणै।।*
*हउ न मूआ मेरी मूई बलाइ।। ओहु न मूआ जो रहिआ समाइ।।*
*कहु नानक गुरि ब्रहमु दिखा इआ।।*
*मरता जाता नदरि न आइआ।।* (पृ० १५३)
*जनमि न मरै न आवै न जाइ।।*
*नानक का प्रभु रहिओ समाइ।।* (पृ० ११३६)

लेकिन तुम्हारा ज्ञान दृढ़ नहीं है। दृढ़ तब होगा जब तुम वृत्तियों से एक बार टूट जाओगे। तुम विचार तो नहीं हो, विचार तो मरता है। तुम कामना तो नहीं हो, वह तो मरती है, तुम वृत्तियां भी नहीं हो, वे तो मरती है। तुम तो आत्मा हो। आत्मा और शरीर काआज तक कभी मेल नहीं हुआ।

*असंगो हि पुरुषा अ संगो नहि सज्यते।।* (उपनिषद्)

पुरुष चेतन, परिपूर्ण असंग है। आज तक सम्बन्ध वाला नहीं हुआ। तुम्हें भ्रांन्ति पडत्र गई। भ्रांन्ति जब तक है तब तक नहीं काम बनता।

*काहे रे बन खोजन जाई।*
*सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ।।रहाउ।।*
*पुहुप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई।।*
*तैसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजहु भाई।।*
*बाहरि भीतरि एको जानहु इहु गुर गिआनु बताई।।*
*जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई।।*

(पृ० ६८४)

जब तक तुम अपना आप नहीं पहचानते अलग होकर वृत्तियों से, अपने आप को तुम पहचान नहीं सकते। और वह तो समाधि होती है, जब वृत्तियों का अभाव हो गया।

*द्रिसटिमान है सगल मिथेना।।* (पृ० १०८३)

यह तो सब ही मिथ्या है और चेतन तो सत्य है, यह तो व्यापक है।

*सति सरुपु रिदै जिनि मानिआ।।*
*करन करावन तिनि मूलु पछानिआ।।* (पृ० २८५)

वह सत्य स्वरुप आपके हृदय में नहीं बैठा ? कभी वह गैर हाज़िर हुआ है ? आपकी कितनी बातें, आठ पहर में, वृत्तियां विचार चलते हैं, वह एक ही रहेगा। लेकिन वह तुम्हारा आपा है। वह शरीर नहीं, वह तो तुम्हारा आपा है। लेकिन जब तुम यहां स्थित होंगे तब ईश्वर की, गुरु की कृपा द्वारा ही। ईश्वर गुरु एक ही है। तब तुम्हें पता लगेगा बई - अब हम सवीकार हुए। उसी प्रकाश के साथ ही तुम वृत्तियां देखते हो। वह प्रकाश तो व्यापक है, शुद्ध है, परिपूर्ण है, द्रष्टा है, जन्म मरण से रहित है, वह व्यापक है। हां -

*हउ न मूआ मेरी मुई बलाइ।।*
*ओहु न मूआ जो रहिआ समाइ।।* (पृ० १५२)

गुरु साहिब उस पंडित को कहते अरे ! मैं मरने वाला नहीं हूँ। मेरी जो बला थी, भूल थी, आान था। अविद्या थी, नाश हो गई।

**ओह न मूआ जो रहिआ समाइ।।**

वह कभी जो व्यापक है, जन्म मरण में आया है ? लेकिन एक बात और है -

*जोति रुपि हरि आपि गुरु नानकु कहायउ।।*
*ता ते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ।।*

(पृ० १४०८)

वह ज्योति, अवतार गुरु होकर संसार में आया, मार्ग दुनिया को दिखाया, बहुत बड़ा परोपकार किया। लेकिन जो संसार में अन्य भी महापुरुष आये, कम वे भी नहीं थे, अपने समय में। इसमें भी कोई संशय नहीं। इसलिये जब तक तुम एक से नहीं जुडत्रते, तब तक तुम्हारा काम नहीं बनता। एक मेरे पास धनौले (गांव में) आता था। वह बड़ा विचारवान था। ओय ! मैंने कहा इधर रासते क्यों पड़ गया ? कहता भूल में पड़ गया। मैंने कहा पहुँच अब। वह कहता मुझे पता नहीं था। वह कहता जी यह जो गुरुद्वारा के आस-पास १ ओंकार लिखा है इसका क्या अर्थ है ? मैंने कहा - एक है परमेश्वर और यह जो ओउम् है यह है नाम।

**एका एकंकारु लिखि देखालिआ।**
**ऊड़ा ओअंकारु पासि बहालिआ।।** (भाई गुरदास वार ३/१५)

सब के नाम का आदर किया। ओंम सत् आगे रखा। लेकिन गुरु साहिब

ने एकंकार का आदर किया, एक पहले रखा और नाम पीछे रखा, नामी पहले रखा। इसलिये 'एक' के साथ जब तक आप नहीं जुड़ते तब तक तुम विचारों में, वृत्तियों के साथ, संसार के साथ जुड़े हुऐ हो, तब तक आपका मन एक के साथ नहीं जुड़ता। दो मन तो है नहीं, मन तो एक है।

***ऊधो मन न भए दसबीस।।***
***एक हुतो सो गयो स्याम संग, को अवराधै ईस।।*** (सूरदास)

ऊधो ने बड़ा शक्तिशाली उपदेश किया। वह कहता आपका मन नहीं जुड़ता। कहते मन तो एक है, वह कृष्णा के साथ जुड़ा हुआ है, और कौन सा मन है जो आराधना करे। मन तो एक है, यह एक के साथ है। इसलिये एक लिखा है। एका (एक) क्या है ?

***एकम एकंकार निराला। अमरु अजोनी जाति न जाला।।***
***अगम अगोचरु रुपि न रेखिआ।।***
***खोजत खोजत घटि घटि देखिआ।।*** (पृ० ८३८)

वह तो सबके हृदयों में बैठा है -

***घटि घटि मैं हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।।***
***कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहिं पारि।।***

(पृ० १४२७)

वह तुम्हारे हृदयों में नहीं बैठा है ? वह समस्त चार प्रकार के प्राणियों के हृदयों में बैठा है लेकिन दिखाई केवल कन्हैया को ही दिया। तुम्हें दिखाई तो नहीं दिया। है, चाहे तुम कहते रहो। दिखाई तो भाई कन्हैया को दिया है। यदि तुम ने रहबर ढूंढना है, भाई कन्हैया जैसा रहबर ढूंढो। उसने वह कर्म करके मार्ग देख लिया। हमें भी बता गये और यदि तुम दोनों चीजों को इक्टठी करके जड़ चेतन को, सत्य असत्य को, नित्य अनित्य को, काम करना चाहो तो आपका काम नहीं चलना। परमार्थ का काम नहीं चलना। धर्म का मार्ग भी गुरु साहिब बता गये।

***सरब धरम महि स्रेसट धरमु।।***
***हरि को नामु जपि निरमल करमु।।*** (पृ० २६६)

कहते धर्म का तो मार्ग ही यही है। धर्म की सीढ़ी यहीं से चलनी है। इस धर्म की सीढ़ी ने यहाँ पहुंचाना है। वह जो एक है, वह सब में है। जब

तुम्हारा मन एक बार भी मान जायेगा तो उसमें चला जायेगा। एक बार भी, रंच मात्र स्पर्श हो गया फिर वापिस नहीं आना। जोर लगा लेना। कबीर का ना आ गया। नामदेव का ना आ गया। वह मन से लेकर श्वास तक जाता है। इसलिये भाई वह 'एक' है जो, वह गुरु साहिब ने सब का इष्ट बताया है। उन्होंने विशेष तौर पर 'एक' को आदि में लिखा है। पहले मुझे इस बात का पता है। मैं संतों के पास जाता होता था, वे पाठ कराते थे, वह ऐसे था, वे खाली कपड़े पर मेरे सामने १ ओंकार लिखाते थे, फिर मुझे कहते थे, यह क्या लिखा हैं ? जी १ ओंकार कहते तुम १ ओंकार के उपासक हो, देखना कही दूसरी ओर चला जाये। हमने संत मस्तुआणे वालों के मुख से सुना है –

**'जपो खालसा जी सारे जागदी जोत को'**

हम बैठकर सुनते रहे। जपो खालसा जी, सवैये लगाकर उन्होंने कहा। देखना खालसा जी ! जागदी जोत से इधर उधर न कही हो जाना। अङ्गैर गुरु का मत ही यह है। एक ठाकुरों का उपासक, गुरु अर्जुन देव जी पास आया, उसने गले में डाला हुआ था ठाकुर चांदी चढाकर और जैसे भी। उसने कहा जी यह बड़ा ठाकुरों का पुजारी है, पानी स्पर्श करके पीता है, रोटी स्पर्श कराकर खाता है। पहले भोग ठाकुर को लगाता है लेकिन गुरु साहिब इस सिद्धान्त को मानते नहीं थे। उन्होंने कहा –

*घर महि ठाकुरु नदरि न आवै।।*
*गल महि पाहणु लै लटकावै।।१।।*
*भरमे भूला साकतु फिरता।।*
*नीरु विरोलै खपि खपि मरता।।१।।रहाउ।।*
*जिस पाहण कउ ठाकुरु कहता।।*
*ओहु पाहणु लै उस कउ डूबता।।२।।*
*गुनहगार लूण हरामी।।*
*पाहण नाव न पारगिरामी।।३।।*
*उसने कहा जी आप –*
*गुरु मिलि नानक ठाकुरु जाता।।*
*जलि थलि महीअलि पूरन बिधाता।।* (पृ० ७३८)

कहते हमने गुरु रामदास महाराज को मिलकर ठाकुर को जाना, वह सब में परिपूर्ण है और शरीर स्थूल, सूक्ष्म कारण यह तो सब जड़ है। इसको सत्ता स्फूर्ति देने वाला भीतर नहीं बैठा है ? इसका आपा वह है लेकिन यह तो और ही कुछ बना बैठा है। इसका झुकाव ही इधर है इसलिये यह गुरु के पास नहीं है। गुरु साहिब ने पहले सत् सुनाया –

**सति रुपु सति नामु करि सतिगुरु नानक देउ जपाइआ।।**

ज्योति स्वरुप का 'सति' नाम रखकर गुरुनानक संसार में भाई साहिब कहते जपा गये। पहले आपने सत्य के साथ जुड़ना है। अब आप स्वयं अपना निर्णायक बनें, तुम सत्य बताओ – तुम सत्य से जुड़े हो कि असत्य के साथ ? बताओ। हैं – सत्य के साथ ? असत्य के साथ ? मैंने कहा कहीं सत्य से जुड़े हुए हो तो फिर अंधेरे में छड़ी क्यों घुमाते फिरते हो, पानी में से कभी नवनीत (मक्खन) तो निकला नहीं। मैंने भी वहां कथा की 'भउ खेडत्रे'। भक्त एकत्रित हुये थे और एक भक्त उठकर कहता अरे पानी में कथानी नहीं तो करें क्या ? कहता पानी में मथानी नहीं रखी हुई ? अतः यह बात है, ये पानी में मथानी ही चलाते हैं। जितनी खुशी है मारी जाओ, काम नहीं बनेगा। पहले सत्य के साथ जुड़ों। असत्य के साथ मन का स्पर्श न करो। जब तक तुम विकारों विषयों में रहोगे तब तक तुम सत्य से नहीं जुड़ोगे। पांच विकार हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार। पांच विषय हैं – शब्द, स्पर्श, रुप, रस, गंध। तुम अपने मन को देखा करो। तुम मन के द्रष्टा हो। तुम्हारा मन तो नहीं द्रष्टा ? वह तो जड़ है। तुम हा समय मन को देखते हो, तुम देखो, मन मेरा जुड़ा हुआ कहां है। जब तुम ये खोज करोगे –

***खोजत खोजत ततु बीचारिओ।।*** (पृ० ७१४)

तुम्हें तत्त्व का पता लग जायेगा। इसलिये गुरु पद आया है, उस पूर्ण गुरु ने मेरे सभी कार्रु सिद्ध कर दिये। पढ़ भाई अब –

**गुरि पूरै किरपा धारी।।**

पूर्ण गुरु रामदास ने मेरे ऊपर कृपा की, गुरु अर्जुन देव महाराज कहते –

**प्रभि पूरी लोच हमारी।।**

मेरी समस्त इच्छायें पूर्ण हो गई। ब्रह्मज्ञान मुझे गुरु ने दे दिया, जो वास्तविक वस्तु थी। फिर जो कुछ उन्होंने कहा था – बीड़ बांधनी है,

अमृतसर बनाना, तरनतारन तीर्थ बनाना, करतारपुर बसाना। वह भी मेरी इच्छा पूर्ण हो गई। मेरी लोक परलोक की समस्त इच्छायों पूर्ण हो गई। लेकिन किस प्रकार ? गुरु रामदास की कृपा से।

*करि इसनानु ग्रिहि आए।।*
*सुणिओ मनिआ मनि कीता भाउ।।*
*अंतरगति तीथि मलि नाउ।।* (पृ० ४)

अन्तरात्मा तीर्थ नहीं आपका ? उसमें मन तुम्हारा डूबा आज तक, कभी उसने गोता मारा है ? वह जब गोता मारेगा, समाधि लग जायेगी, उस दिन आपका सब कुछ हो जायेगा। कबीर ने मान लिया, नामदेव ने मान लिया, इसलिये जब यह वहां पहुंचेगा। यह गुरु की कृपा से पहुंचेगा। गुरु की कृपा ने मेरी कामनायें, मेरी इच्छायें लोक परलोक की सब पूरी कर दीं।

**अनद मंगल सुख पाए।।**

कितना सुख प्राप्त किया, जो अनंत सुख है। 'अनद मंगल संख' हर समय जो पूर्ण सुख है, आत्म सुख है वह गुझे प्राप्त हो गया, गुरु रामदास महाराज की कृपा से।

*संतहु राम नामि निसतरीऐ।।*
*संतो बात सुन लो।*
*गहिओ न राम जहाजु।।* (पृ० ३३६)

इसने नाम रुपी जहाज नहीं पकड़ा, पार तो हो जाता लेकिन इसने नाम रुपी जहाज तो पकड़ा नहीं। अब तुम अपने आप आत्मा से बात करना, जाति धर्मों का कोई सम्बन्ध नहीं है। तुम्हारा मन कभी मान के साथ जुड़ा है ? फिर नामी किस प्रकार प्राप्त हो जायेगा। नाम के साथ तो जुडत्रा नहीं, नामी कहाँ से आ जायेगा बई – तुम्हारे पास ? और संसार से मन जुड़ा हुआ है ओर पूछते हो जी शान्ति कैसे प्राप्त हो ? इसको कहे बई ! कुढ प्रयत्न तो कर शान्ति के, वैसे पूछता फिरता है। वैसे ही लोगों को परेशान करता फिरता है। पहले आप तो हो एक। चलिये –

**ऊठत बैठत हरि हरि धिआईऐ**
**उठते बैठते हर समय नाम न भूलो।**
**सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई।।**

नाम न भूलो। यह इतिहास में आता है। जो अमृतसर आया था। उसने पूछा संसार में कोई ऐसा महापुरुष है जिसकी शरण में जाकर योगी बन सकूं ? उसने कहा गुरु अर्जुन देव जी हैं इस समय पांचवी गद्दी पर गुरु नानक देव की। तुम उनके पास जाओ। जब वह आया तो गुरु साहिब 'लैची बैरी' के नीचे खड़े थे छड़ी लेकर। जब वह गया, वह कहते-वाह बई वाह ! बड़ा काम किया, बड़ा टोकरा वहाँ से वापिस आ गया, कहता - है। कौन है वह गुरु? कहा - वह है। वह कहता लोगों ने व्यर्थ ही चलवाया ! यह तो संसारी व्यक्ति है। वापिस हो लिया। तो गुरु साहिब ने बाबा बुड्ढ़ा जी को कहा - बई एक टोकरा उसके पेट पर मारना, इसको जलोदर का रोग है, अभी चला जायेगा। लेकिन 'सतिनाम' कहकर मारना। जब उसने मारा वह बाबा बुड्ढ़ा के पैरों में पड़ा। वह कहता नान ना, वहां जा जिसकी वस्तु है। मैंने तो वहां से ली हुई है। मेरे पास तो नहीं है। वहां जा जहां से मुड़ा था। फिर गुरु साहिब के पास गया। गुरु साहिब ने यह उपदेश दिया -

*साचि नामि मेरा मनु लागा।।*
*लोगन सिउ मेरा ठाठा बागा।।* (पृ० ३८४)

मेरा मन सत्य से जुड़ा हुआ है। यह मेरा व्यावहारिक सम्बन्ध है। यहाँ सरोवर बनेगा, कीतैन होगा, दुनिया स्नान करेगी, पवित्र होगी। यहां नाम जपा जायेगा। यह जो व्यावहारिक सम्बन्ध है, यह कर्म काण्ड है लेकिन परमात्मा के सत्य स्वरुप से मेरा मन जुड़ा रहता है। मन को नाम के साथ जोड़कर काम करना, फिर नहीं कभी हिलता होगा। मैं तुम्हें एक बाम सुनाता हूँ - एक मुसलमान की। वह घोड़ी पर चढ़कर आया। वह संत वहां रहता था, वे सभी चले थे। वे बड़े अच्छे संत थे। वह कहता जी - इतनी दूर आपके पास चलकर आया हूँ, उपदेश के लिये। वह कहते अब हमारे पास समय नहीं, हमने पहुंचना है। कहता जी कुछ तो बता दो। कहते बई ! परमात्मा को भूलकर कोई काम न करना। वे संत कहते जो काम करना पहले परमात्मा को याद करके करना, फिर नहीं धोखा होगा। वह कहता बस, यही मैं चाहता था अतः जब तुम परमात्मा को याद करके काम करोगे, तुम्हें न्याय करना पड़ेगा, धर्म करना पड़ेगा, अधर्म छोड़ना पड़ेगा। इसलिये भाई -

*सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई।।* (पृ० २)

वह सब का दाता जो परमात्मा है, उनको कभी भूलो नहीं । वह सब के हृदयों में बैठा है। वह किसी एक हृदय में नहीं है।

**अनदिनु सुक्रितु करीऐ ।। रहाउ।।**

रात्रि दिन शुभ कर्म करा करो, जो कर्म करना है शुभ किया करो। कर्म कभी भी बुरा न करो। वह एक पढ़ता होता था -

**जिउंदिआं नूं क्यों मारदा हैं, जे मोइआं नू जीवाउण जोगा।।**
**घर आए फकीर नू झिड़कदा क्यों, जे पलिओं खैर नहीं पाण जोगा।**
**मिले दिलां ते भांजियां मारदा क्यों, जे विछुड़े नहीं मिलाण जोगा।।**
**गौरे शाह बदीयां रख बंदीखाने, जेकर नेकीयां नही कमउण जोगा।।**

इसलिये भाई ! अपने मन को परमेश्वर के मार्ग पर डालो लेकिन नाम न भूलना।

***नाम संगि जिस का मनु मानिआ।।***
***नानक तिनहि निरंजनु जानिआ।।*** (पृ० २८१)

जिसका नाम के साथ मन मान गया, उसने निराकार को जान लिया। अब तुम अपने निर्णायक आप हो। यदि आपका मन जुड़ गया नाम के साथ, फिर तो संक्षय की कोई बात नहीं, नामी तुम्हें प्राप्त हो जायेगा। यदि नहीं जुड़ा तो -

***नामु संगी से मनि न बसाइओ।।***
***छोड़ि जाहि वाहू चितु लाइओ।।*** (पृ० ७१५)

वह कहता नाम था संगी जीव का। तू अकेला था जीव का। दूसरा एक नाम हो जाता लेकिन तुम ने मन में नहीं बसाया।

**छोडि जाहि वाहू चितु लाइओ।।**

सारी आयु संसार की कामना करते मर गया। साथ तेरे कुछ नहीं जाना, हाथ मलता जायेगा, वह मनुष्य जन्म -

***भई परापति मानुख देहुरीआ।।***
***गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ।।*** (पृ० १२)

यह तो तेरी गोविंद मिलन की बारी है। यह तो देखते देखते निकल गई। इसीलिये तुम सोच लो, ऐसा कहते हैं गुरु अर्जुन देव जी, कहते सोच लो।

**संत का मारगु धरम की पउड़ी**

कहते संत का मार्ग ही धर्म की सीढ़ी है। संत कहाँ से चलता है ?

***सरब धरम महि स्रेसट धरमु।।***
***हरि को नामु जपि निरमल करमु।।*** (पृ० २६६)

निष्काम सेवा, निष्काम कर्म और नाम का सिमरन, यह है एक सीढ़ी भगवान के पास जाने की। यह श्रेष्ठ धर्म गुरु साहिब ने लिखा है। इस सोपान पर पाँव रखोगे फिर तुम अवश्य जाओगे। यदि आपका सिमरन नहीं चला और निष्काम सेवा तुम ने नहीं की और निष्काम कर्म नहीं किये, फिर तुम आशा ही न करो। ऐसे ही किसी के कहने में न आ जाना। परेशान करते होते हैं ये लोग। ये आप ही नहीं पहुंचे होते। मैं तुम्हें बता दूं, सत्य बात तो यही है। ये परेशान करने लगे गये। इसको कहो पहले आप तो कुछ करें फिर किसी को बताना। वह तो ईश्वर ने आकर बताया। गुरु तो ईश्वर होता है। गुरु नानक आया कि नहीं ? गुरु कहलाया, नानक ने गुरु कहलाया। वह तो ईश्वर था, वह तो ज्योति था। वह आपके भीतर नहीं है ? और वह प्रकाशित भी नाम के साथ होगी, जोर लगा लो, नाम के साथ आप का मन जुड़ गया तो ज्योति प्रकाशित हो गई लेकिन अब आप देखो नाम के साथ जुड़ा है कि नहीं ? तो फिर ऐसे ही आपकी मथानी पानी में है। जितनी खुशी है मारते रहो, नवनीत तो निकलेगा नहीं। चल –

**को वड़भागी पाए।।**

जिसका सौभाग्य होगा वह पायेगा। तुलसीदास जी ने लिखा है –

***पुण्य पुंज बिनु मिलहिं न संता।***
***सत संगति संसृति कर अंता।***

(रामचरितमानस ७, ४५, ६)

जब तुलसीदास जी से पूछा बताओ जी मार्ग ? वह कहता – संतों के पास पहुंचो। कहता जी संत कैसे प्राप्त होगा ? वह कहता –

**पुण्य पुंज बिनु मिलहिं न संता।**

जब पुण्य उदय होंगे, तब जब आपका मन निर्मल हो जायेगा। फिर संत के पास जाना। वह गया था संत के पास, तुम्हें पता है 'फफड़िया वाला'। क्या नाम था उसका ? 'भाई बहलो' और उसे पूछा था। गुरु अर्जुन देव जी ने जब कहा 'भाई बहलो सबसे पहलो' बिछा चादर, बैठ जा, और उसने कहा

जी मैं तो कृत्य कृत्य हो गया। वह कहते हमारा वचन न जाये - कुछ कहो। उसने कहा जी पानी नहीं वहां, बहुत मुश्किल है। और आज तक वहां सरोवर बना हुआ हमने देखा है। संत का संग ही एक है। वह गुरु अर्जुन देव जी ने आप ज्योति स्वरुप को भीतर आप साक्षात् कर दिया। यह भी ग्रन्थों में लिखा है। कहता जी बाहर से ज्ञान होता है? कहते न ज्योति स्परुप भीतर बैठा है, जब उसकी अवधि आ जायेगी, बीच चला जायेगा। वह अपने आप ही द्वार खुल जायेगा।

**कोटि जनम के किलबिख नासे**

जब यह ज्ञान में पहुंच जायेगा, कभी ज्ञान को पुण्य लगे हैं? ज्ञान तो निर्लेप है, वह ज्ञान तो निराकार है, शुद्ध है। कभी पुण्य पाप वहां पहुँचे हैं ? कभी कर्ता भोगता वहां पहुंचा है ? कभी दुःख सुख पहुंचा है ? कोई ध र्म वहाँ पहुंचा है ? वहां कोई जाति पहुंची है, वहां कोई भी नहीं पहुंचता, वह है ज्ञान। वहां पुण्य पास कोई नहीं। और वहां जाकर आंखें खुल र्ग। पहले यूं ही अंधेरे में फिरते रहे।

**हरि चरणी चितु लाए।।**

हरि के चरणों में चित्त ला दो। हरि के चरण गुरु ग्रन्थ साहिब में लिखे हैं, सिमरन और ध्यान। जहां तुम एक हो जाओ। जिसका तुम ध्यान करते हो, सिमरन भी उसी का हो और जिसका तुम सिमरन करते हो, ध्यान भी उसी का हो। इसके दो चरण आपके हाथ में आ गये, तुम परमात्मा को प्राप्त कर लोगे। लेकिन आपदेख लो, ये दोनों आपके इक्टठे हुऐ हैं कभी ? ध्यान और नामी कभी एक हुए ळैं कभी ? जिसका तुम सिमरन करते हो १ ओंकार का, नाम भी उसी का हो तो संसार को कहां रखोगे फिर ? वह तो निराकार है, शुद्ध है, उसका तुम्हें दृढ़ निश्चय नहीं।

**उसतति करहु सदा प्रभ अपने**

अब आपने प्रभु की स्तुति करनी है, और नहीं किसी की करनी। यहां हम देखते हैं ये साधूओं के पीछे पड़ जाते हैं फलां, ढिमका, ऐरा गैरा, ज्यों पड़ते हैं। फलां नेताओं के पीछे पड़ जायेगें। उन को कहे कि अरे स्तुति तो परमेश्वर की करो, अपना परमेश्वर जो आपकी आत्मा, परमात्मा सब में व्यापक, आपके हृदय में है, उनके साथ मन जोडत्रकर उसके नाम को जपा

करो। स्तुति उसकी किया करो भगवान् की। नाम परमेश्वर की स्तुति है। नाम नामी की स्तुति है। जब तक नाम के साथ मन न जुड़े नामी की स्तुति नहीं होती।

*जह नही आपु तहा होइ गावउ।।* (पृ० ११५६)

कबीर जी कहते अहंकार छोड़कर तब गाओ।

*हउमैं विचि गावहि बिरथा जाइ।।* (पृ० १५८)

अहंकार में गाया तो आपका व्यर्थ चला जायेगा। जब आपकी लय ही ईीक नहीं तो रबाब कैसे बजेगी तुम्हारी त्र इसलिये तुम स्तुति उसकी किया करो, परमेश्वर की। और की स्तुति न किया करो। यदि बहुत नहीं तुम कह सकते तब भी कहो, वह भी परमेश्वर का रुप है। फिर परमेश्वर का म्प तो सब ही हैं। जितने तुम हो, है तो परमेश्वर का ही रुप। असली तो परमेश्वर ही हों। आह यह जो तुम्हें मिला हुआ है चोला (शरीर) यह तन बदल जायेगा। यह तो कृत्रिम है, गुरु साहिब ने लिखा है, चौथी पौड़ी में -

*करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु।।* (पृ० २)

कर्मों के माध्यम से तुम्हें वस्त्र रुपी शरीर प्राप्त होगा, उसके अनुसार आपने वासनायें करनी हैं, लेकिन

**नदरी मोखु दुआरु।।**

जब कृपा होगी, आपकी मोक्ष हो जायेगी।

**जिनि पूरी कल राखी।।**

जिसने, गुरु अर्जुन देव जी कहते, मेरी कलियुग में पूर्ण इज्ज़त रख, मेरी समस्त इच्छायें पूर्ण्ज्ञ कर दीं, वे परमेश्वर ने और गुरु रामदास महाराज हैं।

**जीअ जंत सभि भये पविव्रा**

सब जीव जंतु पवित्र हो जायेंगे। और संत का यहां शरीर छूटने से ये कितना कुछ बना पड़ा है। पांच चार वर्ष हम भी बैठे रहे हैं वह कार्य क्या करता था, हमें पता है। वह 'जपुजी साहिब' पढ़ता रहता था। हम उधर गये पूर्व में, उसने रख लेनी चिप्पी और जंगल में जाकर 'जपुजी साहिब' पढ़े जाना, चल और डण्डा लेना पकड़ औश्र यथाशक्ति खड़े रहना, फिर लेट जाना, बैठ जाना, यह उसका मुख्य कार्य था। लो फिर कृपा हुई उसके परमाणु गिरे और कितना लाभ हुआ, कितना लाभ कर लिया। संत का

परमाणु और गुरु का परमाणु गिरने से तो समस्त पृथ्वी पवित्र हो जाती है। हाँ जी -

**सतिगुरु की सचु साखी।।**

सत् गुरु की जो शिक्षा है, वह सत्य होती है भाई -

***सतिगुरु की बाणी सति सति करि मानहु।।*** (पृ० १०२८)

सत्‌गुरु की जो शिक्षा है, उसको सत्य करके मानना। सत्‌गुरु ने तुम्हें नाम के मार्ग डालना है। उसे छोड़ना नहीं। चाहे पाँच प्यारे डाल दें, चाहे कोई संत डाल दे। हाँ जी -

**बिघन बिनासन सभि दुख नासन**

समस्त विध्न आपके नाश हो जायेंगे, समस्त दुःख तुम्हारे समाप्त हो जायेंगे।

**सतिगुरि नामु द्रिड़ाइआ।**

सत्‌गुरु ने हमें नाम दृढ़ कीर दिया। गुरु अर्जुन देव जी कहते वह जो ज्योति स्वरुप चेतन था न, 'जोत' वह दृढ़ करा दिया। अपना आप वह है तुम सबका। तुम्हारा अपना आपा ज्योति है। ये तीनों कारण स्थूल, सूक्ष्म, सूक्ष्म शरीर आकार कोई नहीं आपका अपना। यह तो माया है, यह तो प्रकृति है। इसलिये दृढ़ करा दिया गुरु रामदास ने बड़ी कृपा की।

**गुरु जोति अरजुन माहि धरी।।** (पृ० १४०८)

वह ज्योति गुरु अर्जुन देव में जगाकर रख गये गुरु रामदास। प्रिथिये में न रख गये, महादेव में न रख गये, लेकिन ईश्वीय आदेश यही था।

**खोए पाप भए सभि पावन**

जब हम यह नामी नाम द्वारा दृढ़ कर लिया, समस्त पाप नष्ट हो गये और हम पवित्र पर पवित्र हो गये।

**जन नानक सुखि घरि आइआ।।**

उसका जो आत्म सुख था, वह था आपका घर। उसमें आ गये, वह घर तो -

***घर महि ठाकुरु नदरि न आवै।।***
***गल महि पाहणु लै लटकावै।।*** (पृ० ७३६)

वह घर में जो बैठा है, अब तो वहां पहुंच गया मन। अब तो वहां एकाग्र

हो गया, एकाग्रता पर ही समाधि होनी है।

**खोए पाप भए सभ पावन**
**जन नानक सुखि घरि आइआ।।**
**बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरू ।**

❑

**१ ओंकार सतिगुरु प्रसादि।।**

# 12

**माघि मजनु संगि साधूआ धूड़ी करि इसनानु।।**
**हरि का नामु धिआइ सुणि सभना नो करि दानु।।**
**जनम करम मलु उतरै मन ते जाइ गुमानु।।**
**कामि करोधि न मोहीऐ बिनसै लोभु सुआनु।।**
**सचै मारगि चलदिआ उसतति करे जहानु।।**
**अठसठि तीरथ सगल पुंन जीअ दइआ परवानु।।**
**जिस नौ देवै दइआ करि सोई पुरखु सुजानु।।**
**जिना मिलिआ प्रभु आपणा नानक तिन कुरबानु।।**
**माघि सुचे से कांढीअहि जिन पूरा गुरु मिहरवानु।।**

(बारह माहा मांझ, पृ० १३५)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु, सतिनाम श्री वाहिगुरु।

आज माघ की संक्रान्ति है। सूर्य प्रथम राशि में से दूसरी राशि में प्रवेश करता है। उस पुण्य समयको संक्रान्ति कहते हैं। यह संक्रान्तियां तो सभी पवित्र हैं। यह महा पवित्र है। वैशाख और माघी इस देश में मनाई जाती है। आज के दिन समस्त लोग स्नान करते हैं, जहां देखते हैं पुण्य दान करते हैं, बहुत अच्छा पवित्र दान है। आज जो व्यक्ति भी दान करेगा नाम जपेगा, वह पवित्र से महापवित्र हो जायेगा। बोल भाई -

**माघि मजनु संगि साधूआ**

भाई माघ मास में साधुओं की चरण रज में स्नान किया करो। साधु यहां वे लिखे हैं जो परमात्मा के साथ मिले हुए, एक रुप हुए, उनकी जो चरण रज है वह बड़ी महापवित्र है। गुरु अर्जुन देव जी ने जब चरण रज उसके मस्तक पर लगा दी 'बिधीचन्द्र' के, उसके समस्त अवगुण विलुप्त हो गये।

उसकी चोरी की रेखा ही मिटा दी। इसलिये जो पूर्ण महापुरष की चरण रज है, परमेश्वर के प्यारों की और अवतारों, कारकों की, जो संसार में लोगों का सुधार करने के लिये आये है, उसमें स्नान किया करो। स्नान क्या किया करो उन महापुरुषों के पास जाकर परमेश्वर का मार्ग पूछा करो। फिर उस मार्ग पर चला करो।

**धूड़ी करि इसनानु।।**

उस चरण रज में स्नान करो। इतनी नम्रता करो। अहंकार को त्याग दो और मन को नाम के साथ जोड़ दो और जुड़कर नाम जपो।

*नाम संगि जिसका मनु मानिआ।।*
*नानक तिनहि निरंजनु जानिआ।।* (पृ० २८१)
*उसको परमेश्वर प्राप्त होगा।*
*हरि का नामु धिआइ सुणि*
*हरि का नाम आप जप।*
*सिमरि सिमरि नामु बारंबार।।*
*नानक जीअ का इहै अधार।।* (पृ० २६५)

मन के साथ सिमरन कर और परमेश्वर परिपूर्ण्ज्ञ जो सब का रक्षक है उसका ध्यान कर। जो सब का पालन पोषण करता, सबकी रक्षा करता है और सबाक पैदा करता है ओर सबको सुख देता है जो उत्पत्ति, पालना, लय करता है, उस परमेश्वर का ध्यान किया कर।

**सुणि**

अब नाम को श्रवण कर, फिर जाप कर। पहले पूर्ण गुरु से नाम श्रवण कर, फिर नाम को जपा कर।

**सभना नो करि दानु।**

वह दान सब को बांट। ऐसे न कहना बई – सिक्खों को, ब्राह्मणों को, साधुओं को, फलां को। और भूखे रखने हैं ? गुरु साहिब कहते अरे दान सब को करना, सबको भूख लगती है और सबको दान कर। मैं तुम्हें होशियारपुर के संत की बात सुनाता हूं। वह अकालियों का तब बोलबाला अधिक था। डेरे छीन लेते थे। वहां एक अकाली भलापुरुष भोजन खाने आया। वहां डेरे का रसोईया था ब्राह्मण। उसने जवाब दे दिया। वह संत बड़ा महापुरुष था,

जो डेरे का मालिक था, वह देखता था। वह बेचारा अकाली निराश होकर चल पड़ा, क्या करे ? वह जब चल पड़ा तो संत ने उसको बुलाया, भाई क्या बाम हुई ?वह कहता मैं जी भूखा था, रोटी खाने आया था, वह जो भण्डारी है वह कहता रोटी नहीं। कहा तुम्हें भूख लगी हुई है ? कहता बड़ी भूख लगी है। उसने भण्डारी को बुलाया - कहता - अरे ! तुमने इसको भोजन नहीं खिलाया ? कहता जी अकाली है, डेरे छीनने वाला। वह कहता अकालियों को भाूख नहीं लगती ? वह कहता ऐसे तो मुझे पता नहीं। यहां आ-ओये। कहता तुम्हें भूख लगी हुई है ? वह कहता हां लगी हुई है। संत कहता-तूने जिसको भूख लगी हुई है उसको रोटी खिलानी है, उसको रोटी खिलानी है। इसको भूख लगी है तो क्यों नहीं खिलाई ? गलती हो गई जी। जा और पकाकर बहुत अच्छी तरह इसको खिला और जब यह तृप्त हो जाये तो तुम भी भाई आना। वह आ गया। क्यों भाई ? अकाली कहता, जी मैं प्रसन्न हो गया। कहता जाओ जब तुझे भूख लगे यहां से खा जाया कर। तुमने भूख वाले को रोटी खिलानी है अथवा किसी जाति धर्म वाले को खिलानी है ? बड़ा गलत है। वह बार बार कहता जी-मुझ से गलती हो गई। इसलिये भाई सबको भूख लगती है और दान भी सबाके करना है, समझ लिया ? यह तो इन नेताओं ने पाखंड बनाये हैं बई इसका थोड़ा दान है। यज्ञ में सबका हक है जो भी आये सब खायें, फर्क नहीं करना।

**सभना नो करि दानु।।**

गुरु साहिब कहते अरे ! सबको दान किया कर। गुरु साहिब कहते जो भी भूखे आते हैं सबको रोटी खिलाया कर, सेवा किया कर।

**जनम करमु मलु उतरै**

जो तेरे कर्मों की मैल है, जन्मों की लगी हुई थी, तेरे अन्तःकरण को वह उतर जायेगी। जब नाम जपेगा, नाम सिमरन करेगा तो नम्रता इतनी आ जायेगी, अहंकार त्याग देगा। सब की सेवा करेगा और दान करेगा, तेरे कर्मों की मैल जन्म जन्मान्तर की उतर जायेगी। तुम पवित्र हो जाओगे।

**सेवा करत होइ निहकामी।।**

**तिस कउ होत परापति सुआमी।।** (पृ० २८६)

सेवा करने वाला - निष्काम, उसको परमेश्वर प्राप्त होता है।

**मन ते जाइ गुमानु।।**

तेरे मन के भीतर सेअहंकार चला जायेगा। जातियों का, धर्म का, फलां, ढिमका, यह बड़ा रोग लगा हुआ है, संसारी लोगों के मन को। यह बड़ा ही भारी रोग है। यह परिच्छन्न अहंकार ही रोग है। मैं ब्राह्मण हूं, मैं सिक्ख हूं, मैं फलां हूं, मैं ढिमका हूं, कहता यह जो तुझे रोग लगा हुआ है, न यह तेरा रोग तो जायेगा भाई।

**कामि करोधि न मोहीऐ।**

और काम क्रोध मोहित नहीं करेंगे-तेरे मन को। मन हो गया पवित्र, अब कोई नहीं काम क्रोध में जायेगा। तेरा मन पवित्र हो गया। वह काम क्रोध तुझे मोह नहीं सकेंगे।

**बिनसै लोभु सुआनु।।**

यह जो लोभ रुपी श्वान (कुत्ता) सारी दुनियां को खा गया, यह भी नाश हो जायेगा। यह लोभ रुपी श्वान ने क्या किया पब्लिक में, तुम्हें नहीं पता ? बस यह लोभ रुपी श्वान भी चला जायेगा। यह लोभ रुपी कुत्ता जब तक हृदय में है, तब तक आप ढूंढ लो, संत नहीं पा सकते।

**सचै मारगि चलदिआ**

जब आप सत्य के मार्ग पर चलोगे, जब सच्चे रास्ते पर चलोगे, सच्चा कौन है ? परमेश्वर का नाम और परमेश्वर। दो सच्चे हैं, एक परमेश्वर और एक परमेश्वर का नाम। क्यों ? नाम नामी को मिलाता है। यदि वह पवित्र न हो, अन्तःकरण को पवित्र न करे, फिर परमेश्वर के साथ कैसे मिलेंगे ? जब तुम सत्य मार्ग मान को लेकर नाम के साथ मन को जोड़ोगे, फिर तुम -

**सरब धरम महि स्रेसट धरमु**
**हरि को नामु जपि निरमल करमु।।** (पृ० २६६)

समस्त धर्मों में बड़ा धर्म एक है, बई - हरि का नाम जपना और शुभ कर्म करना। निष्काम कर्म करो, निष्काम सेवा करो और हरि का नाम कभी छोड़ों नहीं। गुरु अमरदेव जी ने यदि बारह वर्ष गागरें उठाई और नाम भी नहीं छोड़ा और सेवा भी नहीं छोड़ी। इसलिये न सेवा छोड़ों और न नाम छोड़ो लेकिन समस्त कार्य करते रहो।

**उसतति करे जहानु।।**

फिर तुम्हारी स्तुति संसार करेगा। फिर आपकी स्तुति परमेश्वर करेगा। मैं तुम्हें एक कथा सुनाता हूँ। मुझे वह बड़ी सुन्दर लगी। एक शिष्य गया एक संत के पास, कहता जी, कोई सेवा बताओ। वे कहते कि तुम भाई चावल कूटा कर यज्ञ के। वहां यज्ञ वितरित होता था। वे पहले ऊखल में चावल कूटा करते थे। वह ज्यों चावल कूटने लगा, चौबीस वर्ष चावल कूटता रहा। एक दिन संत कहते कि भाई हमने जाना है। भाई अब तुम अपना प्रबन्ध कर लो। उन्होंने सोचा इनके स्थान पर, गद्दी पर, किसको बिठायेंगे ? उन्होंने समाचार प्रकाशित किये, सब कुछ किया, भई अच्छा योग्य पुरष हो, बिठाई सारी संगत। वह जब बातें लिखकर ले गया पूछने के लिये सबको, तो वह चह चावल कूटने वाला कहता, यहां आओ, में बताता हूं तुम्हें। वह पूछने वाला बड़ा पढ़ा लिखा था, बड़ा हंसा, उसने कहा यह क्या बतायेगा, चावल कूटने वाला ? उसने लिख दिया। वहाँ न शुद्ध है न अशुद्धि है, न राग है न द्वेष है, ऐसा उसने लिख दिया। उसने जब सुनाया वे संत कहते उसको बुलाओ। उसके तो द्वार खुले हुए हैं। वह तो सही है। उसको लाये, उसको कह दिया संतों ने, बई बात सुन ले भाई ! तुम बड़े पवित्र हो, बड़े योग्य हो। वह कहता पवित्र अपवित्र तो कोई है ह नहीं। संतों ने अपनी चिप्पी दण्ड आदि सब दे दी, कहते-मेरे सम्मुख गद्दी पर बिठा दो, उसको गद्दी पर बिठा दिया। यह है कल्याण का मार्ग। यदि वह मीसरे दिन पूछने लग जाता, बई तीन दिन मुझे चावल कूटते को हो गये, अब बताओ क्या करें। इतनी जल्दी क्यो हो जायेगा ? बारह वर्ष गुरु साहिब ने गागरें वहन की, एक दिन गैर हाजिर हुए हैं कभी ? तुम ये शुभ कार्य किये जाओ। अन्य सब ध र्मों से बड़ा धर्म यही है।

**सरब धरम महि स्रेसट धरमु**
**हरि को नामु जपि निरमल करमु।।** (पृ० २६६)

'हरि को नाम जपि' इसका तो जाप करो। 'निरमल करम' शुभ कर्म, निष्काम शुभ कर्म करो। पब्लिक की सेवा करो, जितनी आप से हो सकती है। लूटो न पब्लिक को। दो चीजें कभी नहीं लूटी जाती, देश एवं जाति। न तो देश लूटा जाता है, न जाति लूटी जाती है। ये नहीं दोनों चीजें लूटने वाली। यदि इनको ही लूटने लग गये फिर तो दिवाला निकल जायेगा।

इसलिये भाई यह कार्य सब से अच्छा है।

**अठसठि तीरथ सगल पुंन**

अठसठ तीर्थों का पुण्य तुम्हें एक ही बार में मिल जायेगा। समस्त पुण्य तुम्हें प्राप्त हो जायेंगे।

**जीय दइआ परवानु।।**

यदि तुम एक बार जीव पर दया कर दो बस ! यदि तुम एक जीव के ऊपर दया कर दो, अठसठ तीर्थों का तुम्हें पुण्य हो जायेगा। जीव को मारा न करो, मारना अच्छा नहीं होता। दया किया करो।

**जिस नो देवै दइआ करि**

यह कर्म जिसको दया करके परमेश्वर दे दे।

**सोई पुरखु सुजानु।।**

वह पुरुष बड़ा योग्य है, ज्ञाता ज्ञेय है। व्यापक के साथ एक हो गया। वह बख्शा गया।

**जा कउ अपुनी करै बखसीस।।**
**ता का लेखा न गनै जगदीस।।** (पृ० २७७)

**जिना मिलिआ प्रभु आपणा**

जिनको अपना प्रभु मिला, अपनी आत्मा। जो परमेश्वर सबके हृदयों में बैठा है, आत्मस्वरुप होकर वह जिसको मिल गया, प्राप्त हो गया। जो इनका खास आपा है, वह दाना बीना साई जिनको मिल गया।

**नानक तिन कुरबानु।।**

मैं उनपर गुरु साहिब कहते कुर्बान जाता हूँ, उनको ऊपर बलिहारी जाता हूँ।

**बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरू ।**

❑

**१ ओंकार सतिगुरु प्रसादि।।**

# 13

**सोरठि महला ५।।**

**सिमरि सिमरि गुरु सतिगुरु अपना सगला दूखु मिटाइआ।**
**ताप रोग गए गुर बचनी मन इछे फल पाइआ।।१।।**
**मेरा गुरु पूरा सुखदाता।।**
**करण कारण समरथ सुआमी पूरन पुरखु बिधाता।। रहाउ।।**
**अनंद बिनोद मंगल गुण गावहु गुर नानक भए दइआला।।**
**जै जै कार भए जब भीतरि होआ पारब्रहमु रखवाला।।२।।**

(पृ० ६१६)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु, सतिनाम श्री वाहिगुरु।

*गुरु परमेसरु एको जाणु।।*
*जो तिसु भावै सो परवाणु।।* (पृ० ८६४)
*ब्रहम गिआनी कउ खोजहि महेसुर।।*
*नानक ब्रहम गिआनी आपि परमेसुर।।* (पृ० २७३)
*सत् पुरखु जिनि जानिआ सतिगुरु तिस का नाउ।।*
*तिस कै संगि सिखु उधरै नानक हरि गुन गाउ।।* (पृ० २८६)

गुरु और परेश्वर एक हैं। गुरु ब्रह्मज्ञानी का नाम है। पूर्ण गुरु भी ब्रह्मज्ञानी का नाम है। परमेश्वर एक है, दो नहीं। वह एक सबके हृदयों में परब्रह्म परमेश्वर बैठा है। गहन (ब्रह्म) विद्या जब आती है उसमें एक ही अर्थ करना पड़ता है। बई ! परमेश्वर जो परब्रह्म है, वह सब के हृदय में है।

**घट घट मैं हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।।**
**कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि।।** (पृ० १४२७)

गीता में भगवान् ने उसको क्षेत्रज्ञ कहा जो ऋषियों मुनियों ने सबसे

पहले दो बातें कही। एक क्षेत्र और एक क्षेत्रज्ञ। क्षेत्र सारे शरीर से लेकर जो कुछ है, वह सब क्षेत्र है और क्षेत्रज्ञ परमेश्वर है, चेतन है, व्यापक है, परिपूर्ण है, वह एक है। वि एक जो निराकार है, निरंजन है, वह सब के भीतर, वह आपा है, उसको आत्मा कहते हैं।

*अंतर आतमै ब्रहम न चीनिआ।*
*माइआ का मुहताजु भइआ।।* (पृ० ४३५)

यह जीव किसी भी प्रकार से इसीलिये माया के प्रभाव में तब तक आता है, जब तक इसको निरंजन का ज्ञान नहीं होता।

*थापिआ न जाइ कीता न होइ।।*
*आपे आपि निरंजनु सोइ।।* (पृ० २)
*निरगुनु आपि सरगुनु भी ओही।।*
*कला धारि जिनि सगली मोही।।* (पृ० २८७)

निर्गुन और सगुण में कोई भेद नहीं है। संसारकार वृत्ति में वह सगुण रुप दृष्टिगोचर होता है और सगुण से लेकर निर्गुण तक वह निराकार ही रहता है। इसलिये वह निराकार ही साकार है और साकार ही निराकार है और पहले निराकार होगा, फिर साकार होगा। निराकार तीनों कालों में एक रस रहेगा। साकार जैसे भक्तों की भावना होगी वैसे होगा। यह भी एक नियम है। जिस रुप में वे प्रह्लाद को प्राप्त हुए। वह परब्रह्म परमेश्वर जो परिपूर्ण व्यापक है, उसको समस्त वे व्यापक परिपूर्ण पहचानते थे लेकिन ध्रुव को वह सगुण रुप प्राप्त हुआ और मंत्र भी उनका अलग था। उसका राम राम, उसका ॐ तत् सत्। लेकिन मंत्र देने वाला गुरु एक है, नारद। उसने अधि ाकारी देखकर मंत्र दिये। वह योग्य अधिकारी था, उसके ऊपर बड़ी कृपा हुई थी। इसलिये उसको वह पूर्ण्ज परब्रह्म का ज्ञान ाि। आत्मा शरीर में कहते हैं। उसको आपा कहते हैं। पर वास्तव में एक ही है। उसमें सगुण भी उपाधि है और निर्गुण भी उपाधि है। वही समाधि में आता है। निर्विकल्प समाधि में से सविकल्प समाधि में। वह परमेश्वर में सब कल्पित है। समाधि भी कल्पित है। वह समाधि तो कभी क्षणमात्र ही लगती है।

*एक चित जिहि इक छिन धिआइओ।।*
*काल फास के बीच न आइओ।।* (अकाल उसतति)

इसलिये वह समाधि के पहले भी था और वही था समाधि में और बाद में 'आपा' ज्ञान हो जायेगा।

*सो बउरा जो आपु न पछानै।।*
*आपु पछानै त एकै जानै।।* (पृ० ८५५)

कबीर साहिब को कहते वह पागल है। वह कहता-हाँ।

**सो बउरा जो आपु न पछानै।।**

पागल वह होता है जिसने अपने आप को नहीं पहचाना, जिसने 'आपा पहचान' लिया वह 'एकै जानै' वह एक को जान लेता है।

*एकम एकंकारु निराला।।*
*अमरु अजोनी जाति न जाला।।*
*अगम अगोचरु रुपु न रेखिआ।।*
*खोजत खोजत घटि घटि देखिआ।।* (पृ० ८३८)

चार प्रकार के प्राणियो के हृदयों में एक परब्रह्म परमेश्वर है। इसमें तुम आप ही गहराई से देख लो, आपकी वृत्ति जब आप में, जो चेतन है, उसके साथ गुरु परमेश्वर की कृपा से जब जुड़ जायेगी उस समय तुम्हें आपे का ज्ञान हो जायेगा। जब तक तुम हृदय की सत्ता मानते हो, तब तक दो सत्तायें होंगी लेकिन बुद्धि को देखने-जानने वाला दाना बीना साई मालिक वह एक है। एक जो है वह उपाधि भेद उसमें नहीं होता। जब एक का सब में ज्ञान हो जाता है उसकी वृत्ति जब तदाकार हो जाती है, उसके पश्चात् उसको लक्ष्य का ज्ञान हो जाता है और सारा जो क्षेत्र है वह सारा उसके प्रत्यक्ष है। लेकिन प्रत्यक्ष कर्ता, वह आप क्षेत्रज्ञ परमेश्वर है जब इसको यह ज्ञान हो जाता है।

*अनन्या श्र चिन्तयन्तो मांम् ये जनाः पर्युपासते।।*
*तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।* (गीता ६/२२)

अन्य कोई मार्ग ही नहीं मोक्ष का, ज्ञान और नाम के बिना। नाम का सिमरन, पहला इसका साधन है जब सिमरन इसका ठीक चल पड़े 'एक रस' तो इसको अपने स्परुप का ज्ञान हो जाता है।

*सिमरि सिमरि नामु बारंबार।।*
*नानक जीअ का इहै अधार।।* (पृ० २६५)

जीव का आधार ही सिमरन है, सिमरन जो है वह एक परमेश्वर का हो।

***खोजत खोजत ततु बीचारिओ दास गोविंद पराइण।।***
***अबिनासी खेम चाहहि जे नानक सदा सिमरि नाराइण।।***

(पृ० ७१४)

नारायण पद के ग्यारह अर्थ किये, लेकिन फिर भी उसने ग्यारह करके कहा, अनेक अर्थ हैं, मेरी बुद्धि यहां तक पहुंची है, वह मनुष्यों का आसरा, उसका अत्थान, परमेश्वर एक है। अध्यस्त सदैव ही नाना हहोते हैं। जो अध यस्त होगा वह ज्ञेय होगा। ज्ञाता नहीं होगा। ज्ञाता तो सदैव एक ही होगा। यह नियम है। वह चेतन ही होता है। चेतन एक है, वह सत् है, चित्त है, आनंद है, अनंत है। इसलिये वह परमेश्वर का जब इसको तक्ष्य हो जाये तो ज्ञेय जितने भी नाना होंगे जड़ होंगे। जहां तक इसकी वृत्ति पहुंचती है यह ज्ञेय है, ज्ञाता नहीं। इसलिये ये दो ही पक्ष लिखे हैं। कहीं लिखा 'तत्त्व वस्तु अहं आत्मा ब्रह्म विद्' भी श्रुतियों ने। कहीं उपासक-उपस्य भाव लिखा है। ये भी श्रुतियों हैं लेकिन दोनों पक्षों का एक ही ज्ञाता है। यह अभेद पक्ष की श्रुतियां हैं। श्रुति भी दो पक्षीय हो जायेगी। परमार्थ और उपासक। लेकिन एक जो रहेगा वह ज्ञाता है। ज्ञाता कभी बदला नहीं। ज्ञाता कभी ज्ञेय नहीं हुआ। ज्ञाता जड़ नहीं होता, ज्ञाता चेतन होता है। तुम्हारी बुद्धि रुपी गुफा में जो बैठा है, बुद्धि को जो देखता है और जानता है लेकिन वह तुम्हें प्रत्यक्ष नहीं मिलेगा, लक्ष्य होगा। वह अलख है लेकिन लक्ष्य होगा पूर्ण गुरु की कृपा से। पूर्ण गुरु जब भी तुम्हें उपदेश करेगा। वह सिमरन और सेवा का ही करेगा। यह गुरु घर का मत है। सेवा से मन शुद्ध हो जाता है और सिमरन परमेश्वर के साथ जोड़ देता है। जब इसकी वृत्ति परमेश्वर के साथ एक बार जुड़ जाये फिर इसको लक्ष्य होकर साक्षात्कार हो जाता है। फिर उसको कोई संशय नहीं रहता। वह जन्म मरण वाली वस्तु नहीं। वह तो प्राप्त करने वाली वस्तु है, न जाने वाली चीज है। तुम विचार करो जो बुद्धि की गुफा में बैठा है, वही बुद्धि को देखता, वह जानता है, वह निराकार है, वह चेतन है, वह ज्ञाता है। उसको साक्षी, ज्ञाता, द्रष्टा जो भी कह दे, पारख ऋ वे सब उसके विशेषण हैं। वह एक है। लेकिन वह ज्ञाता एक चेतन ही होगा। जब भी तुम संसार की नाना प्रकार की ज्ञेय को देखोगे लेकिन ज्ञाता नही बदलेगा। ज्ञेय

ने तो बदलना ही है यदि ज्ञेय न बदले तो संसार का काम ही न चले और यदि बदल गया तो परमेश्वर है नहीं। बदलने वाली वस्तु मिथ्या होती है। वह जो आपकी बुद्धि में बुद्धि को देखता है, जानता है, दाना बीना साईं है, वे सब की बुद्धियों में एक ही है। वह निराकार है, वह निरंजन है, वह जब तक -

*ना हरि भजिओ न गुर जनु सेविओ नह उपजिओ कछु गिआना।।*
*घट ही माहि निरंजनु तेरै तै खोजत उदिआना।।* (पृ० ६३२)

तू तो संसार में, जंगल में, फँसा पड़ा है और तू ने भजन नहीं किया।

**ना हरि भजिओ न गुर जनु सेविओ।।**

न गुरुजनों की सेवा की। जिन्होंने अपने गुरु जनों की सेवा की। गुरुजनों की सेवा गुरु अंगद देव महाराज ने की।

*नानक गुर ते गुरु होइआ वेखहु तिस की रजाइ।।* (पृ० ४६०)

गुरु के साथ मिलकर गुरु की सेवा अङ्गैर गुरु हो गया।

**नह उपजिओ कछु गिआना।।**

तुझे वह पूर्ण ज्ञान जो था वह न उत्पन्न हुआ।

**घट ही माहि निरंजनु तेरै**

तेरे हृदय में निराकार परमेश्वर है।

**तै खोजत उदिआना।।**

तू उद्यान (वन) को खोजता फिरता है और संसार रुपी जंगल में परमेश्वर नहीं किसी को मिला। गुरुद्वारा में ही मिलेगा, उसको गुरु ही लक्ष्य करायेगा। पहले सारे क्षेत्र को निर्णाय सुत्रा करके सब तुम्हें बता देगा।

*द्रिसटिमान है सगल मिथेना।।* (पृ० १०८३)

जो देखने में आता है वह मिथ्या होता है, झूठ होता है।

*मूई सुरति बादु अहंकारु।।*
*ओहु न मूआ जो देखणहार।।* (पृ० १५२)

देखने वाला, मरने वाला नहीं होता। सुरत अैर परिच्छन्न अहंकार बदलेगा।

*मूई सुरति बादु अहंकारु।। ओह न मूआ जोदेखणहारु।।२।।*
*जै कारणि तटि तीरथ जाही।। रतन पदारथ घट ही माही।।*
*पड़ि पड़ि पंडितु बादु वैखाणै।। भीतर होदी वसतु न जाणै।।३।।*

*हउ न मूआ मेरी मुर्ठ बलाइ।। ओहु न मूआ जो रहिआ समाइ।।*
*कहु नानक गुरि ब्रहमु दिखाइआ।। मरता जाता नदरि न आइआ।।४।।*

(पृ० १५२)

इसलिये तेरी आत्म वस्तु तेरे पास थी, तेरे हृदय में थी लेकिन तुमने तीर्थों पर जाकर मीन जाना, पढ़कर भी न जाना, तुम्हें उस अपने आत्मा का लक्ष्य न हुआ। वह लक्ष्य है, सूचक नहीं किसी का। चेतन कभी भी किसी का सूचक नहीं हुआ। वाचक विद्या विशिष्ट होता है इसलिये वह जो ज्ञाता है वह तेरा अत्मा है और ज्ञेय सारी मिथ्या है। उस ज्ञेय को तुम निर्णाय करके देख कर जान लेना कि मिथ्या है लेकिन ज्ञाता तो पहले ही ज्ञान स्वरुप है, वह तो चेतन है, व्यापक ळै। तेरा आत्मा भी वही है, आपा भी तेरा वही है, वही पारखै लेकिन उससे बिना अन्य तेरी बुद्धि कभी सत्ता में न जाये। सत् सत्य ही रहेगा। असत् असत्य ही रहेगा। ज्ञाता ज्ञाता ही रहेगा। नित्य नित्य ही रहेगा। अनित्य अनित्य ही रहेगा। ये कभी बदले नहीं। ज्ञाता कभी नहीं बदलेगा। ज्ञेय बदलेगा, नित्य बदलेगा, नित्य कभी नहीं बदलेगा। असत्य बदलेगा, सत्य कभी नहीं बदलेगा। सत्य से ही यह संसार बना है।

*आपि सति कीआ सभु सति।।*
*तिसु प्रभ ते सगली उतपति।।* (पृ० २६४)

इसलिये यह सब परमेश्वर की लीला है। परमेश्वर इसकी उत्पत्ति करता है, इसका पालन करता है और यही लय करता है। वह निराकार 'घट घट मैं हरि जू' है। सब के हृदय में है। सब का आत्मा है लेकिन जब इसको यह दृढ़ निश्चय हो गया तो फिर यह पीछे नहीं आयेगा। फिर सिमरन द्वारा यह परमेश्वर के साथ मिल जायेगा। हां चल भाई -

**सोरठि महला ५।।**
**पंचम पातशाह श्री गुरु अर्जुन देव जी महाराज -**
**सिमरि सिमरि गुरु सतिगुरु अपना**

भाई ! अपने सत्गुरु के द्वारा उस परमेश्वर का सिमरन कर, जो व्यापक है, परमेश्वर का सिमरन करना है। गुरु ने कहीं नही कहा कि मेरा सिमरन करो। जब भी गुरु ने शिक्षा दी, परमेश्वर का ही ध्यान बताया, परमेश्वर का ही नाम बताया, परमेश्वर का ही सिमरन बताया। वह एक है।

*जोति रुपि हरि आपि गुरु नानकु कहायउ।।*
*ता ते अंगदु भयउ ततु सिउ ततु मिलायउ।।*

(पृ० १४०८)

ज्योति स्वरुप जो परमेश्वर है, चाहे वह गुरु आप कहलाया –

**जोति रुपि हरि आपि गुरु नानकु कहायउ।।**

ठीक है लेकिन उसने यह कहीं नहीं कहा कि बई – मेरा सिमरन करो। गुरु ने कहा, उस परमेश्वर का सिमरन कर।

**सिमरि सिमरि नामु बारंबार।।**
**नानक जीअ का इहै अधार।।**

उसके नाम को बार बार सिमरन करो। जब तुम्हारा सिमरन एक रस चल गया, तुम्हें परमेश्वर प्राप्त हो जायेगा। इसलिये गुरु से मंत्र लेकर गुरु से शिक्षा लेकर, जो गुरु तुम्हें ज्ञान ध्यान बताये, उसको दृढ़ करके वही काम करना।

**सगला दूखु मिटाइआ।।**

जितना भी दुःख है वह सारा मिट जायेगा। यह समस्त संसार ही मिथ्या है। इसकी सत्ता ही नहीं। सत्ता एक है, दूसरी सत्ता तो कोई है नहीं। यदि दो सत्तायें होती तो कोई स्थान होता। एक सत्ता है इसलिये वह सुख स्वरुप है, वह सत् चित आनन्द स्परुप है। इसलिये यह सब मिथ्या है। समस्त दुःख नष्ट हो जायेंगे जो स्वर्ग सुख है, उसकी भी ब्रह्मज्ञानी कभी इच्छा नहीं करता होगा। क्यों ? यह भी मिथ्या ही है। स्वर्ग में जायेगा, चन्द्र लोक में मुड़कर फिर आयेगा लेकिन इसका आना जाना तो न मिटा। सुख विशेष को स्वर्ग कहते हैं, और कोई स्वर्ग नहीं है। इसलिये समस्त दुःख मिट जायेंगे, सिमरन द्वारा।

**ताप रोग गए गुर बचनी**

जब गुरु ने वचन किया अैर यह गुरु के वचनों के अनुसार चला। ये ताप नाना प्रकार के समस्त नष्ट हो जायेंगे। वे आप चले जायेंगे। क्यों ? उनकी सत्ता नहीं। जिसकी सत्ता नहीं, वह वस्तु होती ही नहीं। वह कल्पित होती है। अध्यस्त होती है। उसकी सत्ता भिन्न नहीं होती। सर्प की सत्ता रज्जु से अलग कभी नहीं हुई। शुक्ति को चांदी देखेगा, चांदी की सत्ता, शुक्ति से

अलग नहीं हुई। परमेश्वर की जो सत्ता है वहीं संसार की सत्ता है। सत्ता स्वरुप वह आप ही है। इस करके नाना प्रकार के जो दुःख हैं वह मि जायेंगे।

**मन इछै फल पाइआ।।**

जो मन में इच्छा थीं वह फल पाया। इसको आत्म फल प्राप्त हुआ। वास्तविक फल प्राप्त हुआ। और भी संसार के समस्त सुख इसको स्वमेव प्राप्त होंगे।

**मेरा गुरु पूरा सुखदाता।।**

पंचम पातशाह महाराज कहते मेरा जो गुरु है - गुरु रामदास -

**हरि जीउ नामु परिओ रामदास।।**

यह पूर्ण गुरु, यह सुखदाता है। इसलिये मेरा गुरु पूर्ण है, सुखदाता है, यह मुझे बख्शने वाला है।

**करण कारण समरथ सुआमी**

वह जो स्वामी मालिक है, करण और कारण में सब कुछ आप ही है। उसके हुक्म में ही अब कुछ होता।

***करण कारण प्रभु एक है।*** (पृ० २७६)

दूसरा नहीं कभी होता। इसलिये करण कारण मेरा मालिक एक है, वह मेरा गुरु रामदास है, जिसने मेरे सारे दुःख मिटा दिये।

**पूरन पुरखु बिधाता ।। रहाउ।।**

वह परिपूर्ण 'पुरखु' है 'पुरखु बिधाता' होता है, फल प्रदाता। वह परमेश्वर फल प्रदाता है। वह परमेश्वर परिपूर्ण है, वह मेरा गुरु रामदास है।

**अनंद बिनोद मंगल गुण गावहु**

आनंद, सुषुप्ति में तुम देखते हो जब तुम्हारी प्रगाढ़ निद्रा होती है, तुम्हें वहां आनंद मिलता है। कहते 'बड़े सुख से सोये, कुछ न जानते भये'। वह न जानना अज्ञान था। अज्ञान न होता, ब्रह्मज्ञानी हो जाता। इसलिये तुम्हारा जो सुख स्वरुप दाता है उसकी अज्ञान की उपाधि करके पूर्णज्ञान नहीं हुआ है। इस सुख में तो यह पहुंच गया लेकिन साथ में अज्ञान की निवृत्ति नहीं हुई। और जो इसकी ब्रह्माकार वृत्ति है वहां अज्ञान आवरण की निवृत्ति हो तो इसको अपने आप की सूझ आ जायेगी। सूझ आयेगी तो उसको ब्रह्मज्ञानी कहेंगे, इसको सुख स्वरुप कहेंगे, व्यापक कहेंगे, पूर्ण कहेंगे, मालिक कहेंगे।

**गुर नानक भए दइआला।।**

और गुरु रामदास हम पर बड़े दयालु हुए। 'नानक' पद यहां गुरु रामदास को कहते हैं। पंचम पातशाह कहते हैं वह गुरु केरे पर बड़ा दयालु हुआ, बड़ा कृपालु हुआ।

**जै जै कार भए जग भीतरि**

मेरी जय जयकार गुरु रामदास की कृपा से हुई है। मुझे गुरुदेव ने-

**गुर जोति अरजुन माहि धरि।।**

जब यह ज्योति अर्जुन देव जिसका नाम है उसमें रखी तो वह गुरु परमेश्वर एक हो गये। उसको ज्ञान हो गया इसलिये वह ज्योति स्वरुप गुरु नानक ने मेरे पर बड़ी दया की, बड़ी कृपा की

**होआ परब्रह्म रखवाला।।**

अब हमारा रक्षक परब्रह्म परमेश्वर हो गया।

*राखा एकु हमारा सुआमी।।*

*सगल घटा का अंतरजामी।।* (पृ० ११३६)

हमारा रक्षक अब एक है। जब एक रक्षक हो जाये तो नाना रक्षकों की आवश्यकता नहीं होती।

**राखा एकु हमारा सुआमी।।**

**सगल घटा का अंतरजामी।।**

जो सब के हृदयों की बातों को, संस्कारों को, कामनाओं को, वासनाओं को, सब को जानने वाला परमेश्वर मालिक है वह हमारा रक्षक है। अब परमेश्वर के बिना अन्य कोई रक्षक नहीं। प्रह्लद ने एक ही बात कही थी कि मेरा रक्षक परमेश्वर है। उसने कहा-कहां है ? उसने उसकी ओर इशारा किया कि उसमें से ही प्रकट होकर, उसकी रक्षा की। क्यों ? व्यापक तो सब में है इसलिये परमेश्वर रक्षक जब हो जाये फिर और रक्षकों की आवश्यकता नहीं होती। न ही अन्य रक्षकों की इसकी इच्छा ही रहती है। जब इसका दृढ़ निश्चय एक परमेश्वर पर हो जाये वह एक व्यापक है, परिपूर्ण है घट घट में बसता है, वह परब्रह्म परमेश्वर है, वह हमारा रक्षक है। वह रक्षक किसने बनाया है ? गुरु रामदास ने वह हमारा रक्षक बनाया। गुरु रामदास भी आप परमेश्वर है।

*हरि जीउ नामु परिओ राम दासु।।* (पृ० ६१२)

उसके सम्बन्ध के ाकरण रामदास नाम पड़ गया है वह परब्रह्म परमेश्वर है इसलिये गुरु के साथ मिलने से –

*गिआन अंजनु गुरि दीआ अगिआन अंधेर बिनासु।।*
*हरि किरपा ते संत भेटिआ नानक मनि परगासु।।* (पृ० २६३)

हरि कृपा से जब संत का मिलाप हुआ हमारे मन में ज्ञान का प्रकाश हो गया।

*संत संगि अंतरि प्रभु डीठा।।*
*नामु प्रभु का लागा मीठा।।* (पृ० २६३)

वह हमें कभी भूलता नहीं। इतना प्रिय है परमेश्वर कभी भूलता नहीं। परमेश्वर जिसको प्राप्त हुआ। कबीर को गंगा में फैंका, जंजीर से बांधकर। लकड़ों में डालकर आग लगाई, बंद किया, वह राम राम करता, कबीर उठ बैठा और हाथी के आगे फैंका लेकिन आप ही कबीर साहिब कहते हैं –

*बूझी नही काजी अंधिआरै।।* (पृ० ८७०)

इस अंधे काजी ने तीन बार मेरी परीक्षा ली। लेकिन अंधे काजी को अब पता तक नहीं कि रक्षक इसका कौन है ? जिसने गंगा जल की लहरों से जंजीरें तोड़ दी और वह मृगछाला पर बैठा जा रहा है जो लकड़ियों में से आ गया और वह हाथी भी नमस्कार करके जाता है। लेकिन अंधे काजी को अब तक नही पता लगा इसका रक्षक कोन है ? प्रह्मद ने भी वही एक रक्षक कहा। जो भी संसार में ब्रह्मज्ञानी महापुरुष हुए जिन पर गुरु परमेश्वर की कृपा हुई उनको एक रक्षक का सहारा हो गया। उनके समस्त भय समाप्त हो गये, दुःख नष्ट हो गये उनको एक परमेश्वर प्राप्त हो गया। लेकिन तुम्हें इतना तो पता है कि जो आपके हृदय में बातें हैं, तुम्हारी बुद्धि में उनको वह देखता है, जानता है, वही परमेश्वर है।

*सभु किछु सुणदा वेखदा किउ मुकरि पइआ जाइ।।* (पृ० ३६)

वह सब सुनता और देखता है और उसके आगे इनकार कैसे करें ? लेकिन जो निराकार वस्तु है, वह तुम्हें आंखो से दृष्टिगोचर नहीं होती। तुम्हारी चित्तवृत्ति जब उसके आकार तदाकार हो जायेगी। वृत्ति ने आवरण भंग करना है। चेतन की प्राप्ति नहीं करनी। चेतन तो स्वतः प्रमाण है। स्वतः

प्रकाश है, वह परतः प्रमाण तो है नहीं। निश्चलदास ने कहा –

*एक समें ही भानि होइ साकशी अरु आभास।*

(निश्चलदास 'विचार सागर' ४/११६)

वह दूसरा जो आभास सहित वृत्ति है वह तो तुम्हें दिखाई देता है लेकिन जिसके आकार वृत्ति है, वह है निराकार लेकिन तुम्हें ऐसे तो पता है भाई वह दाना बीना है। वह देखता भी है, जानता भी है और सुनता भी है।

*साकशी ब्रहम सरुप इक नहीं भेद को गंध।*
*राग दवैश मती के धरम ता मैं मानत अंध।*

(निश्चलदास 'विचार सागर' २/१२)

**साकशी ब्रहम सरुप इक नहीं भेद को गंध।**

वह तुम्हारा ज्ञाता साक्षी है। वह व्यापक है।

**नहीं भेद को गंध।**

कभी रंच मात्र उस में भेद नहीं हुआ, सदैव अभेद है।

**ता मै मानत अंध।**

बुद्धि के धर्मों को चेतन में मानते हैं, यह भूल है, यही विपर्यय है, यह बुद्धि के धर्मों को मानता है चेतन, और चेतन तो निराकार है। वह ज्ञाता है, व्यापक है, परिपूर्ण है, सर्वज्ञ है। लेकिन यह तो नहीं। कभी आपने आंखो से, तुम्हारी बुद्धि में चेतन है, देख लिया ? क्यो ? उसको देखने वाला ज्ञान ही है। वह ज्ञान ही चक्षु है। इसलिये आवरण भंग होने हैं ओर तुम्हारा आपा तो वही है। उसको आत्मा कहते हैं लेकिन –

*अंतर आतमै ब्रहमु न चीनिआ माइआ का मुहताजु भइआ।।*

(पृ० ४३५)

माया में मन रम गया, यहां ठहर गया मन, कहीं मोह हो गया, कहीं लोभ हो गया, इसलिये जब यह सब को मिथ्या समझ लेगा इसमें एक क्षेत्रज्ञ रह जायेगा।

*क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत।।* (गीता १३/२)

सतस्त क्षेत्रों में क्षेत्रज्ञ मैं हूँ, अन्य कोई नहीं है। अस 'मैं' का कोई अहंकार नहीं है, यह 'मैं' का अर्थ ईश्वर है। मैं ईश्वर हूं 'क्षेत्रज्ञ' क्षेत्रज्ञ है जो वही ईश्वर है, वही व्यापक है, वही 'एक' है, वही परमेश्वर सार व्यापक

है। लेकिन इसको भूल कर नाना प्रकार की भूलें पड़ने से जीव बन गया, अपने को जीव मानने लग पड़ा। लेकिन जीव कब तक है ? जब तक भूल है, जब भूल निकल गई तो जीवन भी गया। जीवत्व नाम ही भमल का है और चेतन तो एक ही है। निराकार है निरंजन है।

**घट घट मै हरि जू बसै**

इसलिये उसके साधन हैं। साधन क्या हैं ?

***ना हरि भजिओ न गुर जनु सेविओ नह उपजिओ कछु गिआना।।***
***घटि ही माहि निरंजनु तेरै ते खोजत उदिआना।।*** (पृ० ६३२)

तू ने उद्यान (जंगल) को खोजा।

***मन रे कउनु कुमति तै लीनी।।***
***पर दारा निंदिआ रस रचिओ राम भगति नहि कीनी।।***

(पृ० ६३२)

***तू राम की भक्ति, व्यापक नाम की***
***रमत राम जनम मरणु निवारै।।*** (पृ० ८६५)

उसकी भक्ति करता तो -

***मुकति पंथु जानिओ तै नाहनि धन जोरन कउ धाइआ।।***
***अंति संग काहू नही दीना बिरथा आपु बंधाइआ।।*** (पृ० ६३१)

तूने अपने मन को उसमें बांध लिया, चेतन नहीं कभी बंधता होता। चेतन ने तो साक्षी रहना है, ज्ञाता रहना है, द्रष्टा रहना है। वह बंधता तो कभी होता नहीं, इसलिये तू अपने मन को वहां बांध लिया। वह 'मन' नाम है वृत्ति का, तुम ने वृत्ति तदाकार नहीं की। इसलिये -

***ना हरि भजिओ न गुर जनु सेविओ नह उपजिओ कछु गिआना।।***
***घटि ही माहि निरंजनु तेरै तै खोजत उदिआना।।*** (पृ० ६३२)

तू वन में खोजता रहा, तुम भटक गये संसार में। संसार में से परमेश्वर ढूँढता रहा। संसार में परमेश्वर नहीं होता। संसार को बनाने वाना पालन करने वाला, लय करने वाला परमेश्वर होता है। इसलिये -

**मुकति पंथु जानिओ तै नाहनि**

वह मोक्ष का मार्ग तमने जाना ही नहीं। वह तो घट घट में है।

**घटि ही माहि निरंजनु तेरे तै खोजत उदिआना।।**

*बहुत जनम भरमत तै हारिओ असथिर मति नही पाई।।*
*मानस देह पाइ पद हरि भजु नानक बात बताई।।* (पृ० ६३२)

गुरु साहिब ने यह बात बताई पहली पातशाही ने। भाई ! मनुष्य जन्म पाया है, हाि का भजन कर। यह भजन तुझे परमेश्वर के पास ले जायेगा। सिमरन, नाम जप, लेकिन श्वास-प्रश्वास जप। वह निदिध्यासन की परिपक्व अवस्था, समाधि में ले जाती है। समाधि का अर्थ है सम + धी। इसकी बुद्धि सम हो जाती है 'एक' में। इसलिये इसको अपने आप का ज्ञान हो जायेगा। लेकिन उसका साधन सिमरन है, जप है, सेवा है। यह अवश्य कर।

*सेवा करत होइ निहकामी।।*
*तिस कउ होत प्रापति सुआमी।।* (पृ० २८६)

केवल सेवा से भी काम चल जाता है लेकिन सेवा ठीक करें। यह सेवाक बनकर सेवा करे, तब यह परमेश्वर न बने। तब सेवाक बनकर सेवा करे, तब वहां पहुंच जायेगा, इसको आत्मा का लक्ष्य हो जायेगा। लेकिन फिर इसको कोई संशय प्रतिकूलता नहीं रहेगी। स्वरुप कर प्राप्ति के पश्चात् संशय प्रतिकूलता न किसी को हुआ न होगा। स्वरुप इसका चेतन है। यह 'सोइ' स्वरुप जिस प्रकार उपनिषद् में लिखा है 'सोई' उसने कहा 'सोई' ? कहता सोइ स्वरुप वह जो तेरा सोऽहम् स्वरुप है उसमें तू दृढ़ हो जा और अन्य संसार की समाधियों आदि ये सब कल्पित हैं, अध्यस्त हैं। यर्थाथ - वह व्यापक, चेतन, तेरा आपा है। उसमें कभी कोई विघ्न नहीं आया, कभी कुछ नहीं आया उसमें। वह तुम आप ही हो, वह तेरा आपा है। जो तेरा आपा है वही तू आप है। आत्मिक पदार्थ तेरा आपा नहीं। वे तो नाशवान् हैं, चित्त उत्पन्न होता है, नाश होता है परिवर्तित होता है। वह परमेश्वर न कभी उत्पन्न हुआ है न नाश हुआ है, न कभी बदला है, वह एक रस व्यापक है उसकी द्रष्टा रुप भी कहेंगे तो भी परम द्रष्टा चेतन एक ही होगा। वह द्रष्टा आंखें तो नहीं होती, बुद्धि नहीं होती, श्े तो सब जडऋ हैं, द्रष्टा चेतन ही होगा, ज्ञाता भी चेतन ही होगा, और साक्षी भी चेतन ही होगा, पारख भी चेतन ही होगा। लेकिन प्रत्यक्ष तो कराना है न जिज्ञासु को, इसलिये इतना कहा -

**अनद बिनोद मंगल गुण गावहु**

**गुर नानक भए दइआला।।**

जब तुम साधन करते रहे तो फिर तेरे पर दयालु हुये गुरु साहिब जी, गुरु रामदास दयालु हुए। गुरु अर्जुन देव कहते हमें यह प्राप्त हुआ -

**जै जै कार भए जब भीतरि।।**

हमारी भी जय जय कार 'भीतरि' जबत में हुई।

**होआ पारब्रहमु रखवाला।।**

अब हमारा

***राखा एकु हमारा सुआमी।।***

***सगल घटा का अंतरजामी।।*** (पृ० ११३६)

अब हमारा रक्षक एक है। भगत प्रहलाद का रक्षक एक था। कबीर का रक्षक एक था, गुरु नानक का रक्षक एक था। जो भी संसार में महापुरुष आये उन्होंने अपना रक्षक परब्रह्म परमेश्वर को कहा। चाहे उनको लक्ष्य भी हुआ, पर फिर भी भक्त प्रमाभक्ति द्वारा ही बने।

***प्रेम भगति ऊधरहि से नानक***

***करि किरपा संतु आपि करिओ है।।*** (पृ० १३८८)

जब यह प्रमाभक्ति में आयेगा, यह आप ही संत बन जायेगा। आप ही इसको लक्ष्य हो जायेगा, यह सब परमेश्वर की दया से होना है।

**बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरू ।**

❑

**१ ओंकार सतिगुरु प्रसादि।।**

## 14

**धनासरी महला ४।।**

**इछा पूरक सरब सुखदाता हरि जा कै वसि है कामधेना।।**
**सो ऐसा हरि धिआईऐ मेरे जीअड़े ता सरब सुख पावहि मेरे मना।।१।।**
**जपि मन सति नामु सदा सति नामु।।**
**हलति पलति मुख ऊजल होई है नित धिआईऐ हरि पुरखु निरंजना।। रहाउ।।**
**जह हरि सिमरनु भइआ तह उपाधि मतु कीनी वडभागी हरि जपना।।**
**जन नानक कउ गुरि इह मति दीनी जपि हरि भवजलु तरना।।२।।**

(पृ० ६६६)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु, सतिनाम श्री वाहिगुरु।

शब्द चौथे पातशह श्री गुरु रामदास द्वारा ईश्वरीय शब्द 'अकाल पुरखु' की वाणी अवतरित हुई है।

*हरि जीउ नामु परिओ रामदासु।।* (पृ० ६१२)

गुरु अर्जुन देव महाराज कहते हैं, हरि का नाम अब रामदास पड़ा हुआ है, लेकिन लोगों को पता नहीं। वह निर्गुण जो परमेश्वर था, वह सगुण होकर आप साक्षात् आया।

*जब बरदानि समै वहु आवा।।*
*रामदास तब गुरु कहावा।।*
*तिस बरदानि पुरातनि लीआ।।*
*अमरदासि सुर पुरि मगु लीआ।* (विचित्र नाटक)

यह दशम पातशाह के 'विचित्र नाटक' की पंक्तियाँ है। आपको पता है श्रीराम चन्द्र महाराज के दो राजकुमार हुए। एक का नाम लव और दूसरे का कुश था। कुश ने कसूर बसाया और लव ने लाहौर बसाया। पंजाब देश के बसाने बसले पहले यही हैं। त्रेता में इन्होंने इस देश को बसाया। बड़ा राज्य

अच्छा चला। बड़ा मेल जोल आपस में रहा। लेकिन तुम जानते हो माया जब जहाँ आ जाये, यह झगड़ा भी डाल देती है। आपस में इन का कुछ झगड़ा पड़ गया, सीमा बन्दी पर। कुशों ने लवों को निकाल दिया, पंजाब देश मे से। लव सनौढ़ देश में जीकर बसे, वहां अमरकोट है, उस राज में वहां का जो राजा था, उसने अपनी लड़की जो इनका राजकुमार था, उसके साथ विवाह दी। उसमें से जो लड़का पैदा हुआ उसका नाम रखा था 'सोढीराम' सोढत्र उनका नाम वहां से पड़ गया। उस स्थान से शक्ति लेकर उस राजा की, उसके एक ही लड़की थी, कुशों को आकर कसूर से निकाल दिया। कुश काशी में चले गये। वेद पड़ने से इनका नाम वेदी पड़ गया। अब भी आप काशी में जायेंगे वे तुम्हें कहेंगे जी यह एक वेदी है, एक वेद पढ़ा हुआ है। यह दो वेदी है, यह दो वेद पढ़ा हुआ है। यह जी त्रिवेदी है, यह चतुर्वेदी है। वहां से इन कुशों का नाम वेदी पड़ गया। जब इन सोढ़ियों को पता लगा कि उन्होंने संसार में बड़े धम्र कर्म किये और बड़ी शिक्षा दी, बड़े महापुरुष हुए चार वेदों को पढ़कर। जब उनको यह पता लगा कि हमारे भाई तो अब इस पदवी पर पहुंच गये, इन्होंने जाकर, उनको बड़े आदर के साथ लाया और सोढियों ने चार वेद सुनकर और अपना राजभाग वेदियों को देकर, ये सोढी जंगल में चले गये। वेदियों ने वरदान दिया कि चौथी गद्दी आपकी होगी। वे चौथी गद्दी पर गुरु रामदास जी ने आना था और वे गुरु रामदास को देकर इनकी अमानत गुरु अमरदास जी स्वर्ग चले गये। वे आप बैकुंठ को चले गये। उस गुरु रामदास द्वारा यह शब्द आया है। और अब तुम सुनो। चल भाई -

**धनासरी महला ४ -**

**धनासरी राम में चौथे पातशाह महाराज कथन करते हैं -**

**इछा पूरकु साब सुखदाता हरि**

हरि जो मालिक है परमेश्वर, वह सर्वसुखदाता, सर्व कामनाओं को पूर्ण करने वाला है। आप ने कभी सुना होगा सिद्ध गोष्ठ। उसमें आता है -

***सबदु गुरु सूरति धुनि चेला।।*** (पृ० ६४३)

जब गुरुनानक की बातचीत हुई गोरख के साथ, उन्होंने कहा तुम्हारा गुरु कौन है? कहते -

**सबदु गुरु सूरति धुनि चेला।।**

सुरत चेला है और शब्द गुरु है। तुम आप ही अपने भीतर झांककर देख लो, इस बात को -

***नाम संगि जिसक का मनु मानिआ।।***
***नानक तिनहि निरंजनु जानिआ।।*** (पृ० २८१)

नाम के साथ जिसका मन जुड़ गया उसको निराकार परमेश्वर प्राप्त हो जायेगा, गुरु साहिब कहते, तुम आप ही अपने भीतर देखो जब आपकी शब्द के साथ सुरत जुड़ी हुई होगी, संसार का कोर्ठ पदार्थ नहीं बापको हिलायेगा। उसको समाधि कहते हैं। जब भी आपका शब्द के साथ, वह शब्द चाहे सतिनाम है, वाहिगुरु है, चाहे संसार में अन्य कोई, ओंम् भी शब्द है। उपनिषद्रों में सब से पहले ओंम आता है और मुसलमानों में अल्लाह आ सकता है। वह भी निराकार का सूचक है। वह शब्द के साथ आपका मन मान जायेगा, फिर शब्द और शब्दी तो एक हैं, नाम और नामी तो एक हैं, तुम अपने भीतर यह बात देखो ? आपका कभी नाम के साा मन एक हुआ है ? गुरु ग्रन्थ साहिब के हम पास बैठें, यह तुम सच बताना, कभी हुआ है तो कहो ? तुम ने तो कुछ भी नहीं बताया। वह शब्द के साथ मन तुम्हारा एक हो जाना चाहिये। उसका नाम समाधि है और शब्द और शब्दी एक है, वह परमेश्वर है। तब तुम्हें परमेश्वर प्राप्त हो जायेगा। इसलिये गुरु साहिब ने लिखा है -

**नाम संगि जिसका मनु मानिआ ।।**

नाम के साथ जिसका मन एक हो गया, बस। उसने ही निरंजन को जान लिया। शब्द और शब्दी का भेद नहीं है।

***सति रुपु सति नामु करि सतिगुर नानक देउ जपाइआ।।***

(भाई गुरदास २४/१)

कहते सत्य स्वरुप का 'सति' नाम रखकर, श्री गुरु नानक देव जी ने संसार में जपा दिया। सत् तो परमेश्वर है और तो कोई है नहीं। सत् तो एक परमेश्वर है ओर सब मिथ्या है ओर तो माया, झूठ है। सत् एक आत्मा है, वही परमात्मा है। आत्मा और परमात्मा दो नहीं होते। और -

***नामु संगी सो मनि न वसाइओ।***

*छोड़ि जाहि वाहू चितु लाइओ।।* (पृ० ७१५)

हमारा साथी का नाम था, वह वृत्ति हमारा संगी नहीं, जो हमारा विचार है, यह हमारा संगी नहीं। यह तम स्वयं देखो। विचार तो हमारे बदलते ही हैं। एक विचार तो कभी रहा नहीं किसी का। यदि एक विचार रहे, तुम न रोटी खा सको, कोई काम न कर सको। फिर तो कोई काम न रहा यहां। ना ना, वह नाम जो, तुम्हारी जब वृत्ति में विचार आता है। वह विचार को देखने वाला तो चेतन आत्मा ही है, अन्य तो कोई है नहीं, वह है नाम।

**नामु संगी सो मनि न वसाइओ।।**

वह जो तुम्हारा संगी नाम था हे जीव ! तू ने मन में बसाया और बसता भी मन में ही है, देखता भी है। तुम ये सब जानते हो, तुम अपने मन को हर समय देखते हो। क्यों ? जब तुम कहते हो बइ कोई बुलाता है उस समय मन आपका इधर है, वह कहता अब बता ? वही कहता है आगे कहां था ? कहता मेरा मन वहां गया हुआ था। अब कहता आ गया और जब फिर बताता है उसको वह उत्तर भी दे देता है। वह जो मन ळैख वह तो आने जाने वाली वस्तु है, उसको विचार कह दो, संकल्प कह दो। संकल्प-विकल्प यही मन है। लेकिन जो देखने वाला है वह तो नहीं कभी बदला। वह तो यह भी बताता है पहले, बई ! मेरा यह विचार था, अब मेरा यह विचार हो गया। वह विचार को देखने जानने वाला तो आत्मा है, चेतन है ओर वे तुम हो। तुम वह नहीं ? मैं पूछता हूँ, अपने मन को देखते हो कि नहीं ? और देखने वाला चेतन है। देखने वाला बई चेतन होता है और देखने वाला ही सूक्ष्म रुप में परमेश्वर है, वही द्रष्टा है।

*मूई सूरति बादु अहंकारु।।*
*ओहु न मूआ जो देखणहारु।।* (पृ० १५२)

वे कहते गुरुनानक देव उस पंड़ित षट्शास्त्री को। वे कहते-पंडित वह मरने वाला नहीं, वह देखने वालाहै। तुम क्यों शोक करते हो इतना ? वह देखने वाला, मरने वाला नहीं।

**मूई सूरति बादु अहंकारु।।**

तुम्हारी वृत्ति बदलेगी, सुरत बदलेगी। वृत्ति कह लो, सुरत कह लो, संकल्प कह लो। ये तो पर्यायवाची शब्द हैं, पर देखने वाला तो एक ही है।

वह द्रष्टा है, वह पारख है।

*नानक पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछाणिआ।।* (पृ० १४४)

जो खोटे खरे संकल्पों को देखता है और साथ मेंटाइप भी करता है। यदि टाइप न करने वाला हो तो हमारे तो पुण्य-पाप वैसे ही निकल जायें। यदि हमने करना हो तो हम अच्छे अच्छे टाइप कर लें जो बुरे हैं वे छोड़ दे। वह टाइप करने वाला (टंकण) तो और है कोई। वह कौन है ? पारख है।

**नानक पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछाणिआ।।**

आप वह परमेश्वर पारख है जो खोटे खरे संकल्पों को देखता और साथ में टाइप भी करता है। वे भोगने भी पड़ते हैं, शरीर को। कर्मों का शरीर है।

*करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु।* (पृ० २)

कर्मों द्वारा हमें यह वस्त्र मिला है कृपा द्वारा तो मोक्ष को द्वार मिल जायेगा। जिस दिन भी परमेश्वर की दृष्टि हो जायेगी। फिर तो हमें कोई कठिनाई नहीं। इसमें पढ़े हुए की भी आवश्यकता नहीं। बई ! पढ़े लिखे की जरुरत है। किसी की जरुरत नहीं। आप बताओ वह घसियारा क्या पढ़ा हुआ था ?

जब जहागीर ने गुरु साहिब के साथ समझौता किया। जब गुरु साहिब ने कहा, वह देख चंदू के पास पड़ा है, वह चँदोवा, जहांगीर कहता - हमारा इसमें कोई सम्बन्ध नहीं था। यह चंदू ने किया, जो कुछ भी किया वह हो गया। वे जब गुरु साहिब मान गये, उसके बाद जहाँगीर कहता मैंने आपको काश्मीर की सैर करानी है अवश्य। गुरु साहिब को मना लिया, साथ` गया। वहां घासी सदैव भजन करता था और परमेश्वर का आस्तिक था और जितना घास खोदता था उसका भोजन करता था और शेष समय वह भजन करता था। जब उसने सुना बई - एक ऐसे गुरु भी आये हैं जो 'नदरी नदरि निहाल' कर देते हैं। उसने कहा, बस! अब चलें उसने पहले दिन का घास खोदकर, पैसे कमाकर पास रख लिये। बई यह मैं वहां भेंट करुंगा। अब उसका तो सर्वस्व दान वही था, उसके वास सर्वस्व और क्या था। उतने ही पैसे थे, रोटी नहीं खाई उसने उस दिन। उसने पैसे रख लिये। और उस ओर, कुछ प्रभु इच्छा हुई और मुसलमान एकत्रित हुए कि बई ये जो सिक्ख हैं ये अपने गुरु को तो सच्चा पातशाह कहते हैं और तुम्हें झूठा पातशाह

कहते हैं। शामियाने भी हमारे, सामान भी हमारा, सब कुछ हमारा, राशन भी हमारा फिर झूठा पातशाह कहते है। जहांगीर ने, इतिहास बताता है कहा- न आप यह बात न करना। उसको पहला कुछ अनुभव था। उन्होंने कहा न जी, हेठी है हमारी। संतरी को कहा भई जब भी कोई आकर पूछे सच्चा पातशाह का शामियाना कौन सा है, तुम जहांगीर का बताना। वह घासी आया। उसने कहा, सच्चे पातशाह का शामियाना कौन सा है ? उसने जहांगीर के तम्बू की ओर हाथ किया, वह चला गया। उसने जाकर पैसे उसके आगे रखे और चार बार परिक्रमा की, नमस्कार की और करबद्ध खड़ा हो गया। वह कहता अब दो इसको मोक्ष। वह कहता ओये ! तुम ठोकरें खाते हो, घास खोदते हो, तुझे एक कुआँ दे देते हैं, आनंद करेगा। वह कहता ना। गाँव दे देते हैं, नाजिम (प्रबंधकर्ता) तक पहुंचे बई इलाका दे देंगे पर उसने एक ही बात कही, घासी है, तीन लोकों की आवश्यकता नहीं, मोक्ष की जरुरत है। जहांगीर कहता वह है सच्चे पातशाह का शामियाना मोक्ष वाले का। इन्होंने तो तेरे साथ धोखा किया। वह चल पड़ा और पीछे ही जहांगीर भी चल पड़ा। सारे चल पड़े जब उसने वही काम वहां किया। छठे पातशाह के आगे पैसे रख दिये। वही पैसे वहां से उठाकर ले गया था और उसके पास पैसे तो नहीं थे। पैसे रखकर परिक्रमा की, नमस्कार की, खड़ा हो गया। क्या मांगता है सिक्ख। कहता-जी मोक्ष। कहते हमारी आंखों से आंखे मिला। वह जब आँख से आँख मिलाई वह कहता-जी निहाल ! निहाल ! वह जहांगीर कहता जी एक बात मैं पूछ सकता हूँ ? अरे यह जो हिन्दुओं की मोक्ष है, बड़ी सस्ती है। इतने पैसों में आ जाती है। वे कहते तुम क्या देते थे ? तू भी कुछ देता था ? वह कहता हम तो सब कुछ दे बैठे, यह कहता तीनों लोको की आवश्यकता नहीं, मोक्ष की आवश्यकता है, फिर तुमने दी नहीं। कहता मेरे पास तो है नहीं, यह तो इन प्रकन्धकर्ताओ की गलती थी। इसीलिये बई जब तक इसका अन्तःकरण शुद्ध हो जाये, नाम के साथ इसका मन एक हो जाये, तो यह परमेश्वर को पा लेता है। लेकिन नाम पर इसको विश्वास नहीं। यह संसार की मैं और आप पता नहीं कितनी बातें भरे बैठे हैं। वे ससुरी समाप्त ही नहीं होती। यह तुम न समझो, मैं भी भरे बैठा हूँ। मैं चकित होता हूँ कि बात क्या है ? यह क्यों संकल्प आया।

इतने संस्कार भरे हुए हैं अन्तःकरण में। यह जहां जाता है एक दो संस्कार भर लाता है। अब यहां से एक संस्कार ले लेगा बई वहां ऐसा एक चंदोवा था, ऐसे हुआ, इसने कुछ न कुछ लेना है। जब आप एकत्रित करते जाओगे, वह आत्मा तो आपका दब जायेगा। वह आत्मा के साथ तुमहारा मन तब मिलेगा जब आपका मन खाली होगा। अन्य जितनी कामनायें, वासनायें है, वे झूठी हैं।

*द्रिसटिमान है सगल मिथेना।।* (पृ० १०८३)

जो भी देखो लेकिन द्रष्टा तो नहीं मिथ्या। जो आपके भीतर पारख, देखने वाला, दाना बीना चेतन है, वह तो नहीं मिथ्या। अच्छा, द्रष का द्रष्टा कोई नहीं है। उपनिषद् में बड़ा निर्णाय किया है। जो देखने वाला है, उसको देखने वाला संसार में कोई हुआ नहीं, न होगा। वह तो एक है, वह तो चेतन है। वह तुम्हारा आपा है। तुम्हारा आपा वह है कि कोई और है ? मैं तुम्हें पूछता हूँ। हाँ वह –

*नामु संगी सो मनि न वसाइओ।।*

वह जो नाम था बड़ा सहायक वह तुम ने म में न बसाया।

*छोडि जाहि वाहू चितु लाइओ।।* (पृ० ७१५)

जो पदार्थ तुमने छोड़कर जाने हैं, लोग आपके सामने छोड़ कर गये हैं। उनके साथ आपका मन चिपका हुआ है। वह टूटता ही नहीं है। इसलिये तुम एक परमेश्वर के नाम के साथ, शब्द के साथ, शब्द नाम ही परमेश्वर का है। शब्द भी परमेश्वर है और शब्दी भी परमेश्वर है।

*सबदु गुरु सुरति धुनि चेला।।* (पृ० ९८३)

अपनी सुरति को शब्द के साथ जोड़ लो तुम्हें भगवान के दर्शन हो जायेंगे। चाहे मैं जोड़ लूं, चाहे तुम जोड़ लो और जब तक शब्द के साथ मन एक नहीं होगा तब तक परमेश्वर तो प्राप्त होना नहीं। अन्य तो बाह्य बातें है, भीतरी बात तो वास्तविक यही है वे इसलिये वह जो नाम है तुम्हारा, तुम सतिनाम कहते हो। सत् परमेश्वर है, सत् और तो कोई वस्तु नहीं। इसलिये –

*मूई सुरति बादु अहंकारु।।*
*ओह न मूआ जो देखणहारु।।*
*पड़ि पड़ि पंडितु बादु रखाणै।।*

*भीतरि होदी वसतु न जाणै।।* (पृ० १५२)

तूने आत्म वस्तु को नहीं जाना। पढ़ पढ़ कर तुम वाद-विवाद करता रहा है। लोगों को प्रदर्शन करता रहा है। तूने अपनी वस्तु न पहचानी आत्मवस्तु। तुम्हारे भीतर तो एक प्रकाश है और तो कोई है नहीं।

**सब महि जोति जोति है सोइ।।**

**तिसदै चानण सब महि चानण होइ।।**

**गुर साखी जोति परगटु होइ।।**

तुम्हारे भीतर प्रकाश एक ही है, उस आत्मा का। तुम्हारा मन प्रकाश नही है, वह तो जड़ है, बुद्धि आपकी प्रकाश नहीं, वह तो जड़ है। वह जो बुद्धि में बैठकर देखता है, वह प्रकाश है, अन्य तो कोई प्रकाश नहीं है। यदि इन्द्रियां प्रकाश हों तो आँखें ही हों, दूसरा न हो, श्रवण न हो। वह तो बदल बदल कर सब वह प्रकाश है। वेद कहता है ओम् जो तेरे भीतर ज्योति है उस ज्योति से तूझे ये समस्त प्रकाशित होते हैं। अन्य कोई ज्योति है ? ज्योति तो एक है।

*सभ महि जोति जोति है सोइ।।*

*तिसदै चानणि सभ महि चानणु होइ।।* *(पृ० १३)*

उसके प्रकाश के साथ समस्त प्रकाशित होंगे।

*गुरु साखी जोति परगटु होइ।।*

जब तुझे शब्द मिल जायेगा, शब्द के साथ तेरा मन एक हो जायेगा, तूझे अवश्य प्रकाश होगा, लेकिन जब तक तुम उसके साथ नहीं मिलते। यह तो तुम्हें पता है कि देखने जानने वाली वस्तु है तो अवश्य कोई। तुम विचार करते हो, विचार को देखते भी है कोई, साथ में जानता भी है।

*दाना बीना साई मैडा नानक सार न जाणा तेरी।।* (पृ० ५२०)

दाना और बीना साईं है लेकिन उसकी हमने सत्ता को नहीं पहचाना गुरु साहिब कहते - वह है, इसलिये वह है सत् और उस सत् स्वरुप का नाम रखा गुरु साहिब ने 'सत्नाम'।

*जपि मन सति नामु सदा सति नामु।।* (पृ० ६७०)

यह विधि वाक् है। एक होते हैं वाक्, वैसे ही कहने वाले। एक होते हैं वाक् विधि, वाक् विधि कौन होता है ? जैसे पहली पौड़ी आप ने पढ़ी।

**१ ओंकार सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैर।।**
**अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।। जपु।।**

यह विधि है बई, इसका तुमने जाप करना है। जो तुम्हें बताया है। तू अकाल पुरुष का उपासक है। अन्य किसी का उपासक नहीं। मेंने एक संत को देखा, मस्तुआने वाले अतरसिंह। किसी ने आप में से भी देखा होगा। वे शब्द कीर्तन करते थे, बड़े सुंदर शब्द पढ़ते थे, बड़े महापुरुष थे। उन्होंने शब्दी वालों की हवेली में एक शब्द पढ़ा औ साथ में एक सवैया पढ़ा, दसवें पातशाह का - जपो खालसा जी, सारे 'जगदी जोत' को।

मैं वहां बैठा था संगत में, छोटी आयु में, वह मुझे अब भी याद है और उन्होंने पहले यही कहा-वे तीन स्थानों पर पाठ कराते थे, पहले आप बोलते थे, फिर लोग बोलते थे और फिर स्त्रियां बोलती थी। पहले जमाने में सही था, बीच में परदा होता था, ऐसे लगाया हुआ। स्त्रियां एक ओर होती थीं और आदमी एक और होते थे। वह तो फिर अकालियों ने तोड़ दिये ये कई काम। अझैर संत इस प्रकार जाप कराते। उन्होंने यही जाप कराया।

**'जपो खालया जी सारे 'जागदी जोत' नूँ'**

सब से जाप कराया। वे कहते तुम-भाई साहिब खालसा जी ! जगदी जोत (जाग्रत ज्योति) के उपासक हों, किसी दूसरी ओर न चले जाना। अब आप बताओ, न तो तुम देवी के उपासक हो न तुम देवताओं के उपासक हो, न तो तुम गूगे के उपासक हो, न तुम भैरों के उपासक हो। तुम तो एक के ही उपासक हो कि किसी अन्य के ? वह एका (एक) गुरु साहिब ने लिखा है, क्यों लिखा ळै ? वेद में एक नहीं आता, रामायण में नहीं, गीता में नहीं एका, लेकिन गुरु ग्रन्थ साहिब जब तुम पढ़ने लगोगे पहले (१) आयेगा फिर ओंकार सतिनाम आरम्भ करोगे। वह एक (१) कौन है ?

***एकम एकंकार निराला।। अमरु अजोनी जाति न जाला।।***
***अगम अगोचरु रुपु न रेखिआ।। खोजत खोजत घटि घटि देखिआ।।***

(पृ० ८३८)

गुरु साहिब कहते हमने सब के हृदयों में उस एक को देखा। जब वही एका (१) दसवें पातशाह ने भाई कन्हैया को दिखा दिया, उसने मश्क पकड़कर, न तो हिन्दू देखे, न सिक्ख देखे, न ही मुसलमान देखे। क्यों ?

गरमी का महीना था, वह जल पिलाता गया। जब वह चलता था उधर मुसलमानों की ओर, वह कहते युद्ध बंद कर दी, पानी पिलाने वाला सिक्ख आया है। यदि गुरु साहिब जाते तो भी वे युद्ध बंद करते। क्यों बंद करते ? उन्होंने उसमें एक बैठाया। भाई कन्हैया के हृदय में एक (१) बैठा था तो ही वह सब को पानी पिलाता था। उनकी सम्पदा अब भी तुम देखते हो। ये गुरुद्वारे बनाये इस सम्प्रदाय ने बनाये। कुछ निर्मलों ने बनाये लेकिन इन्होंने बहुत बनाये। आप के सामने बनायेजाते हैं, ये विशेष बनाते हैं लेकिन वे गुरु के उपासक हैं। वहां मैं करनाल रहा, वहां बनाने लगे कालेज। मैंने कहा ओये संतों के पास जाओ वे आपका कालेज बनायेगें, वे गये। वे कहते हम गुरुद्वारों के अतिरिक्त कुछ नहीं बनाते। इस कालेज के तो हम समीप भी नहीं जाते। हम तो  गुरुद्वारे ही बनायेंगे।

वह बीरमदास जो मस्त था, हमें आप बताया गुरमुख सिंह आदि ने, मैं समीप रहा। वह रोड़ एकत्रित करवाता था साधुसिंह। साधुसिंह को हमने पूछा वह कहता हम थे उपासक बीरमरास मस्त के। वह गालियां देता होता था। एक दिन उसने हमारी परीक्षा ली। हम उसी समय वैसे ही गये। वह कहता वाह भाई। लेकिन मैं आप को एक बात कहता हूं सुसरो। क्यों मेरे पीछे पड़े हो ? आपका पिछला संयोग शामसिंह के साथ है। वह अमृतसर बैठा है। दिखाई नहीं देता तुम्हें अंधो ? पिछला संयोग तो आपका शामसिंह के साथ है। मेरे साथ तो है नहीं। तुम ने करनी है गुरुद्वारों की सेवा लेकिन पहले उसके पास पहुंचो। वहां से गुरमुख सिंह पहले चल पड़ा। मैं पीछे चल पड़ा। जब हम आए शाम सिंह की धर्मशाला। जब पहला पांव गुरमुख सिंह ने आगे रखा, शामसिंह ऐसे बैठा था, समाधि में। आ गये ? वह कहता - ओये झंडा सिंह इधर आ। वह आ गया। ले जा इनको हरिमंदिर, नमस्कार करके, जाओ तुम गुरुद्वारे बनाओ। वे कहते अच्छा। वह इसीलिये बीरमदास का दिन मनाते हैं। वह कहते हां - वहां से भी वही हुक्म मिला। अब तक यही सम्प्रदाय चली आ रही है। इसलिये -

***संजोगु विजोगु धुरहु ही हूआ।।*** (पृ० १००७)

यह किसी के किये से नहीं होता, यह पहले से तय होता है। वह बड़ा महापुरुष था, उसको पता था बई संयोग तुम्हारा पिछले जन्म का उसके साथ

है, मेरे जिये जब यह जीव सीधे मार्ग पर चल पड़ता है फिर परमेश्वर नेतृत्व तो स्वयं ही करने लग जाता है। इसकी नीयत ठीक हो, इसका दिल साफ हो, मुश्किल तो दिल का शुद्ध होना है। आप यह देखो जब तुम प्रातः काल उठकर भजन करने लगते हो तो तुम्हारा यदि नाम के साथ चित्त जुड़ गया फिर तो बहुत अच्छा लेकिन यदि संसार की कामनायें आकर खड़ी हो गई, ये करना था, कल ऐसे करना था, ओये यह करना था, वह नहीं हुआ, अरे यह नहीं हुआ, वह मन तुम्हारा जुड़ा ही न, फिर क्या करोगे ? फिर तो तुम्हें परमेश्वर की मिन्नत करनी पड़ेगी अथवा कोई संसार में बई ऐसा महापुरुष हो बख्शा हुआ, वह भी थोड़ा बहुत रहस्य की ओर संकेत कर सकता है, लेकिन कृपा तो परमेश्वर की होनी हे चाहे किसी के द्वारा हो। कृपालु वही है, दयालु वही है, इसलिये गुरु साहिब जी अब ये कहते हैं, चौथी पातशाही। पढ़ भाई –

**इछा पूरकु सरब सुखदाता हरि**

कहते अरे समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने वाला, समस्त सुखदाता वह परमेश्वर है।

***सभना जीआ का इकु दाता सो मैं विसकि न जाई।।*** (पृ० २)

सब जीवों का दाता एक परमेश्वर है लेकिन उसको भूलना नहीं। अब तुम सच बताना, तुम भूल जाते हो कि नहीं ? भूले ही पड़े हैं। सच्ची बात तो यही है। इसलिये भाई उसको भूलना नहीं।

**सभना जीआ का इकु दाता सो मैं विसरि न जाई।।**

गुरु साहिब कहते मुझे भूले न परमेश्वर, यह परमेश्वर को कहते हैं। हे परमेश्वर ! मुझे परमेश्वर न भूले। वह जो सब का दाता परमेश्वर है मुझे वह न भूले। फिर प्रार्थना करो प्रभु के आगे सच्चे दिल से, गुरु नानक आगे प्रार्थना करो, बई। मुझे परमेश्वर न भूले और तो कोई चारा नहीं है। वह अब वस्तुयें देने वाला है। सुख देने वाला वह, समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने वाला वह। उस परमेश्वर को भाई भूलना नहीं। फिर पढ़ दे –

**इछा पूरकु सरब सुखदाता हरि**

कहते इच्छाओं को पूर्ण करने वाला सर्वसुखदाता, भाई हरि परमेश्वर है। उसके साथ तुम अपने मन को जोड़ो। नाम नामी का अभेद है। उसके नाम

के साथ जोड़ो। यह तुम्हें प्रत्यक्ष है, कोई भूल नहीं, तुम्हें पता है कि मेरा मन कहां जुड़ा हुआ है। यह तुम सबको पता है। तुम बता भी देते हो, आज तो मेरा मन यही लगा रहा और जब तुम्हारा परमेश्वर के साथ मन जुड़ जायेगा, तुम्हें आप ही पता लग जायेगा। नाम के साथ मन जोड़ो।

*नाम संगि जिसका मनु मानिआ।।*
*नानक तिनहि निरंजनु जानिआ।।* (पृ० २८१)

नाम के साथ जिसका मन मान गया वह निरंजन को जान लेगा। सीधी स्पष्ट बातें हैं ये। बहुत बातों का कोई लाभ नहीं।

**जाकै वसि है कामधेना।।**

कामधेनु गाय जिसके वश में है, कामधेनु से लेकर जितने भी संसार के पदार्थ हैं, जिस परमेश्वर के हुक्म में हैं, उस परमेश्वर का भजन करो, उस परमेश्वर की उपासना करो, तुम 'जागदी जोत' को जपा करो।

**सो ऐसा हरि धिआईऐ मेरे जीअड़े**

हे मेरे जीव ! हे मेरे मन ! ऐसे परमेश्वर का सिमरन कर। हे जीव ! 'जीअ' नाम है मन का, हे मन! ऐसे परमेश्वर का सिमरन कर जो तेरे कार्य पूर्ण कर दे और मोक्ष भी प्रदान कर दे।

**ता सरब सुख पावहि मेरे मना।**

हे मेरे मन ! तुम सब सुखों को पा लोगे, कोई तेरा शेष नहीं रहेगा। हे मन ! तुम इस ओर लगो। तुम नाम के साथ जुड़ो, नामी तुझे प्राप्त हो जायेगा, तेरे समस्त कार्य सिद्ध हो जायेंगे।

**जपि मन सति नामु सदा सति नामु।।**

अब यह कोई इसमें छिपाव है ? यह कोई मेरा तो नहीं अर्थ ? यह गुरु साहिब अर्थ स्वयं ही कर गये, यदि वे न कर गये होते, आते हमें भी ना। हमें भी न आते। यह तो एक लाठी पकड़ कर चलने वाली बात है।

**जपि मन सति नाम सदा सति नामु।।**

जो सदैव रहने वाला सत् है, उस सत् का नाम 'सतिनाम' स्मरण कर।

***सति रुप सति नाम करि सतिगुर नानक देउ जपाइआ।।***

(भाई गुरदास २४/१)

वह जिसका नाम सत्नाम रखकर मंत्र बनाया उस सत् स्वरुप का नाम

है 'सतिनाम'। नाम नामी हैं। भाई, सतिनाम कहो। हे मन ! और काम छोड़ दे, पहले सतिनाम को जपा कर।

**सिमरि सिमरि नामु बारंबार।।**
**नानक जीअ का इहै अधार।।**

बारंबार उस परमेश्वर का सिमन कर, यदि तू जीव ! अपना उद्धार चाहते हो। हे मन ! यदि तुम अपना उद्धार चाहते हो तो नाम जपा कर।

***खोजत खोजत ततु बीचारिओ दास गोविंद पराइण।।***
***अबिनासी खेम चाहहि जे नानक सदा सिमरि नाराइण।।***

(पृ० ७१४)

उस नारायण का नाम सदा सिमरन किया करो। तुम आप देखो, उस नाम को तुम बंद न होने देना, जितने विचार आयेंगे काटे जायेंगे। तुम ये कर लो - तड़के, बई नाम नहीं बंद होने देना। वह विचार जब आये, विचारों ने आना तो है लेकिन विचारों की परवाह ही न करना, तुम नाम ही जपते रहना, आप गिर जायेंगे ससुरे। क्या करें विचार ? यदि तुमने विचार से मन जोड़ दिया तो नाम तो गया। यह तो सिद्ध बात है यदि तुम्हारा विचार के साथ मन जुड़ गया तो नाम तो गया कि रह जायेगा नाम ? वह विचार पता नहीं कौन सा आयेगा तुम्हारे भीतर, कोठी का आना कि पैसे का आना, कि पुत्र का आना कि पुत्री का आना, उसके साथ जुड़ जायेगा मन, फिर वही तुम्हें दिखाई देगें। यदि तुम्हारा विचार न टूा तो वे जुड़ जायेंगे। लेकिन तुम भला बताओ। एक संत मेहर सिंह हुए - मैं उनके साथ रहा काफी दिन, वह कहता मैं पहली पौड़ी का पाठ बारह वर्ष करता रहा, फिर बंद किया। अब कहते - सहज चलता रहता है। जब कहता कोई बात करता है, मुझे विष समान लगती है। वह क्या करे, पाठ ही नही बंद होता। उसने बारह वर्ष प्रयत्न किया कि पहले दिन ही चल गया ? इसलिये नाम के अभ्यास का समय तुम अवश्य रखो। प्रातः समय जब उठोगे जब तुम्हें जाब आये तभी ही आरम्भ कर दो, स्नान करते रहो, बंद न करना, तो कुछ तो लाभ होगा। रस्सी पड़ते पड़ते कुएँ की 'मौण' भी घिस जाती है। रस्सी के साथ, घिस जाती है कि नहीं ? यह तुम पर भी ऐसे ही निशान पड़ेगा। इसलिये भाई वह जो परमेश्वर है कभी उसका सिमरन न तुमने छोड़ना।

**सिमरि सिमरि नामु बारंबार।।**
**बारम्बार उसका सिमरन करो।**
**नानक जीअ का इहै अधार।।**

गुरु साहिब कहते भाई ! जीव का उद्धार ही इस बाम में है। भाई नाम में, जब नाम तुम्हारे ठीक आ जायेगा नामी प्राप्त हो जायेगा और तुम्हारा जन्म मरण काटा जायेगा। नामी तो आपके भीतर ही बैठा है जो तुम्हारे मन को देखता है। वह मन में नहीं बैठा ? जो तुम्हारी बुद्धि को देखता है वह बुद्धि में नही बैठा ? देखने जानने वाला तो चेतन ही है, जड़ तो है नहीं, तुम्हारा आपा है कि अन्य है कोई ? बताओ मैं तुम्हें पूछता हूं, वह है कि और है कोई ?

**हलति पलति मुख ऊजल होई है**

लोक परलोक में तुम्हारा मुख उज्ज्वल हो जायेगा, साफ हो जायेगा, नाम न छोड़ना। कहते-लोक परलोक तुमहारे दोनों शुद्ध हो जायेंगे, नाम जपने से।

**नित धिआइऐ हरि पुरखु निरंजना।। रहाउ।।**

वह जो निराकार हरि पुरुष है, ध्यान उसका करना। वह तुम्हारे हृदय में नहीं बैठा ?

***घट घट मैं हरि जू बसै। संतन कहिओ पुकारि।।***
***कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि।।***

(पृ० १४२७)

वह जो तुम्हारे हृदय में बैठा है, मेरे हृदय में भी वही बैठा है। वही चार प्रकार के प्राणियों के हृदयों में नही बैठा ? वह कहता है ना, काजी को -

***जउ सभ मह एकु खुदाइ कहत हउ तउ किउ मुरगी मारै।।***

(पृ० १३५०)

वह काज़ी कबीर को कहता सब में परमेश्वर है। कबीर कहता -

**जउ सभ मह एकु खुदाइ कहत हउ तउ किउ मुरगी मारै।।**

कहता मुर्गी में खुदा नहीं है ? क्यों मारा तूने ? और काजी को कोई उत्तर तो नहीं आया, शरीयत में चला गया। वह, जब यह अपना बचाव देखता है तो दौड़ता है शरीयत की ओर, कहता हमारी तो यही शरीयत है और कबीर ने सिद्धान्त कहा है -

**जउ सभ मह एकु खुदाइ कहत हउ तउ किउ मुरगी मारै।।**

कहता यति सब में खुदा कहता है तो मुर्गी क्यों मारता है ? क्या इसमें खुदा नहीं है ? और फिर काज़ी को कोई उत्तर नहीं आया। सिद्धान्त तो सबका एक है। चार प्रकार के प्राणियों के हृदयों में परमेश्वर एक है। हमारे सबके हृदयों में प्रभु निवास करता है।

*घ घट मैं हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।।*
*कहु नानक तिह भजु मना मउ निधि उतरहि पारि।।*

(पृ० १४२७)

गुरु साहिब कहते सब के हृदयों में परमात्मा एक है, कृष्णा ने भी यही कहा है –

*ईश्वरः सर्वभूतानां हृदेशे अर्जुन तिष्ठति।।* (गीता १८/६१)

वह कहता, अर्जुन सबके हृदयों में एक परमात्मा है, दो नहीं है। जो सबमें एक है, वह हमारा आपा है। जो सबमें एक है। जब हमारा मन उसके साथ एक हो जाये तो हमें आपा प्राप्त हो जायेगा। जब तक तुम्हें अपना आप नहीं मिला तो दूसरे में से कैसे मिलेगा। जब हमारा मन नाम के साथ एक हो जायेगा, नामी के साथ एक हो जायेगा, तुम्हें नामी दिखाई देने लग जायेगा।

**एहु विसु संसारु तुम देखदे एहु हरि का रुपु है।।**

तीसरे पातशाह कहते यह जो तुम कहते हो संसार बड़ा विष समान है, कहते ना, यह हरि का रुप है।

**हरि रुपु नदरी आइआ।।**

हमें यह सारा हरि का रुप नजर आया। ये तीसरे पातशाह कहते हैं। यह कब दिखाई देगा, जब तुम्हें अपना आप प्राप्त हो जायेगा। हमारा मन तो फिरता है वासनाओं में। वासना एक इस प्रकार की सड़क है, मन को एक सड़क पर लाओ पकड़कर, फिर दूसरी सड़क पर ले जाता है। दूसरी सड़क पर लाओ फिर तीसरी सड़क पर ले जायेगा। मन तो हमारा वासना के साथ एक है और तो नहीं किसी के साथ, सड़कें वासना हैं। ये वासनायें ही आकर्षित करती हैं। हम कहां बैठे हैं, यह कहीं और घूमता है। बताओ काम कैसे बनेगा ? जब मन हमारा नाम के साथ एक हो जायेगा और फिर जो गुरु साहिब का वचन है ना –

***सबदु गुरु सुरति धुनि चेला।।*** (पृ० ६४३)

भाई शब्द गुरु है, तुम्हारी सुरत इस का चेला है, यह जब तुम्हारी शब्द के साथ मिल जायेगी न सुरत, तब तुम गुरु वाले हो जाओगे। कि पहले भी हो जाओगे ? हमारी सुरत जब मिलेगी तो ही हम गुरु वाले होंगे। गुरु शब्द है, शब्द के साथ सुरत एक करनी है। चल भाई -

**जह हरि सिमरनु भइआ तह उपाधि गतु कीनी**

कितनी ऊँची बात है, कितनी सुखद है, फिर पढ़ दे -

**जह हरि सिमरनु भइआ तह उपाधि गतु कीनी**

जहां हरि का 'सिमरन भइआ' प्राप्त हो गया जिसको हरि का सिमरन प्राप्त हो गया, फिर क्या हुआ ?

***तह उपाधि गतु कीनी***
***द्रिसटिमान है सगल मिथेना।।*** (पृ० १०८३)

जो देखने में आता है, मिथ्या है। समस्त उपाधि चली जाती है कि नहीं ? द्रष्टा तो नहीं कहीं गया। द्रष्टा तो सत्य है। दृश्य झूठ है। द्रष्टा दृश्य को एक नहीं करना, अलग करना है। हम तुम उस दृश्य के साथ एक हो जाते हैं, इसी को अविद्या कहते है। हम तो हैं चेतन, शुद्ध और वृत्ति यह तीन गुणों की है -

***रज गुण तम गुण सत गुण कहीऐ इह तेरी सब मइआ।।***

(पृ० ११२३)

यह तीन गुण तो माया के हैं।

***चउथे पद कउ जो नरु चीनै मिन ही परम पदु पाइआ।।***

(पृ० ११२३)

वह चौथा पद है, वह अलग नहीं है। यह भिन्न है।

**जह हरि सिमरनु भइआ**

जिसको हरि का सिमरन प्राप्त हो गया, जिस भी पूर्ण पुरष को।

**तह उपाधि गत कीनी**

वह वस्तु जो तुम जानते हो।

**द्रिसटिमान है सगल मिथेना।।**

झूठ है, तुम्हारा हृदय कहेगा। वहां तुम कहोगे वह ूठी वस्तु है। यह रस्सी

में सप्र की भाँति पड़ती है। तुम वहां जाकर उसको देखो, छोड़कर आ जाओगे, ओयं ! रस्सी है। शुक्ति चमकती हो उसमें चांदी दिखई दे, वह दौड़कर जायेगा बालक, जब उसको उठायेगा, वह फेंक देगा, कहता – ना चांदी नहीं है। यह तो शुक्ति है। यह तो झूठी है। झूठी वस्तु तब तुम्हारे भीतर से जायेगी। जब तुम सत्य को जान लोगे।

**जह हरि सिमरन भइआ**

जिसको हरि का सिमरन प्राप्त हो गया। चल भाई –

**तह उपाधि गतु कीनी**

तो सारी उपाधि चली जायेगी। लेकिन इसका दुःख नहीं रहेगा तुम्हें। यह पक्की बात है। तुहारा लाभ झूठ छोड़ने में ही होगा। वे झूठ के साथ ही चिपके रहे। संसार में कोई रहने वाली वस्तु है ? सब बदलने वाली है लेकिन तुम्हारा आत्मा कभी बदला है ? कितने आठों पहर में विचार करते हो, वह वही रहेगा। देखने वाला भी वही रहेगा और जानने वाला भी वही रहेगा और दिखाई देने वाला सब झूठ है और हम दिखाई देने वाले को चिपक गये हैं। चिपके नहीं पड़े ? तो फिर कैसे काम चलेगा। हां जी –

**जह हकर सिमरन भइआ तह उपाधि गत कीनी**

उपाधि भाई ! तो नाश होगी यदि हरि का सिमरन आपका चल जाये। हरि का सिमरन पहले प्राप्त करना है। चलिये –

**वडभागी हरि जपना।।**

जिसका सौभाग्य होगा, गुरु रामदास महाराज कहते, वह हरि का जप करेगा। जिसके बड़े भाग हों उसकी वृत्ति नाम के साथ जुड़ती है। जिसके बड़े पूर्व कियें हों वे पूर्व से आते हैं, सरमद जैसों के। वह खड़ा है नग्न, सरमद को पता नहीं था अपने आप का। यहां तक फकीर पहुंचा हुआ था। औरंगजेब हाथी पर जाता था, अपना दुशाला फैंक दिया बई, ओये ! उठा ले। उसने सिर पर बांध लिया। औरंगजेब जब मुड़कर आया तो सरमद वहीं फिर खड़ा पहले की भांति। वह कहता ओये ! तुझे दुशाला दिया था तू फिर नंगा ही खड़ा है सिर पर बांधे। वह कहता तू बेवकूफ है, कर्म के साथ तु राजा हो गया, तेरा कर्म था लेकिन है तू बेवकूफ। वह राजा कहता मैं बेवकूफ हूँ। कहता और क्या है ? कहता क्यों ? कहता जो बादशाह तुम्हें वस्तु दे,

गुरु दे, खुदा दे, वह शीश पर रखते हैं ? कि यहां रखते हैं ? वह कहता चल और वह सारथि को कहता चल हाथी चल। वह तो किसी और ही तरफ चला गया। कहता तू बेवकूफ तो है ही लेकिन उसको चाहे कुछ भी किया वह फकीर डोला तो नहीं, जेल में गया, कहीं गया। जब वहां एक व्यक्ति आया अरब से, बई ! सब्र और शुक्र का अर्थ बताओ ? औरंगजेब के पास आया, कहता तुम्हारे में से कोई ऐसा है जो मुझे सब्र और शुक्र का अर्थ बताये। एक व्यक्ति ने बताया कहता – सरमद है और कोई नहीं। वह कहता जाओ, जेल में चले जाओ। वे गये, उसने कहा प्रातः लाओ मश्क, एक लाओ तहमत (धोती)। सरमद ने पहले स्नान किया फिर धोती बांधी। वह कहता देख सब्र और शुक्र का अर्थ। वह आदमी कहता रुक जाओ। उसको फकीर को नमक का दिया एक थाल खाने को उसने कहा शुक्र है खुदा का। बाम में पानी दिया, पीकर कहता खुदा का शुक्र है, कहता यह सब्र और शुक्र है। सामने खड़े दिखाये उसको वे लोग जो कहते कर दें समाप्त यदि आप कहें। इसलिये जो भगवान् के बख्शे हुए व्यक्ति हैं –

***जा कउ अपुनी करै बखसीस।।***
***ता का लेखा न गनै जगदीस।।*** (पृ० २७७)

जिनको भगवान् बख्श दे उनका लेखा फिर कोई नहीं रहता है। वह मुक्त हो जाता हैं। वह तो भाई ऐसे व्यक्ति हैं बड़े भाग्य वाले। वे जप कर गये हरि का और छोटे भाग्य वालों से नहीं होता। पर जब आप जपेंगे, बड़े भाग्यवान आप हो जाओगे। यदि जपूँगा मैं, बड़े भाग्य वाला बन जाऊँगा। चल –

**जन नानक कउ गुरि इह मति दीनी**

गुरु रामदास कहते मुझे परमेश्वर ने मेरे सत्गुरुों ने यह मति दी है, यह बुद्धि दी है। भाई। क्या ?

**जपि हरि भवजलु तरना।।**

भाई परमेश्वर का जाप न छोड़ना, संसार से पार हो जाओगे। यह बुद्धि मुझे दी है।

**बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरू ।**

❑

**१ ओंकार सतिगुरु प्रसादि।।**

## 15

**सोरठि महला : घरु ३ दुपदे १ ओंकार सतिगुरु प्रसादि।।**
**रामदास सरोवरि नाते।। सभि उतरे पाप कमाते।।**
**निरमल होए करि इसनाना।। गुरि पूरै कीने दाना।।१।।**
**सभि कुसल खेम प्रभि धारे।। सहि सलामति सभि थोक उबारे।।**
**गुर का सबदु वीचारे।। रहाउ।।**
**साध संगि मलु लाथी।। पारब्रहमु भइओ साथी।।**
**नानक नामु धिआइआ।। आदि पुरख प्रभु पाइआ।।२।।**

(पृ० ६२५)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु, सतिनाम श्री वाहिगुरु।

यह श्री गुरु रामदास जी, कृपा का वर्णन करते हैं। पहले इस स्थान पर जब लव-कुश के साथ युद्ध हुआ है भरत जैसों का, वे हार गये और राम चन्द्र जी आये। वे अमृत का कलश लाये, वह सारी सेना पर छिड़का और उस स्थान पर दबा दिया। पहली पातशाही, दूसरी पातशाही को यह बात कह गये कि यहां अमृत का कलश गड़ है, यह स्थान पवित्र है, यह तीर्थ बनेगा और दूसरी पातशाही को न अवसर मिला और उन्होंने तीसरी को कहा। उन्होंने आज्ञा दी बाबा बुड्ढ़ा जैसों को, श्री गुरु रामदास महाराज को भई जाकर वहां तीथ्र आरम्भ करना। उन्होंने गुड़ बांटा जैसे पहले खोदते हैं तालाब खोदा जो कुछ करना था, किया। उसकी जो महत्ता है उसके सम्बन्ध में गुरु साहिब जी वर्णन करते हैं। चल भई अब पढ़ -

**सोरठि महला ५ ।।**

पंचम पातशाह जी महाराज सोरठ राग में कथन करते हैं -

**घर ३**

तृतीय तार में गायन

**दुपदे**

दो पदों का यह शब्द है।

**१ ओंकार सतिगुर प्रसादि।।**

एक जो परमेश्वर है, वह पूर्ण्ज्ञ गुरु की कृपा द्वारा प्राप्त होता है।

**रामदास सरोवरि नाते।।**

श्री गुरु रामदास महाराज ने जहां टक (आरम्भ) लगाया और अरदास की, उस सरोवर में स्नान करने से समस्त पाप नष्ट हो जायेंगे। क्यों हो जायेंगे ? गुरु रामदास जी ईश्वर थे।,

***हरि जीउ नामु परिउ रामदासु।।*** (पृ० ६१२)

***हरि का नाम रामदास पड़ गया।***

***जोति रुपि हरि आपि गुरु नानक कहायउ।।***

***ता ते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ।।*** (पृ० १४०८)

वह परमेश्वर आप ज्योति स्वरुप गुरु अवतार धार कर संसार में आया। वह जब वहां एकत्रित हुए तो गुरु रामदास जी आप ईश्वर रुप थे। उन्होंने जो परदान दिया वह सही वरदान है। उन्होंने यह वरदान दिया भाई ! इस सरोवर में जो स्नान करेंगे, उनके पाप नष्ट हो जायेंगे। इसलिये गुरु रामदास के सरोवर में जो शुद्ध होकर पूर्ण श्रद्धा से स्नान करेगा उसके पापनाश हो जायेंगे।

**सभि उतरे पाप कमाते।।**

जो जीव के पाप हैं, वे सारे नष्ट हो जायेंगे। इस स्थान की यह महत्त्व है। इस स्थान की यह विशेषता है जो भी शुद्ध होकर स्नान करेगा उसके पाप नष्ट हो जायेंगे।

**निरमल होए करि इसनाना।।**

भाई ! भीतर से रात द्वेष त्याग कर, बाहर से शुद्ध होकर स्नान करके, फिर स्नान करना।

**गुरि पूरै कीने दाना।।**

यह हमारे पूर्ण गुरु ने दान किया। गुरु अर्जुन देव जी कहते हमारे पूर्ण गुरु ने, गुरु रामदास जी महाराज। यह उन्होंने दान किया है, भाई जो यहां शुद्ध होकर स्नान करेगा, उसके पाप नाश हो जायेंगे।

**सभि कुसल खेम प्रभि धारे।।**

परमेश्वर ने बड़ी कृपा की सारी कुशल सुख, आंनद क्षेम सब धारण कीये। जो भी यहां स्नान करेगा पूर्ण श्रद्धा से उसको सब वस्तुयें प्राप्त होगी।

**सही सलामति सभि थोक उबारे।।**

सही सलामत उसकी समस्त वस्तुयें 'उबारे' बच जायेंगी, स्थित हो जायेंगी। जो भी उस परमेश्वर के आगे प्रार्थना करेगा, अरदास करेगा वह गुरु रामदास महाराज पूर्ण करेंगे।

**गुर का सबद बीचारे।। रहाउ।।**

लेकिन जो गुरु ले शब्द दिया, उसका विचार करे। गुरु का शब्द होता है परमेश्वर का नाम, उसका नाम विचार करके धारण करे। उस नाम के साथ जिस का मन जुड़ जायेगा, उसके सब पाप नष्ट हो जायेंगे।

*नाम संगि जिस का मनु मानिआ।।*
*नानक तिनहि निरंजनु जानिआ।।* (पृ० २८१)

उस नाम के साथ जिसका मन एक हो गया, उसके पाप नष्ट हो जायेंगे। जब मन नाम के साथ एक हो जाये तो समाधि हो जाती है। समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। आत्मा का ज्ञान हो जाता है।

*गिआनै कारन करम अभिआसु।।*
*गिआनु भइआ तह करमह नासु।।* (पृ० ११६७)

समस्त कर्म नाश हो जाते हैं जब ज्ञान प्राप्त हो जाये। ज्ञान कब प्राप्त होता है ? जब नाम के साथ इसका मन एक हो जाये। नाम नामी का अभेद है।

*नाम के धारे खंड ब्रहमंड।।* (पृ० २८४)

जब नाम के साथ इसका मन एक हो जाये, उसको समाधि कहते हैं और स्थान पर एक क्षण में पाप नाश हो जाते हैं। वह पंचम पातशाह का जो वचन है उन्होंने साफ लिखा है -

*नाम संगि जिस का मन मानिआ।।*
*नानक तिनहि निरंजनु जानिआ।।* (पृ० २८१)

यह पांचवे गुरु साहिब का वचन है। नाम के साथ मन मिलने से नामी प्राप्त हो जाता है। नामी में कोई पाप नहीं है। नामी है इसका आत्मा, आपा।

उसमें कोई पाप-पुण्य नहीं होता। उसके पहले अन्तःकरण में पाप पुण्य रहते हैं। जब इसका मन मिल जाये नाम द्वारा नाम के साथ। नाम द्वारा ही नामी प्राप्त होता है। यह नियम है। तब इसके समस्त पाप नाश हो जायेंगे, जन्म मरण से छुटकरा हो जाता है।

**साधसंगि मलु लाथी।।**

जब संत का संग किया पूर्ण का, हमारी सारी मल कट गई। संत कोन है यहां ? गुरु रामदास महाराज, जब हमने उनका संग किया, गुरु अर्जुन देव जी महाराज कहते - हमारी समस्त मल कट गई, अन्तःकरण की और परमेश्वर की प्राप्ति हो गई और हमारा जन्म मरण काटा गया।

**पारब्रहमु भइउ साथी।।**

अब हमारा साथी परब्रह्म हो गया। दशम् पातशाह ले डल्ले को हाँक लगाई, डॅलिया ! डॅलिया ! वहां वह झंडा साहिब गुरुद्वारा है और डला आधी रात परिक्रमा करके दौड़ गया। उसने कहा मेरी 'साबो' उजड़ जायेगी। दशम् पातशाह तो मुझे अब नंदेड़ को लिये जाते हैं। मेरी 'साबो' का क्या हाल होगा ? वह तीस गांव थे उसके, रियासत थी छोटी, उसका डल्ला मालिक था। इसलिये उसने सोचा मेरा देश बिगड़ जायेगा। छोड़कर दौड़ गया। जब गुरु साहिब ने पहर के तड़के आवाज लगाई डॅलिया ! डॅलिया ! डॅलिया ! वह मुसलमान फकीर जागता था, वह नशेड़ी था, सोता कम होता था। उसने कहा ''न डॅला, न मॅला, गुरु रह गया कॅला (एकेला)--। गुरु साहिब कहते ओये फकीरा ! कभी गुरु भी एकेला हुआ है ? गुरु के साथ अल्लाह ही होता है। हाँ भूल गया महाराज ! इस करके जब इस का परब्रह्म साथ हो जाये, वह गुरुद्वारा बख्शा जाता है। वह परमेश्वर जो है, इसको बख्श देता है। अब परब्रह्म साथी हो गया, पहले इसको यह नहीं था पता कि जो मेरी वृत्ति है, विचार है, संकल्प है, इसको देखने वाला वही बैठा है। वह जो चेतन है, परमेश्वर है। वह परब्रह्म परमेश्वर हैं वह है नित्य, ज्ञाता वही है।

***दाना बीना साईं मैडा, नानक सार न जाणा तेरी।*** (पृ० ५२०)

वह देखता भी है और जानता भी है, वह परमेश्वर है। यदि वह वृत्ति जो जड़ है, इसको तो पता न लगे। वह चेतन है, वह अल्लाह है, वह

परमेश्वर है, वह परब्रह्म है, गुरु अर्जुन देव जी कहते श्री गुरु रामदास जी की कृपा से हमारा सहायक परब्रह्म हो गया। अब हमें कोई किसी प्रकार की भी चिंता नहीं होगी। अब हमारा परब्रह्म परमेश्वर रक्षक है।

***राखा एक हमारा सुआमी।।***
***सगल घटा का अंतरजामी।।*** (पृ० ११३६)

वह अन्तर्यामी जो भी काम करना चाहेगा, कर देगा। तुम सामने नहीं देखते भाई परमेश्वर ने जो भी कुछ करना है, वह कर देना है। पर कब ? जब यह परमेश्वर की शरण ले ले, जब यह परमेश्वर को हाजिर नाजिर समझे। उस गुरु रामदास महाराज संत की कृपा से हमारा सहायक परब्रह्म हो गया। गुरु एकेला नहीं होता। गुरु के साथ परमेश्वर होता है।

**नानक नामु धिआइआ।।**

कहते जैसे हमें गुरु ने उपदेश दिया था, श्री गुरु रामदास जी ने, हमने उस नाम का सिमरन किया। उस नाम सिमरन का फल क्या हुआ ? आगे पढ़ भाई -

**आदि पुरख प्रभु पाइआ।।**

यह जो आदि सृष्टि की उत्पत्ति, पालना, लय करता है,-वह हमने पा लिया। गुरु अर्जुन देव जी कहते - गुरु रामदास जी की कृपा से हमें वह प्राप्त हो गया।

**बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरू ।**

❑

**१ ओंकार सतिगुरु प्रसादि।।**

# 16

**रामकली महला।।**

**साधो कउनु जुगति अब कीजै।।**
**जा ते दुरमति सगल बिनासै राम भगति मनु भीजै।। रहाउ।।**
**मन माइआ महि उरझि रहिओ है बूझै नह कछु गिआना।।**
**कउनु नामु जु जा कै सिमरै पावै पदु निरबाना।।१।।**
**भए दइआल क्रिपाल संत जन तब इह बात बताई।।**
**सरब धरम मानो तिह कीए जिह प्रभ कीरति गाई।।२।।**
**राम नाम नर निसि बासुर महि निमख एक उर धारै।।**
**जग को त्रासु मिटै नानक तिह अपुनो जनमु सवारै।।**

(पृ० ८०२)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु, सतिनाम श्री वाहिगुरु।

आप सब ने श्रवण किया नोवैं पातशाह का हुक्मनामा, जो अकाल पुरख की ओर से उनको आया है, उस को वाणी कहते हैं। ईश्वरीय वाणी, रब्बी वाणी। ये जो संसार के महापुरुष हुये हैं श्री गुरुनानक देव, दादू, कबीर, ईसा ये सब परमेश्वर के भेजे हुये महापुरुष संसार में आये हैं। इस ज्योति के साथ जिनका थोड़ा सा भी स्पर्श हो गया वे भी संसार में महापुरुष हो गयो। यह कार्य कृपा का है। आठवें पातशाह जब शरीर छोड़ने लगे, सारी संगत ने प्रार्थना की गुरु कौन है ? उन्होंने कहा 'बाबा बकाले'। गुरु तेग बहादुर उनके रिश्ते में बाबा लगते थे। बकाले रहते थे। एक गुफ़ा में महापुरुष, जिन्होंने छत्तीय वर्ष तपस्या की, ऐसे महापुरुष थे। और वह गुरु है। संगत ढूंढती ढूंढती गइ, मिले नहीं। लॅभाना मक्खन शाह का जहाज सागर में अड़ गया, न निकला। उसने गुरुनानक देव की गद्दी की मनौत मानी। जो गुरु होगा मैं उसको पाँच सौ मोहरें भेंट करूँगा, लेकिन शंका यह पड़ गई कि गुरु अब

संसार में रहा नहीं कोई, और वह आया और यह जानकारी संसार को लग गई अैर वहाँ भई गुरु गद्दियाँ लगाकर बैठ गये जिसमें धीर मल के पास गुरु ग्रन्थ साहिब था। वह आया, उसने कहा ओये ! बाइस तो गुरु नहीं होते इक्टठे। जगत् गुरु तो भेजा हुआ परमेश्वर की ओर से अवतरित होता है।

*जोति रुपि हरि आपि गुरु नानक कहायउ।।*
*ता ते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ।।* (पृ० १४०८)

वह तो एक का उपदेश करने के लिये आता होता है।

*एकम एकंकारु निराला।। अमरु अजोनी जाति न जाला।।*
*अगम अगोचरु रुपु न रेखिआ।। खोजत खोजत घटि घटि देखिआ।।*

(पृ० ८३८)

वह तो सब की वृत्तियों में आरुढ़ है, चार प्रकार के प्राणियों में। निश्चलदास ने भी लिखा है -

*एक समें भान होइ साखशी ते अभास।।*
*दूजे चेतन के विशे साखशी सेयं प्रकाश।।*

(निश्चलदास 'विचार सागर' ४/११६)

पंडित राम सिंह जी ऋषिकेश झाड़ी में रहते होते थे, वे कहा करते थे - अपना आप सोऽहम् प्रकाश है, स्वतः प्रकाश। लेकिन इसको वृत्ति आरुढ़ चेतन, स्वतः प्रकाश की चेतनता बिना कृपा के नहीं आती है।

*जा कउ अपुनी करै बख्सीस।।*
*ता का लेखा न गनै जगदीस।।* (पृ० २७७)

यह कृपा के बिना काम नहीं बनने वाला। यह उस गुरु का शब्द है जिसने संसार में आकर धम की रक्षा की।

*तिले जंजू राखा प्रभ ता का।।*
*कीनो बडो कलू महि साका।।*
*साधनि हेति इती जिनि करी।।*
*सीस दीया पर सी न उचरी।।* (विचित्र नाटक)

वह था धर्म की रक्षा वाला गुरु। उस गुरु का शब्द आया है, गुरु तेग बहादुर का, और मक्खन शाह ने कहा इतने गुरु तो इक्ट्ठे नहीं हो सकते। इतना तो संसार का सौभाग्य ही नहीं है, भई इतने गुरु हो जायें। यह तो कृपा

के साथ होता है। कृपा के साथ आते हैं, कृपा करके जाते हैं। यह तो कृपा की सारी बात है। उसने दो दो मोहरें रखनी आरम्भ कर दी, सबने थपकियाँ दीं। वाह ! वाह ! बई तेरे कार्य पूर्ण हों, ऐसा। धीरमल ने पास जाकर इतिहास कहता बई उसने पाँच मोहरें रख दीं। तीन गुरु ग्रन्थ साहिब के लिए और दो उसके लिये। उसने भी आशीष दे दी, भई मैं गुरु हूँ, गुरु ग्रन्थ साहिब मुझे मिला है। लेकिन वह जब वापिस चला तो हृदय में एक शंका आ गई कि यदि वह गुरु होता तो जान लेता। गुरु सर्वज्ञ होता है, गुरु तो ज्ञाता होता है, यह जाता हुआ पूछता है लोगों को, एक स्त्री का भी पूछा, बई यहाँ और भी सीढी है ? कहती एक ओर है। उसको तेगा कमला कहते हैं। इस ओर रहता है। वह कहता चलो ठीक है। चले गये। माता जी को जाकर पूछा। उसने कहा, नहीं मेरा जो पुत्र है वह हर समय समाधि में रहता है और तुम न जाओ, पता नहीं क्या मुख से निकल जाये। उसने कहा ना माता कोई चिंता न करो। उनहोंने जाकर नमस्कार की और दो मोहरें रख दी। उसके हृदय में तो शंका थी कि संसार में गुरु तो नहीं है, यदि गुरु होता, जान न लेता ! गुरु तो सर्वज्ञ होता है, जो धुर से बख्शा होता है, वही गुरु होता है, वह तो सर्वज्ञ होता है। गुरु साहिब ने उस चादर को उठा कर दिखाया। वह कंधा जिस कंधे को लगा कर उसका जहाज किनारे लगाया था, कहते तुम ने तो पाँच सौ मोहरें मनौत मानी थीं, अब दो रख रहे हो। उसको प्रकाश (ज्ञान) हो गया। उसने कहा अहो ! गुरु तो ऐसा होता है, इसको गुरु कहते हें, असली गुरु तो बख्शा होता है, यह है गुरु। वह ज्यों उठा और छत पर चढ़ गया। उन्होंने कहा मैं दरबार में मुँह काला करुँगा यदि तुमने मुझे प्रकट किया। मैं अपनी समाधि में स्थित बैठा शान्ति में फिर समस्त कार्य करना पड़ेगा। वह ऊपर गया उसने जाकर इस ओर झंडा झुला दिया, गुरु लाधो रे ! गुरु लाधो रे ! गुरु लाधो रे ! आया, आकर माता को कहता, आप जहां रोटी पकाते हो, तवा कहाँ है ? उसने कहा यह पड़ा है। उसने सारे मुख में कालिख लगा कर फिर जाकर प्रणाम किया। गुरु साहिब हँस पड़े, कहते यह क्या किया ? कहता जी दरगाह में भी तो आपने काला करना ही था, मैं स्वयं ही कर आया। कहा जा, अब नहीं होगा। और उस गुरु साहिब का यह शब्द है और जैसे परमेश्वर बुद्धि देगा, उसके अनुसार जैसी मेरे सेव्याख्या होगी,

करुँगा। चलिये –

**रामकली महला।।**

रामकली राम में नौवें पातशाह, धर्म के रक्षक, पूर्ण परमेश्वर धर्म की चादर। उन द्वारा यह शब्द अकाल पुरख की ओर से आया है।

**साधो कउन जुगति अब कीजै।।**

अब बताओ संतो ! कौन सी युत्ति की जाये ? प्रमाभक्ति प्राप्त करना कोई आसान बात नहीं है। समस्त विकारों को मन त्याग दे, अन्तःकरण के धर्मों को छोड़ दें, सोऽहम् प्रकाश साक्षी में स्थित हो जाये, पूर्ण एकाग्रता हो जाये अैर संसार का मिथ्यात्व साक्षात् हो जाये –

**द्रिसटिमान है सगल मिथेना।।**

यह सब मिथ्या है, तब जाकर वहाँ मनजुड़ेगा, उस क्षण में इसको वह वस्तु प्राप्त होगी। मैं थोड़ी सी एक बात बताना चाहता हूँ। संत मेहर सिंह के पास भगत ने आकर शंका की, जी वह क्षण कौन सा है ?

***एक चिति जिह इक छिन धिआइओ।।***

***काल फास के बीच न आइओ।।*** (अकाल उसतति)

वह मैं आप से क्षण पूछना चाहता हूँ। वे कहते ना भाइ ! जिसको क्षण मिला है उसको पूछ। उसने बड़ा स्पष्ट, बड़ा सुदर उत्तर दिया। चाहे विनम्रता दिखाई, वह संत तो बहुत योग्य थां उसने कहा ओये ! क्षण जिनको मिला है उनको जाकर पूछ। कबीर को पूछ, धन्ना को पूछ, नामदेव को पूछ। जिसको यह क्षण मिल जायेगा, उसका तो सारा शरीर अन्तःकरण सहित बदल जायेगा। चल भाई –

**जा ते दुरमति सगल बिनासै**

या तो खोटी बुद्धि मन की सारी नाश हो जाये। वह बात कोई कहने वाली नहीं है। यह बात आप सब जानते हो। मेरे से तुम कम बुद्धिमान नहीं, अधिक ही होंगे। तुम अपने मन को देखते नहीं हो ? वह मन में तुम्हारे, जो कुछ भरा हुआ है, वह देखते नहीं हो ? जो बल-छल तुम लोगों के साथ करते हो, वह जानते नहीं हो ?

**जानि बूझ कै बावरे तै काजु बिगारिओ।।**

**पाप करते सुकचिओ नही नहः गरबु निवारिओ।।**

सारे काम तुम जानबूझ कर करते हो। जो भी गलती व्यक्ति करता है, जानबूझ कर करता है।

***कबीर मनु जानै सभ बात जानत ही अउगुनु करै।***
***काहे की कुसलात हाथ दीपु कूए परै।।*** (पृ० १३७६)

इसमें क्या कुशलता ? 'हाथ दीपु' आपकी बुद्धि में आरुढ़ चेतन बैठा है। सब देखता है और जानता भी है। फिर तुम कुएँ में गिरते हो, गलती करते हो, जानबूझ कर।

***सभ महि जोति जोति है सोइ।।***
***तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ।।***
***गुर साखी जोति परगटु होइ।।*** (पृ० १३)

यह बात तुम अपने आप देखो। तुम्हारे मन का उसके साथ सम्बन्ध हो गया। तुम्हारा मन नाम में बिंध गया। एक भाई वीर सिंह जी ने तो बहत टीका गुरुवाणी की। उसमें आया है कि पहले इसने, अपने मन को नाम के साथ जोड़ा, फिर नाम में निमग्न होना, फिर रज़ा (ईश्वर-इच्छा) में खड़ा होना, फिर इसने वह सिमरन कभी बंद नहीं करना, वह वास्तविक सत्य है, इसको परमेश्वर प्राप्त होगा।

***सिमरि सिमरि नामु बारंबार।।***
***नानक जीअ का इहै अधार।।*** (पृ० २९५)

यह परमेश्वर की कृपा के बिना खोटी बुद्धि दूर नहीं होगी। संतों ! सोच तो, सब तुम जानते हो, वह वस्तु बताओ संतो ! जिसके कारण खोटी बुद्धि नाश हो जाये और आत्माकार वृत्ति एकाग्र होकर परमेश्वर की प्राप्ति हो जाये। मैं पूछना चाहता हूँ संतो, यह काम करने वाला है।

**राम भगति मनु भीजै।। रहाउ।।**

राम जी की भक्ति के साथ मन भीग जाये। प्रेमा भक्ति के साथ मन भीगा-भीलिनी का। भीगा कि नहीं ? उसके चरण धोने से सारा पंपासर बिलकुल ठीक शुद्ध हो गया। उन ऋषियों को जिनके भीतर अहंकार था, जल पीना पड़ा, उसमें स्नान करना पड़ा। लेकिन प्रेमाभक्ति में यह मन भीग जाये। सब से बड़ी प्रेमाभक्ति है। जितने ये सारे हैं, प्रेमाभक्ति लेकर आये हैं, यदि न लेकर आये होते तो अपने आप को दास न कहते - नानकदास,

कबीरदास, दादू दास। दास का अभिप्राय यह होता है जो प्रमाभक्ति बिलकुल परमेश्वर की पूर्ण लेकर आता है।

*प्रेम भगति उधर हिसे नानक करि किरपा संतु आप करिओ है।।*

(पृ० १३८८)

यह तीसरे पातशाह ने लिखा है। प्रेमाभक्ति के साथ हमारा उद्धार हुआ है। प्रेमाभक्ति के द्वारा, कृपा के द्वारे, हमें गुरु ने आप संत बनाया। हम आप नहीं संत बने। गुरु अंगद देव जी की कृपा द्वारा, हम संत बन गये।

*मनु माइआ महि उरझि रहिओ है*
*यह तो सीधी बात है सब जानते हो।*
*मनु माइआ महि उरझि रहिओ है* (पृ० ८०२)

मन माया की गिट्टियां गिनता रहता है। प्रातः तड़के उठकर करीब सवा पहर के तड़के स्नान कर के बैठ जाओ, आप निर्णायक बनना। अपने मन को देखना, क्या कहता है और क्या यह बातें करता है ? वह विशेष शक्ति का भरी पड़ है। माया की दो ही शक्तियां हैं एक आवरण शक्ति और एक विक्षेष शक्ति और बातें बनाने को चाहे हम कितनी बनाई जायें। यह तो इश्वरीय वाणी है। इसने तो किसी की संकोच नहीं करनी। यहां तो सत्य सत् निणार्य होगा।

**बूझै नह कछु गिआना।।**

मेरा मन कुछ ज्ञान नहीं समझता, नौवें पातशाह कहते। वह उत्तम पुरुष द्वारा उपदेश है। मेरा मन ज्ञान नहीं समझता। मेरा मन ज्ञ्ज्ञन पर नहीं जाता। यह मन माया के मोह में, ममता में इतना उलझ चुका है, यह कुछ ज्ञान को नहीं जानता। यह म को समझ तब होगी, जबनाम के साथ –

*नावै अंदरि हउ वसां नाउ वसै मनि आइ।।* (पृ० ५५)

जब मन में शब्द बस जायेगा। शब्द में परमेश्वर निवास करता है। तो वह परमेश्वर प्राप्त होगा। लेकिन क्या किया जाये ? परमेश्वर का हुक्म है। हम भी कई बार फँस जाते हैं वहां ऐसे चलो जी, वहां ऐसे करों जी, लेकिन परमेश्वर के नाम के बिना तो और कोई उद्धार का तरीका नहीं।

**सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरु न जाई।।** (पृ० २)

सब जावों का एक दाता है। उसको कभी भूलना नहीं है। वह नामदेव

ने साफ लिखा है -

*हाथ पाउकरि कामु सभ चीतु निरंजन नालि।।* (पृ० १३७६)

पंचम पातशाह को उस फकीर ने पूछा, जी आप तो यह कहते हो, वाह बई वाह ! शाबास ! बड़ा टोकरी उठाई। वह फकीर वापिस चल पड़ा। बाबे बुड्ढे को कहा, उसे वापिस ले आये। इलायची बेरी के नीचे थे और वह आया कहते क्यों फकीर ? कहता जी मैं आया था चनकर दर्शन करने के लिये, बई - एक महापुरुष कृपालु है, जिस पर धुर से कृपा हुई। मैं भी कृपा पात्र हो जाऊँगा। आप व्यवहार में मग्न, उन्होंने कहा - बैठ जा। इस शब्द का उपदेश दिया -

*साच नामि मेरा मनु लागा।।*
*लोगन सिउ मेरा ठाठा बागा।।* (पृ० ३८४)

लेकिन इस का मन कभी नाम से अलग न हो लेकिन यदि नाम प्राप्त हो तो भी अलग न हो। यदि नाम के साथ जुड़ा हुआ ही न हो फिर कैसे बई ? यह तुम आप देखो, यह किसी को पूछने वाली बात नहीं है। यह सब आप अपने मन के साक्षी हो, द्रष्टा तुम्हारी निज रुप है, वृत्ति आरुढ़ चेतन तुम हो, वह ज्योति, चार प्रकार के प्राणियों में व्यापक एक ही है, दो तो है नहीं, उसके बिना सब मिथ्या है। इसको दृढ़ निश्चय नहीं हुआ। कृपा नहीं हुई, बख्शिश नहीं हुई। पूर्ण्ज्ञ संत, पूर्ण परमेश्वर की कृपा के बिना यह काम चलने वाला नहीं है। चाहे आप इसे सोच लो। चल -

**कउनु नामु जगु जा कै सिमरै**

वह कौन सा नाम है जगत में जिस के सिमरन में -

**पावै पदु निरबाना।।**

हमारे को निर्वाण 'पद' की प्राप्ति हो जाये, जो महात्मा बुद्ध को प्राप्त हुई थी। जहाँ दुःख सुख का रंच मात्र भी नहीं है। वह निर्वाण पद की प्राप्ति मुझे हो जाये, नौवें पातशाह कहते। है परमेश्वर। वह कौन नाम है जिसके सिमरन से निवार्ण पद की प्राप्ति हो ?

**भए दइआल क्रिपाल संत जन**

मेरे ऊपर बड़े कृपालु हुये मेरे गुरु, बड़े संत। मेरे पर दया की, उन्होंने बड़ी मेहर की। क्या कहा फिर -

**तब इह बात बताई**

फिर यह गुरु की बात मुझे उन्होंने बताई जो असली बात थीं

**सरब धरम मानो तिह कीए।।**

समस्त धर्म समझ लो उस पुरुष ने कर लिये। उस जीव ने समस्त धर्म कर लिये।

**जिह प्रभ कीरति गाई।।**

जिसने परमेश्वर का कीति गान किया है। नाम अनेक हैं और नामी एक है। यदि वे यहाँ एक नाम बता देते तो पक्षपात हो जाता। परमेश्वर की कीति जिन्होंने ने भी गाई उनके सब धर्म पूर्ण हो गये।

**राम नामु नरु निसि बासुर महि**

कहते राम है नाम जिसका, जो सब में रमा हुआ है।

**रमत राम जनमु मरनु निवारै।।**

राम है जिसका नाम तथा जो सब में रमा हुआ है।

***घट घट मैं हरि जू बसै संतन कहिउ पुकारि।।***

***कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि।।***

(पृ० १४२७)

जो सब की बुद्धि रुपी गुफा में ज्योति स्वरुप बैठा है। अब फिर पढ़ -

**राम नामु नरु निसि बासुर महि**

**निमख एक उरि धारै।।**

यह उस राम के नाम की एकाग्र वृत्ति के साथ एक क्षण मात्र भी धारण कर ले।

***एक चिति जिह इक छिन धिआइओ।।***

***काल फास के बीच न आइओ।।*** (अकाल उसतति)

यदि इसका मन क्षण मात्रा भी उस परमेश्वर की ओर गुरु की कृपा के साथ जुड़ जाये।

**जम को त्रासु मिटै नानक तहि**

गुरु साहिब कहते फिर आने जाने का इसका यमों का त्रास मिट जाये, जन्म-मरण काटा जाये, जन्म-मरण टूट जाये, यह है भाई यथार्थ बात। यह इतना परमेश्वर का ध्यान और कीर्तन करे, नाम का अभ्यास -

*सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ।।*

*अंतरगति तीरथि मलि नाउ।।* (पृ० ४)

यदि श्रवण, मनन, निदिध्यासन द्वारा नाम का, और परमेश्वर में लीन हो जाये इसका वृत्ति, सुरत, फिर यह उसका रुप हो जायेगा।

*तिथै कालु न संचरै जोती जोति समाइ।।* (पृ० ५५)

जहाँ ज्योति में ज्योति मिल जानी है, वहाँ काल की गभ्यता नहीं। वह काल पहुँचता ही नहीं है उस सथान पर।

*तिथे कालु न अपड़ै जिथे गुर का सबदु अपारु।।* (पृ० ५५)

यह भी गुरु साहिब ने लिखा है, जहाँ गुरु का शब्द इसके मन को ले जायेगा नाम के द्वारा।

**तिथे कालु न अपड़ै**

वहाँ काल नहीं जायेगा, वह देश काल से आगे लाँघकर परमेश्वर में लीन हो जायेगा। वे गुरु तेग बहादुर लीन हो गये थे, वे परमेश्वर के साथ एक हो गये थे, उनको यह वाणी आई, उन्होंने वाणी का यह शब्द उच्चारण किया। पढ़ भाई -

**अपुनो जनमु सवारै।।**

उसका जन्म सँवर जायेगा। उसका जन्म-मरण मिट जायेगा, उसका जन्म सफल हो जायेगा।

पढ़ दो पिछली पंक्ति -

**राम नामु नरु निसि बासुर महि निमख एक उरि धारै।।**

**जम को त्रासु मिटै नानक तिह अपुनो जनमु सवारै।।**

**बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरू ।**

❑

**१ ओंकार सतिगुरु प्रसादि।।**

# 17

**धनासरी महला ५**

**जतन करै मानुख डहकावै ओहु अंतरजामी जानै।।**
**पाप करे करि मूकरि पावै भेख करै निरबानै।।**
**जानत दूरि तुमहि प्रभ नेरि।।**
**उत ताकै उत तक उत देखै आवै लोभी मुकतु न कोई।।**
**कहु नानक दइआल सुआमी संतु भगतु जनु सोई।।**

(पृ० ६८०)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु, सतिनाम श्री वाहिगुरु।

**धनासरी महला ५**

पंचम पातशाह श्री गुरु अर्जुन दंव जी महाराज धनासरी राग में कथन करते हैं -

**जतन करै मानुख डहकावै**

वैसे ही यह लोगों को खराब करता है, यत्न करके मनुष्यों को खराब करता है। ये लुच्चे आदमी लोगों को खराब करते हैं। यहाँ कुछ कह दिश, वहाँ कुछ कह दिश। ऐसे व्यक्ति लोगों को बड़ा खराब करते हैं। सच्च को तो रखते नहीं, ये डरते ही नहीं कि झूठ बोलना पाप है। यह लिखा हुआ है ग्रन्थकारों ने।

***नहि असत्य सम पातक पुँजा।।*** (रामचरित मानस)

तुलसी दास कहते - देखना झूठ न कभी बोलना। झूठ जैसा बड़ा पाप संसा में कोई नहीं है, ये लोगों को समझते हैं ऐसे ही। पढ़ दो -

**जतन करै मानूख डहकावै ओहु अंतरजाती जानै।।**

वह तुम्हारे हृदय में, चित्त वृत्ति में बैठा तेरी वृत्ति को तुम्हारे स्फुरण को

देखता जानता नही है ?

*राखा एकु हमारा सुआमी।।*

*सगलघटा का अंतरजामी।।* (पृ० ११३६)

एक बात और भी है जब व्यक्ति किसी को परेशान करता है, पता तो उसको भी लग जाता है। बई, जो यह बातें करता हूँ, ये हैं फालतू सी, समझ गयं पता होता है लेकिन झिझकता रहता है। लेकिन जो ये राजनैतिक लोग हैं इन्होंने बहुत खराबी की है। इन्होंने राजनीति नाम रख लिया है झूठ का। संसार का नाश करके रख दिया है। यदि वे भले कार्य करें तो सब लोग शुभ मार्ग पर आ जायें। इसलिए संसार को दुखाया न करो, वह अन्तर्यामी का जो हुक्म है, वह तुम्हें भी बता देता है, बई इतना तुमने झूठ बोला और इतना सच बोला और तुम्हें कोई नहीं बताता। तुम्हें पता है, जब तुम झूठ बोलते हो, सच्च बोलते हो, तुम्हें नहीं पता होता ? तुम रोज जानते हो सब कुछ, जो धोखे में आ गया अथवा ना आया, वस में नहीं कुछ। चलिये -

**पाप करे करि मूकरि पावै**

कितनी बुरी बात है, पाप करता है फिर नट जाता है और जिसने भीतर बैठकर टाइप करना है, वह तो अन्तर्यामी चेतन है। उसके सम्मुख तुम क्या करोगे ? कर्म तो वहाँ बनने हैं आपके कर्म तो ईश्वर ने बनाने हैं, भुगतवाने भी ईश्वर ने ही हैं।

**भेख करै निरबानै।।**

विरक्तों वाले कृत्रिम वेश बनाता है, जटायें बनाकर ऐसा बनाता है कि संसार को भुलावे में डाल देता है। यह बड़ा महात्मा है। लेकिन भीतर लगी है आग, माया की।

**जानत दूरि तुमहि प्रभ नेरि।।**

प्रभु समीप  से समीप है, लेकिन यह-जानता दूर है। इसकी गलती यही है। समीप आया है। तुमपहले बताओ जब तुम अपने विचारों को देखते हो, विचार करने वाले तो तुम हो, विचार तो नाना हैं, विचार करने वाले तो तुम हो, तुम्हारे पास से होकर विचार निकलने हैं सारे। सब तुमने देखने हैं, और इसलिये वह देखने वाला परमेश्वर तो तुम्हारा आपा है। अत्यंत समीप है लेकिन तुम उसको दूर जानते हो कहीं। हाँ -

**उत ताकै उत ते उत पेखै**

साथ तो इधर-उधर देखना है। बई बात तो है यह, और मेरा पोल भी न खुल जाये और साथ में उसी समय ही करता है। लेकिन वह अत्यंत समीप है, यह दूर दूखता है इसको, बई सम्भवतः परमेश्वर कहीं अलग होता है।

फिर यह लोभ में चक्कर मारताहै। लोभ में यह सब बाते करता है।

**जब लगु तुटै नाही मन भरमा**

जब तक तुम्हारे मन का भ्रम नहीं टूटता, मन तो कोई वस्तु नहीं। संकल्प विकल्प ही मन है। संकल्प विकल्प का नाम ही मन है। तुम तो मन को देखने वाले हो, तुम तो आत्मा, चेतन हो। इसलिये तुम भ्रम में फँस गये, मन बन गये। तुम अपने आप को मन मानने लग गये, तुम मन नहीं, मन तो एक वृत्ति है जड़, और तुम हो चेतन, तुम तो ज्ञान हो। तुम जड़ थोड़े ही हो, तुम तो व्यापक हो, परिपूर्ण हो। आत्मा परमात्मा और 'दाना बीना साईं मैंडा' हाँ जी -

**तब लगु मुकतु न कोई।।**

कोई मुक्त नहीं होगा जब तक स्वरुप की प्राप्ति नहीं होगी। जब तक तुम्हें स्वरुप की प्राप्ति नहीं होगी, तब तक किसी को भी मोक्ष नहीं होगी, अपने स्वरुप की प्राप्ति कीरो। अपना स्वरुप आपका आपा है। यह -

***तदा द्रष्टु स्वरुपे अवस्थानाम्।।*** समाधिपाद १/३

(पंतजलि कृत योग-सूत्र)

वह कहता ओये स्वरुप में स्थित हो जा। द्रष्टा में स्थित हो जा, यह तेरा स्वरुप है। वह जो भीतर द्रष्टा चेतन है ज्ञाता 'आत्मा' उसमें स्थित हो जा। वह तेरा आपा है और तेरा जन्म-मरण काटा जायेगा।

***कहु नानक दइआल सुआमी***
***वह स्वामी बड़ा दयालु है।***
***राखा एकु हमारा सुआमी।।***
***सगल घटा का अंतरजामी।।*** (पृ० ११३६)

वह बड़ दयालु है, वह परमेश्वर बड़ा दयालु है। उसका दास बन जा सच्चे दिल से।

**संतु भगतु जनु सोई।।**

एक बार उस दयालु की कृपा हो गई, जिसको आत्मा परमात्मा की प्राप्ति हो गई, उसे चाहे संत कह दो, चाहे भगत कह दो, उस पर परमेश्वर की कृपा हो गई औश्र कृपा के साथ उसका समस्त कार्य शुद्ध हो गया।

**बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरू ।**

❑

१ ओंकार सतिगुरु प्रसादि।।

## 18

**सोरठि मला ५।।**

**दूरतु गवाइआ हरि प्रभि आपे सभु संसारु उबारिआ।।**
**पारब्रहमि प्रभि किरपा धारी अपणा बिरदु समारिआ।।**
**होई राजे राम की रखवाली।।**
**सूख सहज आनद गुण गावहु मनु तनु देह सुखाली।। रहाउ।।**
**पतित उधारणु सतिगुरु मेरा मोहि तिस का भरवासा।।**
**बखसि लए सभि सचै साहिबि सुणि नानक की अरदासा।।**

(पृ० ६२०)

सारी संगत कृपा, दया, मेहर करके बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरु, सतिनाम श्री वाहिगुरु।

यह ईश्वरीय वाणी का वाक् पंचम पातशाह श्री गुरु अर्जुन देव जी महाराज द्वारा आया है, यह धुर से आई हुई वाणी है, इलहाम है। पूर्ण पुरषों का इलहाम होता है। उस इलहाम के पीछे संसार के जितने मोक्ष के हितैषी हैं, वे बख्शे जाते है। इसलिये पंचम पातशाह द्वारा जो हुक्मनामा है, उस पंचम पातशाह के सम्बन्ध में लिखा है -

***धरनि गगन नव खंड महि जोति स्वरुपी रहिओ भरि।।***
***भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरु अरजुनु परतख हरि।।***

(पृ० १४०९)

यह हरि प्रत्यक्ष है 'गुरु अर्जुन देव'। यह मथुरा का कथन है, वह जो परिपूर्ण था पृथ्वी, आकाश सब में व्यापक, वह अब व्यापक, सगुण रुपधार कर बैठा है। जिन्होंने भट्टों का जितनाशाप था, वह भी निवृत्त कर दिया और उसको ज्ञान भी बख्श दिया और वे परमेश्वर दरगाह के अधिकारी हो गये। इसलिये वह मथुरा भट कहता ये गुरु अर्जुन देव प्रत्यक्ष हरि है। इनको जो वाक् होता है, वह हरि का वाक् होता है। चलो -

**सोरठि महला ५।।**

पंचम पातशाह श्री गुरु अर्जुन देव जी महाराज, सोरठ राग में कथन करते हैं -

**दुरतु गवाइआ हरि प्रभि आपे**

जब परमेश्वर के हृदय में दया आती है, वह संसार का जितना दुःख होता है, वह सारा नाश कर देता है। जब परमेश्वर के दिल में मेहर आती है, तुम देखते हो किसी किसी वर्ष आपके सामने, एक ऐसे आदमी ने जिन के पास घास नहीं रही चराने के लिये, फसल नहीं रही। एक ऐसे व्यक्ति ने उसकी ऐसी फसल लगी हुई है, कभी आज तक हुइ नहीं है। वह परमेश्वर के वश है, किसी जीव के कुछ वश नहीं, जीव ने तो प्रार्थना करनी है, निवेदन करना है, भला काम करना है, सेवा करनी है, ाम जपना है, जीव के तो कर्त्तव्य हैं, और वह परमेश्वर है करने वाला। गीता में भी लिखा है -

***कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।।***
***मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगो अस्त्वकर्मणि।।*** (गीता २/४७)

वह जब अर्जुन युद्ध रत था, ऐसे नहीं, ऐसे हो जाता। वह कृष्ण कहता तेरा कर्मों का अधिकार है, तेरा अधिकार नहीं इस बात का-

**मा कर्मफलहेतुः हेतुर्भूर्मा संगोअस्त्व कर्मणि।।**

फल तो ईयवर के पास से आना है। कर्म जीव ने करना है ओर फल ईश्वर के हाथ है। यदि जीव ने करना है और फल ईश्वर के हाथ है, यदि जीव के हाथ में कम्र और फल भी हो तो फिर तो यह किसी को पूछे ही नहीं। यह तो अभी नहीं पूछता है, साथ में इसको पता है बई मेरे हाथ में फल नहीं। इसलिये फल होता है ईश्वर के हाथ। कर्म तो कितनों ने किया। यहाँ लुधियाना में बड़ी भारी बाढ आई ओर उन्होंने कर्म में कोई प्रयत्न नहीं छोड़ा। लेकिन अब उनके पास खाने को अनाज भी पास नहीं रहा और घास डालने के लिए पशुओं के लिये नहीं रहा। यदि फल इन के हाथ होता तो कुछ न होता। इसने अपनी जो इनकी इच्छा थी वैसा ही फल करना था। न, न जीव के हाथ में कर्म होता है, फ ईश्वर के हाथ में होता है। इसलिये जब यह कर्म करे तो बिल्कुल ऐसे कर्म करे ईश्वर को सम्मुख रखकर। मैंने एक वुद्ध देखा वहाँ अपने, जब वे बोने लगे, पोर के साथ बोते थे तबं वह जब

बोने लगता था तो वह सब कोख निरंकार को, 'अकाल पुरखु' को, बाबे नानक को, गुरु अंगद देव को, ज्यों लगता था, वह सब को जपता था। बाद में वह कहता होता, ओये ! चिड़ियों का, पशुओं का जो भाग है, उसके लिये ही ईश्वर हमें बख्श देना। वह बहुत सिद्धान्त अच्छा ािा। इसके लिये और सब का फल इसके हाथ में नहीं होता, कर्म इसके हाथ में होता है। इस को कर्म शुभ करना चाहिये है।

*सरब धरम महि स्रेसट धरमु।।*

*हरि को नामु जपि निरमल करमु।।* (पृ० २६६)

कर्म सारे शुभ करो और नाम जपो। नाम भी जपा। एक आदमी आषाढ़ी करता हुआ मैंने देखा, वह उसी गाँव का वृद्ध। वह उधर से गुज़रता था जहाँ दूसरे का साथ खेत होता था। तब मुरब्बावंदी नहीं थी हुई। उसको दूसरे पूछते थे कि तुम इधर से छोड़कर उधर क्यों जाता है। वह कहता मैंने तो गुज़र जाना है इधर, कोई सिट्टा उसका गिरा होगा तो मैं उसकी ओर फैंक दूँगा। इन्होंने तो बीच में ही काट लेना है। वृद्ध कहता - वह सिट्टा हमारे में आ जायेगा और है वह बेगाना - कितना उसका ऊँचा दिमाग था और कितनी पवित्रता थी, इसका नाम संतोष है। इसलिये इस जीव को कर्म करना चाहिये और जब वह परमेश्वर प्रसन्न हो गया, वह तुम्हारे समस्त पाप, सारे कष्ट आप ही साफ कर देगा।

**दुरतु गवाइआ हरि प्रभि आपे**

हरि प्रभु ने आप ही सारा पूर्व कृत पाप समाप्त किया है। वह सज्जन के इतने पूर्व कृत पाप कहाँ चले गये थे, इतने पाप वह गुरु नानक ने एक मिनट में सब समाप्त कर दिये। वह कौडे राक्षस पर गुरु नानक ने जब उस और दृष्टि की, वे समस्त नष्ट हो गये। वह परमेश्वर आप ही रुप धारण कर आया। साथ में गुरु नानक के सम्बन्ध में लिखा है -

*जोति रुपि हरि आपि गुरु नानक कहायउ।।*

*ता ते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ।।* (पृ० १४०८)

वह तो ज्योति स्वरुप आप संसार में आया है। उसने संसार में आकर सीधा मार्ग बताया। लेकिन अब हम यदि न चलें यह तो हमारी गलती है। इस में गुरु नानक देव की तो कोई कमी नहीं है। उन्होंने तो सीधा मार्ग तुम्हें

१ ओंकार बताकर चले गये। पहले उन्होंने एक लिखा। तुम जो पढ़े लिखे हो, जब गुरु ग्रन्थ साहिब पढ़ेंगे, पहले उसमें एक आयेगा। एक का अर्थ क्या है ? वे आप ही अर्थ करके गये है - पहली पातशाही -

*एकम एकंकारु निराला।। अमरु अजोनी जाति न जाला।।*
*अगम अगोचर रुपु न रेखिआ।। खोजत खोजत घटि घटि देखिआ।।*

(पृ० ८३८)

वे कहते एका (१) चार प्रकार के प्राणियों के हृदय में है, देखना किसी का हृदय न दुःखी कर देना। वह बुल्ले शाह ने कहा, देखना ओये ! किसी का दिल न दुखाना, कहता क्या हो जायेगा ? कहता तेरा दरगाह का द्वार बंद हो जायेगा, यदि तुमने किसी का दिल तोड़ दिया। दिल तो प्रभु का द्वार है, दिल में तो परमेश्वर बैठा है साक्षात्। वह लिखा है न -

**दिल दरवाजा रब्ब दा देखी किते ढाह दिंदा।**

इसलिये वह सीधे रास्ते सब में परमेश्वर देख। यदि तेरे से सहायता होती है तो कर, नहीं होती तो बुरा न कर एक मुसलमान फकीर हुआ है, उसने लिखा है। गोरे शाह उसका नाम था उसने लिखा है -

**जिऊंदियां नू क्यों मारदा हैं,**
**जो मोयआं नूं नहीं जीऊण जोगा।**
**घर आए फकीरां नूं झिड़कदा क्यों,**
**जे पलिओं खैर नहीं पौण जोगा।**
**मिले दिलां ते भाजीआं मारदा किउ,**
**जे बिछड़े नहीं मिलौण जोगा।**
**गौरे शाह बदीआं रख बंदीखाने,**
**जेकर नेकीआं नहीं कमौण जोगा।**

यह बड़ी एक सुंदर बात थोड़े में कह दी। यदि तू नेकी नहीं कर सकता तो अपनी बदी को तो संभाल कर रख, अपने बंदीखाने में, इसलिये तू यदि मरे हुए को जीवित नहीं कर सकता तो जीवित को मारता क्यों हैं? अधिकार तो तेरे पास है नहीं। कइ कहते हैं जी दशम् पातशाह मारते थे जीव ! मैंने कहा भई दशम् पातशाह तो जीवित भी करते थे, कल्याण करते थे।

एक बनिया उज्जैन का, नौंवे पातशाह का सिख अन्य बनियों को कहता

– मैं अपने गुरु के दर्शनों को जाना है, अब मेरा दूसरा गुरु गद्दी पर आया है, पहले गुरु मेरे बैकुण्ड को चले गये। वह कहता भई चल हमें भी ले चल। वह बनिया कहता, चलो। वे जब आये कुदरत प्रभु की, गुरु साहिब जीव जानवर मार के कंधे पर रख कर चले आ रहे थे। उन्होंने कहा तेरा गुरु यही तो नहीं है ? कहता है तो यही। कहते हमें क्यों यात्रा का कष्ट दिया ? हमें क्यों इतनी दूर ले आया ? क्यों किराया खराब किया ? यदि तुम्हारा गुरु ऐसा था। वह बनिया बड़ा उदास हुआ। गुरु साहिब अन्तर्यामी तो थं, वे कहते भाई ! तुम इतने उदास क्यों हो ? तेरे साथ ये हैं, बात क्या है ? सच्च बेल। जब दो तीन बार कहा, फिर वह बोला जी, यह बात है। कहता फिर इनको पूछ, छोड़ दो महाराज। उन्होंने कहा – जाओ उडत्र जाओ। वे नीचे आये अझैर उन बानियों के पीछे पड़ गये। वे कहते हमारे तसे ससुरो जन्म काटे गये थे, तुमने फिर दोबारा जन्म में डाल दिया। फिर दन को पता लगा, यह तो गुरु दूर से आया हुआ है। यह तो संसार को मुक्ति करने आया है किसी ढंग से। और इसलिये तुम्हें पता नहीं, दसवें पातशाह लिखते हैं – ख्वाजा मंजूर को हमने एक तीर बख्श देना था। वह ससुरा दिल्ली से कहकर आया था, मै पकड़ कर लाऊँ लेकिन दीवार की ओट में हो गया। नाहर का बख्श दिया था तीर मलेर कोटले वाले को। यह बात उनकी है, वे जो तीर उन्होंने बख्शने थे, जहाँ उनका तीर लगता था वह भी तो बख्शा जाता था जन्म-मरण से। इसलिये लोक पैसे ही उनकी नकल करते हैं, इसलिये गौरे शाह स्पष्ट लिखता है –

**जिउंदियां नू क्यों मारदा हैं, जो मोयआं नूं नहीं जीऊण जोगा।**

यदि तुम मृतक को जीवित नही कर सकते तो फिर जीवित को क्यों मारता है ?

**घर आए फकीरां नूं झिड़कदा क्यों, जे पलियों खैर नहीं पौण जोगा।**

यदि तुम्हारे पास भिक्षा देने कि लिए नही तो झिड़का क्यों हैं ?

**मिले दिलां ते भांजीआं मारदा किउं, जे बिछड़े नहीं मिलौण जोगा।**

यदि तुम बिछड़े दिलों को मिला नहीं सकते तो अड़चने डालकर अलग-अलग क्यों करता है ?

**गौरे शाह बदीआं रख बंदीखाने, जेकर नेकीआं नहीं कमौण जोगा।**

तुम अपनी बंदी को बंदीखाने में रख मन ! यदि नेकी नहीं कमा सकता। नेकी तो तुम कर नहीं सकते, बंदी को तू संभाल कर रख।

इसलिये वह आप परमेश्वर कृपालु है, कृपा कर देता है, लेकिन तुम उसके सन्मुख हो जाओ। वह समस्त पापों का नाश कर देता है। अब बताओ कहाँ गये कौडे के पाप ? वह कसार्ठ के पाप किधर गये ? अजामिल के किधर गये ?

***अजामनु पापी जगु जाने निमख माहि निसतारा।।*** (पृ० ६३२)

इतना पापी था। एक क्षण में उसकी मुक्ति हो गई। भगवान् ने कर दिया जब उसने याद किया। इसलिये वह दयालु है, कृपालु है। वह हरि आप ही बख्श देता है।

**सभु संसारु उबारिआ।।**

वह सारा संसार नहीं बचा लिया ? अब आपके सामने तुम देखते नहीं ? वहीं सेलोग गये हैं, तुम्हें पता है और वे मिले नहीं, उनके पशु नहीं मिले। वहाँ बैठे वैसे के वैसे रह गये। जिसकी उसने रक्षा करनी है उसको बचा लिया।

***राखा एकु हमारा सुआमी।।***
***सगल घटा का अंतरजामी।।*** (पृ० ११३६)

रक्षक हमारा एक परमेश्वर है, वह सब हृदयों का अन्तर्यामी है।

***घटि घटि मैं हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।।***
***कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि।।*** (पृ० १४२७)

जो सब के हृदयों में प्रभु बैठा है, तेरे में भी बैठा है, यदि तू उन सब पर दया करे। तेरे पर भी प्रभु दया कर देगस। एक साधु एक संत को कहता – अरे! भगवान् दया कब करेगा ? कहता जब तुम करोगे तब करेगा। यदि तुम दया चाहते हो तो दया करने लग जा। तुम लोगों पर दया कर दे, वह दया फिर तेरे पास आ जायेगी। यदि तू कहे मैं न दया करूँ तेरे पर दया कैसे हो जायेगी। यह तो –

***जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु।।*** (पृ० १६८)

यह तो कर्मों का खेत है भाई!

**पारब्रहमि प्रभि किरपा धारी**

उस परमेश्वर ने, परमेश्वर ने बड़ी कुपा धारण की, बड़ी कृपा की।

**अपना बिरदु समारिआ।।**

उसने अपना विरद, प्रण नहीं छोड़ना। यदि तुम किसी को कहोगे कि इसको ता रोटी नहीं देनी चाहिये, लेकिन वह तीन बार देगा। वह तुम्हारे कहने से हट नहीं जायेगा। सम गये ? वह अपना विरद नहीं छोड़ेगा। परमेश्वर अपना प्रण नहीं छोड़ेगा। उसका उत्तरदायित्व है। सृष्टि की उत्पत्ति करना, पालन करना, लय करना। उसने अवश्य करना है। यदि तुम विपरीत धारा को जाओगे, तुम्हारी रक्षा फिर भी उसने करनी है। इसलिये तुम्हें उसके मार्ग में चलना चाहिये। परमेश्वर की दया की छाया छत्रछाया में रहना चाहिये, वह परमेश्वर बड़ा दयालु है।

**होई राजे राम की रखवाली।।**

वह तो राजा जो है न 'राम' व्यापक। राजा और राम दो नहीं, जो व्यापक राजा प्रकाश रुप चेतन सारे व्यापक राम, उसकी रखवाली हो गई, अब तो तुम उसकी छत्रछाया के नीचे हो गये। लेकिन तुम्हें यह नहीं पता छत्रछाया के नीचे जीव कब होता है ? यह तुम्हें पता ? बता दो यदि तुम्हें पता है ! हाँ यदि इसका नाम लेकर नहीं छोड़ोगे, कभी तो छत्रछाया में हो जाओगे। यह निशानी है, उसका नाम कभी न भूलना। उसके आगे अरदास करो, प्रार्थना करो, नाम जपो, फिर वह तुम्हारी रक्षा अवश्य करेगा। उसने सारे भक्तों की रक्षा की, कबीर की की, धन्ना की की, नामदेव की की, कितनों की की। और जब हम भी वहाँ जाकर खड़े हो जायेंगे, हमारी भी करेगा। हमारा यह कर्त्तव्य है बई, भला कार्य करना सुख देना पब्लिक को जो दे सके। तो फिर वह परमेश्वर हमारी रक्षा करेगा।

**सूख सहज आनद गुण गावहु**

'सूख' सुख ना नाम है 'सहज' नाम है ज्ञान का। ज्ञान सुख 'अनंद' नाम है जहां दुःख कोई न हो, उस परमेश्वर के गुण गाओ। वह परमेश्वर है, उसके गुण गाया करो। और ऐसे नहीं गई वह भूला हुआ है। वह तो –

**घट घट मै हरि जू बसै।।**

तुम्हारे हृदय में नही बैठा ? ऐसा तो नहीं कि वह है नहीं। ना ! उसके गुण गाओ लेकिन सचे दिल से गाओ, उसका दास होकर गाओ। यह सारे

संसार को परमेश्वर का रुप समझो और परमेश्वर रुप समझ कर सेवा करो।

**मनु तनु देह सुखाली।। रहाउ।।**

यह तेरा मन भी, तन भी देह शरीर भी सुखी हो जायेंगे, कोई दुःख नही रहेगा। लेकिन तुम उसकी रक्षा में खड़े हो जाओ। तुम नाम न छोड़ना, धर्म न छोड़ना और बिल्कुल सत्य बोलना, संतोष रखना फिर तेरा काम सहज ही ठीक हो जायेगा।

**पतित उधारणु सतिगुरु मेरा**

मेरा जो सत् गुरु है रामदास, वह तो पापियों का उद्धार कर देता है। यह तो पंचम पातशाह है गुरु अर्जुन देव। मेरा जो सत् गुरु है, वह तो पापियों का उद्धार कर देता है, उन्होंने कितने पापियों का उद्धार किया है। इसलिये उनका स्वभाव है, वे तो पतितों को पवित्र कर देते है।

**मोहि तिस का भरवासा।।**

मेरा उस पर पूर्ण विश्वास है, पूर्ण निश्चय है। गुरु अर्जुन देव जी कहते मुझे अपने गुरु पर पूर्ण निश्चय है, उसने मुझे उपदेश दिया है इसलिये तुम उनका उपदेश पढ़ोगे, तुम्हें बहुत अच्छा लगेगा।

***बिसरि गई सभ ताति पराई।।***
***जब ते साध संगत मोहि पाई।। रहाउ।।***
***ना को बैरी नहीं बिगाना***
***सगल संगि हम कउ बनिआई।।***
***जो प्रभ कीनों सो भल मानिओ***
***एह सुमति साधू ते पाई।।***
***सभ महि रवि रहिआ प्रभु एकै***
***पेखि पेखि नानक बिगसाई।।*** (पृ० १२६६)

वह जिस दिन से उसकी कृपा हुई हमारे गुरु की, हमारी ईर्ष्या, शत्रुता पुराने सब नाश हो गये। हमें सब में परमेश्वर दिखाठ देने लग पड़ा। यहाँ तक हमारे गुरु ने हमें पहुँचा दिया। हमें उस गुरु पर पूर्ण निश्चय है और तुम भी अपने गुरु पर निश्चय करो।

**बखसि लए सभि सचै साहिबि**

सारे जितने हैं वेसत्य स्वरुप प्रभु ने बख्श दिये। वह सत्य स्वरुप प्रभु सब

का गुरु है।

*जा कउ अपुनी करै बखसीस।।*

*ता का लेखा न गनै जगदीस।।* (पृ० २७७)

जिस पर वह कृपाकरे दे फिर लेखा (कर्मों का) भला रहा है किसी का ? कौडे का किसने लेखा गिना ? सज्जन ठग का लेखा गिना ? उस कसाई का, वेश्या का किस ने लेखा (कर्मों का) गिना ? बैकुण्ठ को गई सीधी नाम जपती। इसलिये वे बख्श लेते हैं भाई, वह बड़ा कृपालु है।

**सुणि नानक की अरदासा।।**

मेरी यह अरदास सुन, गुरु अर्जुन देव जी कहते - मैं अरदास हेतु आपको यह शब्द सुनाता हूँ, बई तुम ईश्वर के आगे अरदास निवेदन करो, सत्य बोलो किसी का बुरा न करो और तुम्हारे साथ भी यह व्यवहार परमेश्वर करेगा।

**बोलो सतिनाम श्री वाहिगुरू ।**

❑